सूचना और प्रसारण मंत्रालय

वार्षिक रिपोर्ट 1995-96

विषय सूची

1.	एक नजर	1
2.	आकाशवाणी	4
3.	दूरदर्शन	22
4.	फिल्म	39
5.	प्रेस प्रचार	54
6.	समाचारपत्रों का पंजीकरण	58
7.	प्रकाशन	60
8.	क्षेत्रीय प्रचार	66
9.	विज्ञापन और दृश्य प्रचार	77
10.	फोटो प्रचार	86
11.	गीत और नाटक	89
12.	गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण	93
13.	अंतर्राष्ट्रीय सहयोग	96
14.	मीडिया नीति	98
15.	योजना और गैर–योजना कार्यक्रम	104
16.	प्रशासन	106

परिशिष्ट

1.	वर्ष 1995-96 और 1996-97 के लिए योजना तथा गैर- योजना बजट का विवरण	110
2.	सूचना और प्रसारण मंत्रालय का मुख्य शीर्ष–वार बजट का संक्षिप्त विवरण	122

1

एक नजर

1.1 सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने मुक्त रूप से सूचनाएं हासिल करने में आम जनता की मदद करने के लिए अपने जनसंचार माध्यमों के जरिए–जिनमें आकाशवाणी, दूरदर्शन, सिनेमा, समाचारपत्र, पुस्तक–पुस्तिकाओं का प्रकाशन, विज्ञापन तथा गीत और नाटक जैसे परंपरागत साधन शामिल हैं– वर्ष 1995-96 के दौरान एक कारगर भूमिका निभाई है। इसने समाज के सभी वर्गों की शिक्षा और मनोरंजन संबंधी सभी महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को भी पूरा किया है और इस दिशा में अपनी सेवाएं उपलब्ध कराते समय सार्वजनिक हितों और व्यावसायिक आवश्यकताओं के बीच संतुलन को बनाए रखने में पूरी सावधानी बरती है।

1.2 मंत्रालय की विकास संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992-97) के तहत 3,634 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया था। चार वर्षों (1992-96) के दौरान जो वार्षिक योजना राशि आबंटित की गई, वह 1858.80 करोड़ रुपये थी। योजना के इन

प्रदर्शनी में आकाशवाणी और दूरदर्शन का पैवेलियन

1995-96 की विशेष उपलब्धियां

आकाशवाणी

- आकाशवाणी द्वारा मुंबई और मद्रास में स्वदेशी टैक्नोलॉजी से निर्मित मल्टी–ट्रैक रिकार्डिंग स्टूडियो की स्थापना।
- एफ. एम. रेडियो पेजिंग सेवा का प्रारंभ।
- आकाशवाणी की उपग्रह–आधारित स्काई रेडियो सेवा का प्रारंभ।
- विश्व के सबसे बड़े ट्रांसमीटर परिसर के रूप में बंगलौर का विकास (पांच सौ किलोवाट शॉर्टवेव के ट्रांसमीटरों की स्थापना)।
- नई दिल्ली में प्रधानमंत्री द्वारा ब्राडकास्टिंग हाउस का शिलान्यास।

दूरदर्शन

- प्रधानमंत्री द्वारा इनसेट 2 सी राष्ट्र को समर्पित।
- डी. डी.–सी. एन. एन. आई. चैनल और डी. डी. मूवी क्लब की शुरूआत।
- 25 राज्यों में 106 दूरदर्शन परियोजनाओं की शुरूआत।

फिल्म

- महात्मा गांधी की 125वीं जयंती के अवसर पर दांडी मार्च के बारे में 'नमक की कंकरी' वृत्तचित्र का निर्माण।
- सत्ताइसवां भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह नई दिल्ली में संपन्न।
- बच्चों और युवाओं के लिए नौवां अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह हैदराबाद में आयोजित किया गया।
- कलकत्ता में सत्यजित राय भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान के प्रशासनिक खंड का निर्माण कार्य पूरा हुआ।
- असम समझौते के फलस्वरूप गुवाहाटी के ज्योति चित्रबन फिल्म स्टूडियो के लिए 8.79 करोड़ रुपये की अनुदान राशि स्वीकृत।
- फिल्मों के निर्यात से होने वाली आय 23 करोड़ रुपये से अधिक पहुंची।

प्रकाशन

- पुस्तक प्रकाशन में उत्कृष्टता के लिए प्रकाशन विभाग ने कला वर्ग में चार पुरस्कार जीते।

मीडिया नीति

- श्री रामविलास पासवान, सांसद (लोकसभा) की अध्यक्षता में संसदीय सलाहकार समिति की उप–समिति ने राष्ट्रीय मीडिया नीति पर रिपोर्ट प्रस्तुत की।

संसाधनों का उपयोग आधारभूत ढांचे के विकास, विशेषकर इलैक्ट्रानिक मीडिया –जैसे ट्रांसमीटर लगाने, स्टूडियो और कार्यक्रम निर्माण सुविधाओं–में महत्वपूर्ण सुधार लाने के लिए किया गया। क्षेत्रीय और स्थानीय सुविधाओं को मजबूत बनाने की ओर विशेष ध्यान दिया गया। स्थानीय भाषाओं के कार्यक्रमों को दूरदर्शन पर दिखाने और प्रसारित करने को विशेष रूप से सिर्फ इसलिए नहीं प्रोत्साहित किया गया कि उससे संबंधित राज्यों में रहने वाली जनता को ही लाभ हो बल्कि भारत और विदेशों में रह रहे विभिन्न भाषाभाषी समुदायों को भी लाभ पहुंचे। ऐसा उपग्रह आधारित प्रसारण से संभव हो सका है। इस दिशा में 'इनसेट' सुविधाएं प्राप्त करने में अंतरिक्ष विभाग से महत्वपूर्ण सहयोग मिला है।

1.3 राष्ट्रीय हित के मुद्दों जैसे–राष्ट्र की एकता और अखंडता, पर्यावरण सुरक्षा, प्राथमिक/प्रारंभिक शिक्षा, निरक्षरता उन्मूलन और महिलाओं, बच्चों, प्राथमिक स्वास्थ्य, कृषि तथा ग्रामीण विकास–से संबंधित समस्याओं के कार्यक्रमों की ओर भी आकाशवाणी और दूरदर्शन के राष्ट्रीय नेटवर्क और जनसंचार के अन्य माध्यमों ने विशेष ध्यान दिया है।

1.4 अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों के माध्यम से निर्माताओं, निर्देशकों और तकनीशियनों के बीच विचारों के आदान–प्रदान द्वारा फिल्म उद्योग को निरंतर सहयोग प्रदान

किया गया है ताकि फिल्म–निर्माण–तकनीक और उसके मनोरंजनकारी गुणों में सुधार लाया जा सके। अच्छी फिल्मों के निर्माण के लिए स्थापित सार्वजनिक संस्थागत आधारभूत ढांचों को सतत सहयोग प्रदान किया गया है। वर्ष 1994-95 के अंत तक फिल्म उद्योग ने निर्यात से 23 करोड़ रुपये से अधिक राशि अर्जित की।

1.5 देश और विदेश में राष्ट्र की संतुलित छवि प्रदर्शित करने में पत्र सूचना कार्यालय ने सतत भूमिका निभाई है। इसने 'आर्थिक विषयों के संपादकों के सम्मेलन' जैसे कार्यक्रमों के जरिये आर्थिक सुधार के आयाम को भी वस्तुपरक ढंग से प्रस्तुत किया है।

1.6 क्षेत्रीय प्रचार संगठन ने आम जनता के स्तर पर व्यक्तिगत संपर्क के जरिए लोगों में सामाजिक–आर्थिक मसलों और उनके नागरिक अधिकारों तथा दायित्वों के बारे में जागृति पैदा करने में मंत्रालय की मदद की है।

2
आकाशवाणी

नेटवर्क

2.1.1 आकाशवाणी के इस समय (31.3.96) देशभर में 185 केंद्र कार्य कर रहे हैं। इनमें 177 पूर्ण केंद्र, 4 रिले केंद्र, 1 सहायक केन्द्र और 3 पूर्णतः विविध भारती व्यावसायिक सेवा केंद्र हैं। 1995-96 में मसूरी, राउरकेला, पुरी, जोरांदा, जोवाइ, दमन, मोकोकचुंग और दीफू के 8 नए केंद्र आकाशवाणी के नेटवर्क से जुड़ गए। इस समय आकाशवाणी के कार्यक्रम देश के 90 प्रतिशत क्षेत्र में 97.3 प्रतिशत जनसंख्या द्वारा सुने जा सकते हैं। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में इस नेटवर्क की प्रगति रेखाचित्र 4.1.1. (क) में दिखाई गई है। क्षेत्र और जनसंख्या की कवरेज रेखाचित्र 4.1.1 (ख) में दिखाई गई है।

2.1.2 स्थानीय रेडियो केन्द्र की धारणा आकाशवाणी नेटवर्क में छठी पंचवर्षीय योजना के दौरान अपनाई गई। उस समय अग्रणी परियोजनाओं के तौर पर ऐसे छह केन्द्र खोले गए। अब देश भर में 72 स्थानीय केन्द्र हैं।

2.1.3 आकाशवाणी के कम्प्यूटर प्रभाग ने एम.आई.एस. बिलों आदि की प्रोसेसिंग और कार्यालय में स्वचालित

सुप्रसिद्ध गायक पंडित जसराज आकाशवाणी संगीत सम्मेलन 1995 में गायन प्रस्तुत करते हुए

31.3.96 की स्थिति

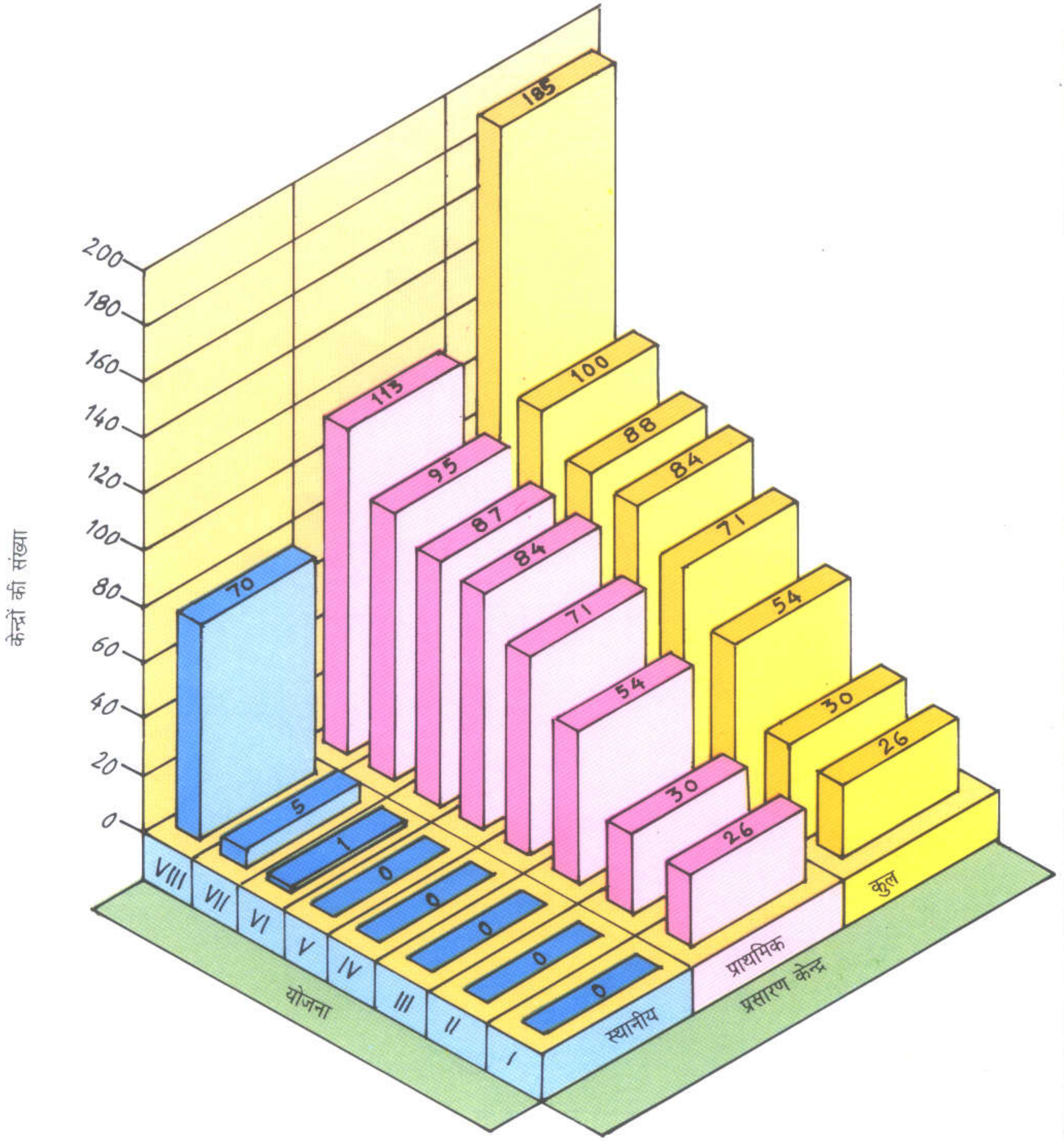

क्रमिक योजनाओं में रेडियो केन्द्रों की वृद्धि

31.3.96 की स्थिति

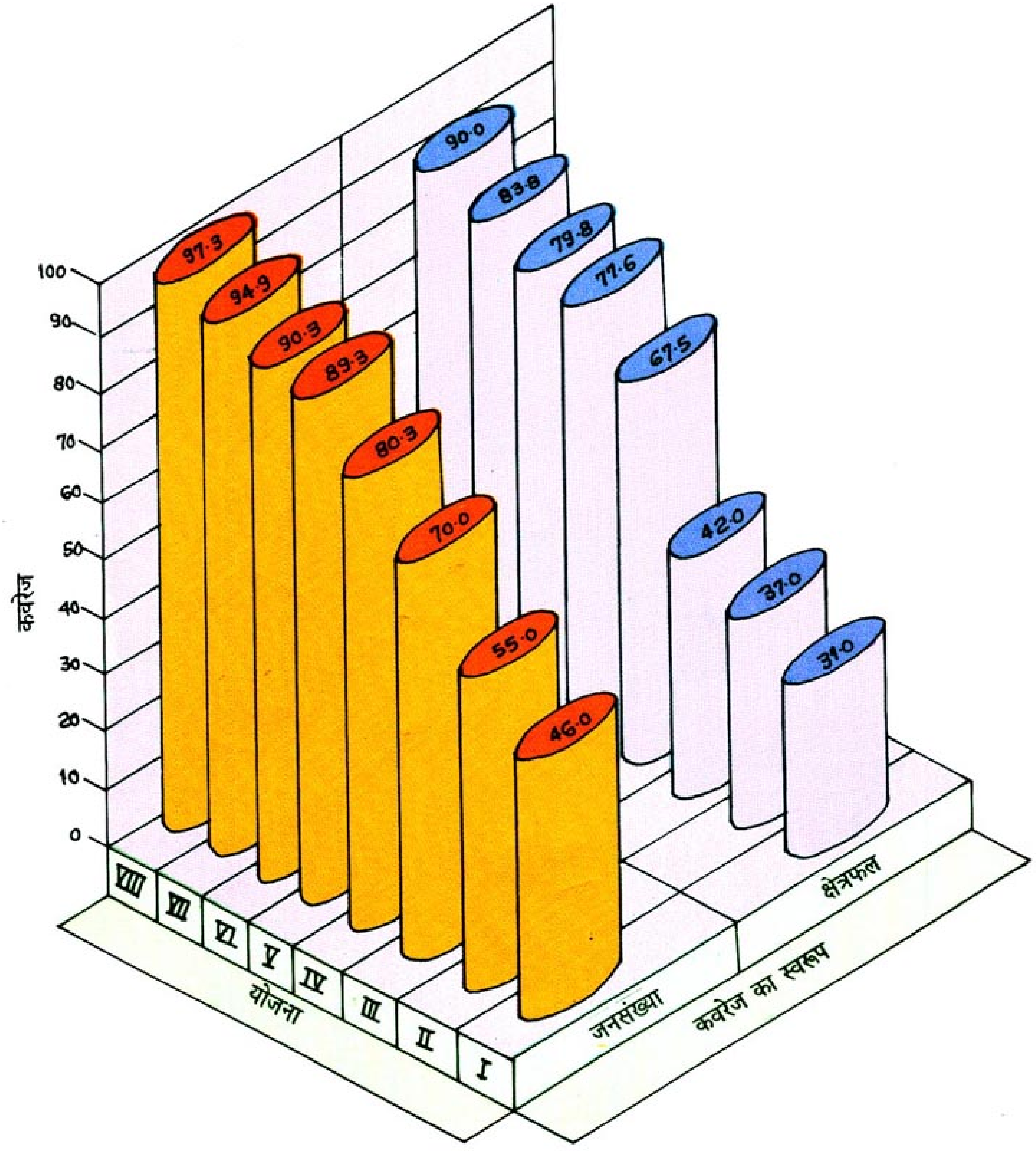

क्रमिक योजनाओं के बाद जनसंख्या व क्षेत्रफल का कवरेज

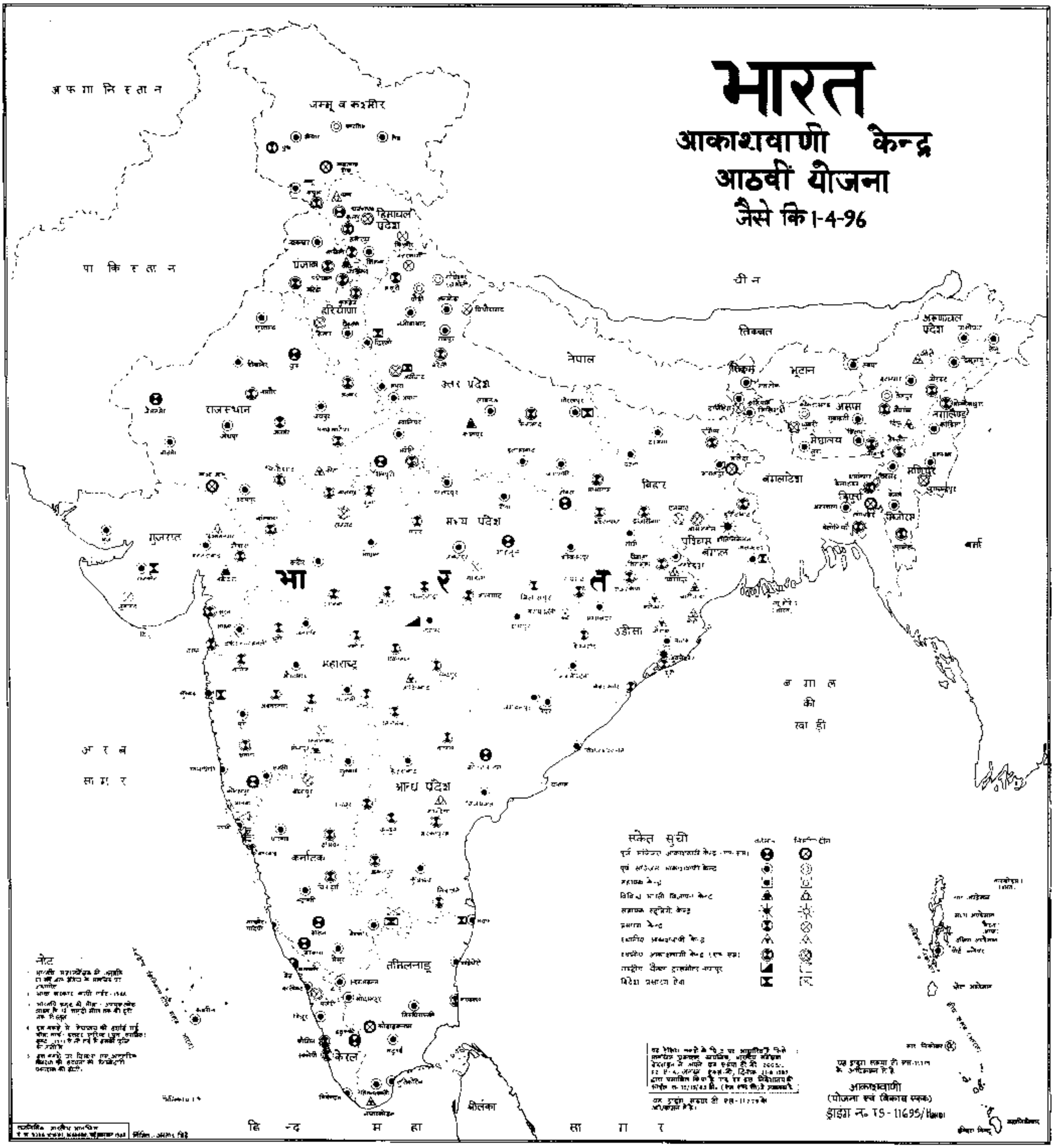
भारत
आकाशवाणी केन्द्र
आठवीं योजना
जैसे कि 1-4-96
अफगानिस्तान
पाकिस्तान
चीन
तिब्बत
नेपाल
भूटान
बंगलादेश
बर्मा
जम्मू व कश्मीर
हिमाचल प्रदेश
पंजाब
हरियाणा
राजस्थान
उत्तर प्रदेश
बिहार
गुजरात
मध्य प्रदेश
पश्चिम बंगाल
उड़ीसा
महाराष्ट्र
आन्ध्र प्रदेश
कर्नाटक
तमिलनाडु
केरल
सिक्किम
असम
मेघालय
अरुणाचल प्रदेश
नागालैण्ड
मणिपुर
मिजोरम
त्रिपुरा
भारत
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
हिन्द महासागर
श्रीलंका
संकेत सूची
नोट
आकाशवाणी
(योजना एवं विकास स्कंध)
ड्राइंग न. TS-11695/Hindi

आकाशवाणी

1996-97 में पूरी होने वाली एफ.एम. प्रसारण तथा अन्य परियोजनाएं

एफ. एम. परियोजनाएं

1.	दिल्ली (दूसरा चैनल)	5 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर
2.	जम्मू (सी. बी. एस.)	2x5 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर
3.	भद्रवाह	2x3 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर
4.	हिसार	एल.आर.एस.
5.	जोधपुर (वीबी)	2x3 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर
6.	अलीगढ़	2x3 किलोवाट एम.एम. ट्रांसमीटर (रिले)
7.	लखनऊ	2x5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर (स्टीरियो)
8.	धुबरी	2x3 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर (रिले)
9.	गुवाहाटी (सी. बी. एस.)	2x5 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर
10.	चूड़ाचांदपुर	एल.आर.एस.
11.	शिलांग	2x5 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर (स्टीरियो)
12.	आसनसोल	2x3 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर (रिले)
13.	सिलीगुड़ी (सी. बी. एस.)	2x5 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर
14.	कलकत्ता (दूसरा चैनल)	5 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर
15.	जमशेदपुर (सी.बी.एस.)	2x3 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर
16.	मुम्बई (दूसरा चैनल)	5 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर
17.	जबलपुर (सी.बी.एस.)	2x5 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर
18.	विशाखापत्तनम (सी.बी.एस.)	2x5 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर
19.	कोयम्बटूर (सी.बी.एस.)	2x5 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर
20.	मद्रास (दूसरा चैनल)	5 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर
21.	कोडइकनाल	2x5 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर

अन्य परियोजनाएं

1.	दिल्ली (वी. बी.)	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
2.	दिल्ली (एन. सी.)	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
3.	रामपुर	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
4.	पिथौरागढ़ (रिले)	एक किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर

5.	दिल्ली (फेज़ II)	स्टूडियोज को सुव्यवस्थित करना
6.	दिल्ली	क्षेत्रीय कार्यशाला
7.	जालंधर	200 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
8.	चमोली	एक किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर, और एस./क्वार्टर
9.	गोरखपुर	100 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
10.	कोकराझार	2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर टाइप–1 (आर) स्टेशन तथा स्टाफ क्वार्टर
11.	संबलपुर	100 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
12.	कुर्सियोंग	50 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
13.	जीरो लोकल रेडियो स्टेशन	1 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
14.	गुवाहाटी	स्टूडियो को सुव्यवस्थित करना
15.	गुवाहाटी	100 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
16.	तेजपुर	2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर और स्टाफ क्वार्टर
17.	रांची	50 किलोवाट शार्ट वेव ट्रांसमीटर
18.	जैपौर	50 किलोवाट शार्ट वेव ट्रांसमीटर
19.	कलकत्ता	200 किलोवाट शार्ट वेव ट्रांसमीटर
20.	कलकत्ता	स्टूडियोज को सुव्यवस्थित करना
21.	कलकत्ता	स्टूडियो की अतिरिक्त सुविधा
22.	मुंबई	स्टूडियो को सुव्यवस्थित करना (फेज–II)
23.	मुंबई	क्षेत्रीय कार्यशाला
24.	मुंबई	वीबी की समेकित सेवाएं (फेज–II)
25.	मुंबई	गोल्फ स्टूडियो, टाइप III
26.	परभनी	2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
27.	हैदराबाद	200 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
28.	गुलबर्गा	2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
29.	अलेप्पी	200 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
30.	तिरुअनंतपुरम	टाइप IV स्टूडियोज
31.	कोयम्बटूर	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
32.	मद्रास	क्षेत्रीय कार्यशाला
33.	पांडिचेरी	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर

आकाशवाणी के उद्देश्य

- **संविधान प्रदत्त लोकतांत्रिक मूल्यों तथा देश की एकता और अखंडता को कायम रखना।**
- **किसी भी विचारधारा से प्रभावित हुए बिना निष्पक्ष और संतुलित ढंग से राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय सूचनाएं प्रदान करना।**
- **भारत की मिली-जुली संस्कृति को दर्शाना।**
- **समाज के सभी वर्गों को सूचना, जानकारी, शिक्षा, मनोरंजन और संपन्नता प्रदान करना।**
- **राष्ट्र के विकास कार्यक्रमों के सभी पक्षों जिनमें कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण तथा विज्ञान और टैक्नोलॉजी शामिल हैं, को प्रचारित करना।**
- **अल्पसंख्यकों और जनजातीय आबादी के अलावा गांवों में रहने वाले निरक्षरों, सुविधा से वंचित और विकलांग वर्गों की सेवा।**
- **सामाजिक न्याय और समानता को प्रोत्साहित और प्रचारित करना।**

प्रणालियों के क्षेत्र में कम्प्यूटरीकरण शुरू किया है। विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग के लिए करीब 20 साफ्टवेयर विकसित किए गए हैं। मुंबई में भी कम्प्यूटरीकरण योजनाएं लागू करने का काम हाथ में लिया। व्यावसायिक बिलिंग और क्रम तथा समय निर्धारण का काम स्वचालित कर दिया गया है। प्रभाग ने वेतन के बिल बनाने के लिए कार्यालय में प्रयोग के लिए द्विभाषी साफ्टवेयर प्रोग्रामर तैयार किया है और नई दिल्ली के प्रसारण भवन में इसका उपयोग हो रहा है। सी.एस.यू. तिरुअनंतपुरम में कार्यालय में व्यावसायिक बिलिंग के लिए साफ्टवेयर इस्तेमाल किया जा रहा है।

आकाशवाणी की प्रगति

	1990-91	1995-96	प्रगति (%)
केंद्रों की संख्या	108	185	71
ट्रांसमीटरों की संख्या	197	293	49
रेडियो कवरेज (क्षेत्र) (%)	84.6	90.6	06
रेडियो कवरेज (जनसंख्या) (%)	95.4	97.3	02
एफ. एम. मैट्रो चैनल पर प्रसारण की अवधि (घंटों में)	05.5	24	
व्यावसायिक आय (करोड़ रु०)	35	64	83
बजट (करोड़ रु०)	355.58	511.79	43.93

2.1.4 इस समय आकाशवाणी में देशभर में रेडियो कार्यक्रमों के वितरण के लिए इनसैट–1डी और इनसैट–2ए उपग्रहों का उपयोग हो रहा है। सी एक्स एस बैंड में कैरियर काम कर रहे हैं। इन कैरियरों के लिए अप–लिंक केन्द्र हैं–(क) दिल्ली–4 चैनल (ख) मुंबई, कलकत्ता–1–1 चैनल (ग) मद्रास। दिल्ली के प्रसारण भवन के भूकेन्द्र से चार आर एन चैनल इनसैट–2ए के साथ सी बेंड में अप–लिंक किए गए हैं। ये कार्यक्रम मुंबई, चिनसुरा, नागपुर, अहमदाबाद, भोपाल, गुवाहाटी, हैदराबाद, राजकोट, मद्रास, बंगलौर, एस.पी.टी. बंगलौर, अलीगढ़, गोरखपुर, धारवाड़, अलेप्पी और कटक के आकाशवाणी केन्द्रों में प्राप्त किए जाते हैं।

2.1.5 इनसैट–2 उपग्रह की उपलब्धता के बाद इनसैट–2 ए के सी एक्स एस–1 में 23 और आर एन चैनल काम करने लगे हैं। इन चैनलों के लिए अप–लिंक व्यवस्था निम्न स्थानों पर है–दिल्ली–सात, मुंबई–2(डी.बी), तथा श्रीनगर, अहमदाबाद, बंगलौर, जयपुर, शिमला, लखनऊ और ईटानगर–प्रत्येक में एक–एक। आकाशवाणी के 186 केंद्रों के लिए 'एस' बेंड प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध कराई जा चुकी है। इसके अलावा डी.बी. कार्यक्रम सीधे स्पॉट से रिले

करने के लिए लाए ले जाए जा सकने वाले अप–लिंक टर्मिनल भी उपलब्ध है।

2.1.6 आकाशवाणी के आधुनिकीकरण और विस्तार की अनेक योजनाओं पर काम चल रहा है। ऐसी प्रमुख योजनाएं हैं–(i) 35 स्थानों पर प्रसारण केंद्र खोलना (ii) आकाशवाणी की विदेश प्रसारण सेवा को बेहतर बनाने के लिए 250 किलोवाट के 7 उच्च शक्ति शार्टवेव ट्रांसमीटर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इनमें 5 दिल्ली में और 2 अलीगढ़ में उपलब्ध कराए जाने हैं। (iii) देश में रेडियो प्रसारण के क्षेत्र के विस्तार के लिए कलकत्ता, जालंधर, अलेप्पी और हैदराबाद में दो–दो सौ किलोवाट के 4 उच्चशक्ति मीडियम वेव ट्रांसमीटर तथा गुवाहाटी, संबलपुर, जगदलपुर और गोरखपुर में सौ-सौ किलोवाट के चार उच्चशक्ति मीडियम वेव ट्रांसमीटर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। (iv) चार महानगरों में सीधे डिजिटल रिकार्डिंग सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। (v) कंप्यूटरीकृत नेटवर्किंग के जरिए देशभर में विविध भारती सेवाओं को बेहतर बनाया जा रहा है। (vi) डिस्क और टेपों में पुरानी तथा खराब संग्रहणीय सामग्री को नया स्वरूप देने तथा उसे लंबे समय तक संरक्षित करने के लिए ऑप्टिकल डिस्क में स्थानांतरित करने के लिए स्थायी संग्रह सेवा व्यवस्था विकसित की जा रही है। (vii) एफ एम आर डी एस पेजिंग सेवा वर्तमान एफ एम प्रसारण नेटवर्क के जरिए चुने हुए 17 केंद्रों में शुरू की गई है। इसका चरणबद्ध तरीके से अन्य केन्द्रों में विस्तार किया जा रहा है। (viii) चार महानगरों में डिजिटल एडीटिंग और डबिंग सुविधाएं जुटाई जा रही हैं। (ix) तकनीकी कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए उड़ीसा में भुवनेश्वर स्टाफ प्रशिक्षण संस्थान खोला जा रहा है। यहां आधुनिक शिक्षा सुविधाएं जुटाई जा रही हैं। (x) विदेश प्रसारण/समाचार सेवा प्रभाग के लिए दिल्ली में स्थायी भवन बनाया जा रहा है। इस केन्द्र में आधुनिकतम सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

समाचार तथा सामयिक कार्यक्रम

2.2.1 आकाशवाणी से इस समय प्रतिदिन 305 समाचार बुलेटिन प्रसारित हो रहे हैं। इनकी कुल अवधि 39 घंटे 20 मिनट की है। इनमें 12 घंटे 20 मिनट अवधि के 104 बुलेटिन राष्ट्रीय सेवा से प्रसारित होते हैं और 41 क्षेत्रीय समाचार इकाइयों से 18 घंटे 16 मिनट अवधि के 136 बुलेटिन प्रसारित होते हैं। विदेश प्रसारण सेवा से प्रतिदिन 8 घंटे 59 मिनट अवधि के 65 समाचार बुलेटिन प्रसारित होते हैं।

2.2.2 1995–96 में, आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र की एफ एम चैनल से अंग्रेजी और हिंदी में अल्प अवधि के 15 बुलेटिन शुरू किए गए। इसके अलावा, विभिन्न केन्द्रों से स्थानीय कवरेज को बढ़ावा देने के लिए, आकाशवाणी के मंगलौर केंद्र से पांच मिनट का तुलू बुलेटिन, पणजी केंद्र से कोंकणी का दूसरा राष्ट्रीय बुलेटिन, विजयवाड़ा केन्द्र से एक समाचार वार्ता और ईटानगर केंद्र से रेडिओ न्यूजरील कार्यक्रम शुरू किया गया।

2.2.3 आकाशवाणी के समाचार सेवा प्रभाग द्वारा केवल समाचारों के प्रसारण के लिए उच्च टेक्नोलॉजी वाले दो स्टूडिओ बनाए गए। इनसे आकशवाणी के संवाददाताओं और विशेषज्ञों के फोन के जरिए वाइसकास्ट सीधे बुलेटिनों में शामिल किए जा सकते हैं।

2.2.4 इस वर्ष जिन प्रमुख राष्ट्रीय समाचारों का तत्परता से प्रसारण किया, उनमें शमिल हैं : भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई का निधन, पंजाब के मुख्यमंत्री श्री बेअंत सिंह की बम विस्फोट में हत्या, उत्तर प्रदेश में सुश्री मायावती की सरकार का गिरना और उसके बाद विधानसभा भंग किया जाना, उत्तर प्रदेश में फिरोज़ाबाद के पास हुई रेल दुर्घटना, जम्मू–कश्मीर की स्थिति, देश के अनेक भागों में बाढ़, अनुसूचित जातियों, जनजातियों, अल्पसंख्यकों और गांवों के गरीब लोगों के कल्याण की अनेक योजनाएं शुरू की गई।

2.2.5 इस वर्ष प्रसारित प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय समाचार थे : संयुक्त राष्ट्र की स्वर्ण जयंती, कोलंबिया में गुट–निरपेक्ष देशों का ग्यारहवीं शिखर सम्मेलन, राष्ट्रमंडल शासनाध्यक्षों का आकलैंड में सम्मेलन, दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन का नई दिल्ली शिखर सम्मेलन, पेइचिंग में संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित चौथा विश्व महिला सम्मेलन, इजराइल के प्रधानमंत्री श्री यित्जाक रॉबिन की हत्या, कराची में विभिन्न समुदायों के बीच हिंसक घटनाएं और श्रीलंका में तमिल उग्रवादी संगठन–एल.टी.टी.ई. के खिलाफ सेना की 'ऑपरेशन रिवेरेस' कार्रवाई।

2.2.6 आकाशवाणी के समाचार बुलेटिनों और समाचारों पर आधारित कार्यक्रमों में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अल्पसंख्यकों और गांवों के गरीब लोगों के कल्याण कार्यक्रमों पर विशेष बल दिया गया। इस सिलसिले में निम्न विषयों पर समाचार तथा कार्यक्रम प्रसारित किए गए : राष्ट्रीय पोषण सहायता कार्यक्रम के तहत प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों के लिए दोपहर के भोजन की योजनाएं, राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम, ग्रामीण समूह बीमा योजना, निजी क्षेत्र के भविष्य निधि धारकों के लिए पेंशन योजना, इंदिरा आवास योजना, महिला समृद्धि योजना, प्रधानमंत्री की रोजगार योजना आदि। नई आर्थिक नीति और सार्वजनिक वितरण प्रणाली को नया स्वरूप देने को भी प्रसारणों में प्रमुख स्थान दिया गया।

2.2.7 टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में भारत की प्रगति और विविध क्षेत्रों में सर्वांगीण विकास को आकाशवाणी के बुलेटिनों में प्रमुख स्थान दिया गया। देश में विकसित तीव्रतम कंप्यूटर प्रणाली, विश्व के सबसे बड़े कंप्यूटर नेटवर्क–इंटरनेट के साथ देश को जोड़ने, आधुनिक आर्मी स्टैटिक स्विच्ड कम्यूनिकेशन नेटवर्क के राष्ट्र को समर्पित किए जाने, बंगलौर में भारत में ही बने पहले हल्के लड़ाकू विमान का निर्माण, असम में गंगाखात में 34 अरब रुपए की गैस क्रैकर परियोजना का शिलान्यास, रेडियो पेजिंग सेवा, सेलुलर फोन सेवा और दूरदर्शन के तीसरे चैनल का प्रारंभ जैसे समाचारों का प्रमुखता से प्रसारण किया गया।

2.2.8 राष्ट्रपति के ट्रिनिडाड, चिली, नामीबिया और जिम्बाब्वे के एक पखवाड़े के दौरे तथा उपराष्ट्रपति की इटली तथा संयुक्त राष्ट्र के दौरों के समाचार प्रमुखता से प्रसारित किए गए। प्रधानमंत्री की मालदीव, फ्रांस, मलेशिया, तुर्कमेनिस्तान, किर्गिस्तान, घाना, अर्जेंटीना और बुर्किनाफासो की यात्राओं को पर्याप्त महत्व दिया गया। भारत आए गणमान्य विदेशी नेताओं की यात्राओं को भी पर्याप्त महत्व दिया गया। इन नेताओं में ईरान के राष्ट्रपति श्री हाशमी रफसंजानी, नेपाल के (तत्कालीन) प्रधानमंत्री श्री मनमोहन अधिकारी, डेनमार्क के प्रधानमंत्री श्री पॉल नाइरूप रास्मुसेन, माले के राष्ट्रपति श्री एल्फा कमर कनारे, मारीशस के प्रधानमंत्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ, नामीबिया के प्रधानमंत्री श्री हेग गेइनगौब, अमेरिका के राष्ट्रपति की पत्नी श्रीमती हिलेरी क्लिंटन और रूस के उपप्रधानमंत्री श्री यूरी यारोव शामिल थे। जनवरी से मार्च

'हास्य तरंग' कार्यक्रम के अंतर्गत प्रस्तुत एक नाटक का दृश्य

1996 की अवधि में जिन महत्वपूर्ण घटनाओं को प्रमुखता दी गई उनमें संसद का बजट सत्र, रेलवे बजट और अंतरिम केंद्रीय बजट का प्रस्तुत किया जाना, लोकसभा तथा छह राज्य विधानसभाओं के चुनावों की घोषणा तथा चुनाव प्रक्रिया, उच्चतम न्यायालय के अनेक फैसले तथा केंद्रीय जांच ब्यूरो द्वारा कुछ राजनीतिज्ञों के खिलाफ आरोप–पत्र दाखिल किया जाना शामिल है। आकाशवाणी से लोकसभा और विधानसभा का चुनाव परिणामों की अविलंब घोषणा के लिए आकाशवाणी के समाचार सेवा प्रभाग में एक विशेष चुनाव कक्ष की स्थापना की गई। समाचार सेवा प्रभाग ने चुनाव परिणामों की प्रवृत्तियों पर चर्चा और विवेचना के लिए विशेष कार्यक्रम बनाए। आकशवाणी के दिल्ली और कुछ अन्य प्रमुख नगरों के स्टूडियो में बैठे विशेषज्ञों ने विभिन्न राजनीतिक दलों के चुनावी प्रदर्शन पर चर्चा की। ये कार्यक्रम सीधे प्रसारित किए गए।

2.2.9 आकाशवाणी के समाचार बुलेटिनों और कार्यक्रमों में पंचायतों के जरिए आम जनता को अधिकार देने के सरकार के संकल्प को पर्याप्त महत्व दिया गया। इस सिलसिले में, राज्यों के पंचायत मंत्रियों की बैठक, पंचायत राज संस्थाओं के प्रमुखों के दो दिन के सम्मेलन, तथा उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश में पंचायत चुनावों की पर्याप्त कवरेज की गई। गोवा, गुजरात, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश में स्थानीय निकायों के चुनावों की खबरों को भी प्रमुखता से प्रसारित किया गया।

2.2.10 विभिन्न सामाजिक कल्याण योजनाओं के बारे में लोगों को बताने तथा इसके लाभ उठाने के तरीके समझाने के लिए आकाशवाणी ने राष्ट्रीय, क्षेत्रीय तथा स्थानीय स्तर पर अनेक कार्यक्रम शुरू किए। युवा उद्यमों को छोटे उद्योग खोलने, खासतौर से प्रधानमंत्री रोजगार योजना के तहत ऐसे उद्यम शुरू करने में मार्गदर्शन के लिए अनेक केंद्रों ने कार्यक्रम प्रसारित किए।

2.2.11 खेल जगत की प्रमुख राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं को बुलेटिनों में प्रमुख स्थान दिया गया। इनमें से प्रमुख है ; विश्व शतरंज प्रतियोगिता, फ्रेंच ओपन टेनिस प्रतियोगिता, विम्बलडन टेनिस प्रतियोगिता, अमेरिकी ओपन टेनिस प्रतियोगिता, मोनिका सेलेस की अंतर्रा ष्ट्रीय टेनिस प्रतियोगिताओं में वापसी, विश्व बैंडमिंटन प्रतियोगिता, विश्व टेबल टेनिस प्रतियोगिता, राष्ट्रमंडल फ्रीस्टाइल कुश्ती प्रतियोगिता, शारजाह में एशिया कप एक–दिवसीय क्रिकेट प्रतियोगिता, इंग्लैंड और वेस्ट इंडीज तथा भारत और न्यूजीलैंड के बीच टेस्ट क्रिकेट श्रृंखलाएं, चार देशों की हाकी प्रतियोगिता, राष्ट्रमंडल निशानेबाजी प्रतियोगिता, राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता, राष्ट्रमंडल निशानेबाजी प्रतियोगिता, राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय जूडो प्रतियोगिता, 44वीं सीनियर राष्ट्रीय वालीबाल प्रतियोगिता, अखिल भारतीय सुरजीत सिंह स्मारक हाकी प्रतियोगिता और 28वीं जूनियर राष्ट्रीय हाकी प्रतियोगिता।

2.2.12 संसद के दोनों सदनों की रोज की कार्यवाही और महत्वपूर्ण चर्चाओं को समाचार बुलेटिनों में प्रमुख स्थान दिया गया। संसदीय सत्र के दौरान कार्यवाही का सार–संक्षेप 'टुडे इन पार्लियामेण्ट' तथा 'संसद समीक्षा' तथा 'दिस वीक इन पार्लियामेण्ट' तथा सप्ताह भर की ससंद समीक्षा (साप्ताहिक) कार्यक्रमों में प्रसारित किया जाता रहा। राज्य विधान मंडलों की कार्यवाहियों की समीक्षाएं क्षेत्रीय समाचार एकांश से प्रसारित की गईं।

2.2.13 सिरसा जिले के डबवाली कस्बे में 23 दिसंबर 1995 को आग लगने की दुर्घटना के समाचार आकाशवाणी से प्रमुखता से प्रसारित किए गए। आकाशवाणी के रात 9 बजे के बुलेटिन में चंडीगढ़ संवाददाता का वॉयसकास्ट तथा प्रधानमंत्री तथा हरियाणा और पंजाब के मुख्यमंत्रियों के संवदेना संदेश प्रसारित किए गए। आकाशवाणी से इस दुर्घटना से संबद्धस समाचारों को प्रमुख समाचारों, हर घंटे के बुलेटिनों तथा समाचारों से संबद्ध कार्यक्रमों मे प्रसारित किया गया।

2.2.14 कजाकिस्तान में बैंकानूर से 28 दिसंबर को भारत के दूसरी पीढ़ी के दूरसंवेदी उपग्रह आई.आर.एस.–1सी छोड़े जाने के समाचार को उस दिन के सवेरे और दिन के बुलेटिनों में प्रमुख समाचार के रूप में लिया गया। उसी दिन शाम पौने नौ बजे के प्रमुख हिंदी बुलेटिन में आकाशवाणी के बंगलौर संवाददाता की विस्तृत रिपोर्ट प्रसारित की गई जिसमें भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान के सूत्रों के हवाले से उपग्रह के विविध पक्षों की जानकारी दी गई।

लेह के लोक नर्तकों द्वारा आकाशवाणी वार्षिक पुरस्कार 1995 में आमंत्रित दर्शकों के सम्मुख नृत्य

2.2.15 देश में ही बने पहले हल्के लड़ाकू विमान को प्रधानमंत्री द्वारा 17 नवंबर 1995 को वायुसेना में शामिल किए जाने के समाचार को आकाशवाणी ने प्रमुखता से प्रसारित किए। उस दिन के तीनों प्रमुख बुलेटिनों में यह प्रथम समाचार रहा। आकाशवाणी के बंगलौर संवाददाता का वॉयसकास्ट उस दिन रात नौ बजे के प्रमुख बुलेटिन में शामिल क्रिया गया।

2.2.16 सिनेमा के शताब्दी समारोह के अवसर पर अनेक विशेष कार्यक्रम राष्ट्रीय नेटवर्क और क्षेत्रीय केंद्रों से प्रसारित किए गए। जनवरी 1996 में दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह को व्यापक कवरेज दी गई।

2.2.17 मतदाताओं को मताधिकार, वोट देने की आवश्यकता और चुनाव के अन्य पक्षों के बारे में जानकारी देने के लिए आकाशवाणी ने मतदाता जागरूकता अभियान शुरू किया। स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों के लिए निर्वाचन आयोग द्वारा किए गए विभिन्न प्रबंधों का प्रमुखता से प्रसारण किया गया।

विदेश सेवा प्रभाग

2.3.1 आकाशवाणी का विदेश सेवा प्रभाग राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर भारतीय दृष्टिकोण विदेशों में प्रस्तुत करता है। 24 भाषाओं (16 विदेशी और 8 भारतीय) में इसके कार्यक्रम प्रतिदिन 70 घंटे प्रसारित होते हैं। इसकी प्रमुख सेवाएं हैं :जनरल ओवरसीज सर्विस, उर्दू सर्विस और हिन्दी सर्विस। विदेश सेवा प्रभाग के ट्रांसमीटरों से रात 9 बजे का प्रमुख राष्ट्रीय अंग्रेजी बुलेटिन सार्क देशों में भी प्रसारित होते हैं।

इंटरनेट पर आकाशवाणी

2.4.1 संचार के इस रूप की विलक्षण क्षमताओं को देखते हुए कुछ अग्रणी प्रसारण संगठनों जैसे आस्ट्रेलिया ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन, सी.बी.सी., वाइस आफ अमेरिका, बी.बी.सी. आदि ने इंटरनेट पर अपने कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू किया और वे नेटवर्क पर समाचारों को लगातार अद्यतन तथा अपने कार्यक्रमों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देते रहते हैं।

2.4.2 2 मई 1996 को इंटरनेट पर प्रायोगिक आधार पर लाइन सूचना सेवा शुरू करके आकाशवाणी भी इस सूचना महामार्ग से जुड़ गया है। आकाशवाणी रोजाना एक बार टेक्स्ट मोड में अद्यतन समाचार, सामयिक विषयों पर टिप्पणी और भारतीय समाचारपत्रों की सुर्खियां फीड करता है। इस अग्रणी

सेवा के लिए प्रणाली और होम पेज की रूपरेखा आकाशवाणी का अनुसंधान विभाग तैयार करता है। इस सेवा के रख–रखाव की जिम्मेदारी भी अनुसंधान विभाग पर है। आकाशवाणी से जुड़ने के अक्षर हैं–एच टी टी पी :/ए. आई. आर. के ओ डी ई. एन ई टी।

2.4.3 भारत के 1996 के चुनाव परिणामों को भी इंटरनेट के आकाशवाणी लाइन में बराबर फीड किया गया। इन परिणामों को हर घंटे अद्यतन किया गया। इंटरनेट पर आकाशवाणी की इस सेवा को दुनियाभर में सराहा गया और एक महीने से कम समय में यह लोकप्रिय हो गया। सिर्फ पहले दस दिनों में ही आकाशवाणी के इस सेवा के 7.5 लाख से अधिक लोगों तक पहुंचने की खबर है। ज्यादातर उपभोक्ता दुनियाभर में प्रवासी भारतीय और राजनयिक/अधिकारी हैं। वास्तव में प्रत्येक उपभोक्ता ने यह सेवा शुरू करने के लिए आकाशवाणी के प्रयासों की काफी सराहना की। इन लोगों का विचार है कि इस सेवा से न सिर्फ उन्हें अद्यतन जानकारी मिल सकेगी बल्कि अपनी मातृभूमि से भी और करीब होने में उन्हें मदद मिलेगी। इस प्रायोगिक सेवा से प्राप्त अनुभव इंटरनेट पर आकाशवाणी की स्थायी सूचना सेवा शुरू करने में काफी उपयोगी सिद्ध होगा।

केंद्रीय अनुश्रवण सेवा

2.5.1 आकाशवाणी की केंद्रीय अनुश्रवण सेवा महत्वपपूर्ण रेडियो और टेलीविजन नेटवर्क के प्रसारणों को मानीटर करता है। वर्ष के दौरान केंद्रीय अनुश्रवण सेवा ने 26 देशों की 13 भाषाओं (8 भारतीय तथा 5 विदेशी) के प्रतिदिन 225 समाचार बुलेटिन तथा लगभग सौ समाचार से संबंधित कार्यक्रमों को मानीटर किया। आकाशवाणी के समाचार कक्ष को मानीटर की हुई खबरें देने के अलावा केंद्रीय अनुश्रवण सेवा मानीटर की हुई सूचनाएं आकाशवाणी के विदेश प्रसारण विभाग, विभिन्न मीडिया एककों और विदेश मंत्रालय सहित अनेक सरकारी विभागों को प्रदान करता है ताकि वे भारत से संबंधित घटनाओं और वक्तव्यों से सूचित रहें।

2.5.2 मानीटर की हुई सामग्री का दैनिक संकलन 'टूडेज रेडियो रिपोर्ट' केंद्रीय अनुश्रवण सेवा की एक प्रमुख उपलब्धि है। केंद्रीय अनुश्रवण सेवा विदेशी प्रसारणों की प्रवृत्तियों और कश्मीर के बारे में विशेष साप्ताहिक विवेचनात्मक रिपोर्ट भी तैयार करता है। इस रिपोर्ट से समग्र रूप में यह पता चल जाता है कि भारत के बारे में विश्व का दृष्टिकोण क्या है। नीतियों और कार्यक्रमों के निर्माण में यह उपयोगी भूमिका निभाता है।

2.5.3 नई दिल्ली स्थित केंद्रीय अनुश्रवण सेवा की दो क्षेत्रीय इकाइयां जम्मू और कलकत्ता में टेलीविजन प्रसारणों की मानीटरिंग के लिए है।

संगीत

2.6.1 आकाशवाणी का प्रमुख मनोरंजन माध्यम संगीत है। आकाशवाणी के कुल प्रसारण समय का 39.2 प्रतिशत संगीत होता है। शास्त्रीय हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के अलावा, आकाशवाणी से क्षेत्रीय, लोक,सुगम, फिल्म तथा पश्चिमी संगीत प्रसारित होता है। इस वर्ष संगीत के राष्ट्रीय कार्यक्रम में, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित संगीतकारों ने भाग लिया। तिरुवैयूर से त्यागराज आराधना संगीत उत्सव का प्रसारण किया गया।

2.6.2 इस वर्ष प्रसारित आकाशवाणी संगीत सम्मेलन, 1995 में हिंदुस्तानी संगीत के पंडित जसराज (गायन), शिव कुमार शर्मा (संतूर), सियाराम तिवारी (ध्रुपद/धमार), एस.के. बक्रे (गायन), भजन सोपोरी (संतूर), सिंह बंधु (गायन) और जगदीश प्रसाद पंडित (गायन) तथा डा. शेख चिन्ना मौलाना (नागस्वरम), आर. वेदावल्ली (गायन), नगाइ मुरलीधरन (वायलिन), कराइकुडी आर. मणि तथा उनके साथी (लय विन्यासम), आर.आर. केशवमूर्ति (वायलिन),पी. उन्नीकृष्णन (गायन) और ओ.एस. त्यागराजन (गायन) जैसे प्रख्यात कलाकारों ने भाग लिया।

2.6.3 समूहगान एकक राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाने के लिए विभिन्न केंद्रों से विविध भाषाओं में समूह गान कार्यक्रम आयोजित तथा समन्वित करता है। राष्ट्रीय वृंदगान की संगीत रचनाएं भी आकाशवाणी के केंद्रों से नियमित रूप से प्रसारित होती हैं।

खेल-कूद

2.7.1 विभिन्न खेलों की प्रतियोगिताओं की नियमित जानकारी देने के लिए आकाशवाणी से हिंदी और अंग्रेजी में प्रतिदिन पांच–पांच मिनट के खेल बुलेटिन प्रसारित होते हैं। सप्ताह में एक दिन अंग्रेजी में दस मिनट की स्पोर्ट्स न्यूज़रील

और महीने में एक बार हिंदी और अंग्रेजी में खेल पत्रिका कार्यक्रम प्रसारित होते हैं।

2.7.2 ओलंपिक, एशियाई खेल, दक्षिण एशियाई परिसंघ खेल, विश्व कप हाकी जैसे अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय खेल स्पर्धाओं को कवरेज देने के अलावा आकाशवाणी ने खो–खो, कबड्डी आदि जैसे परंपरागत खेलों को भी प्रोत्साहित किया। इन खेलों का सीधा प्रसारण किया गया ताकि ये देश के युवाओं में लोकप्रिय हो सकें और इनके खिलाड़ियों का मनोबल ऊंचा उठ सके। इस वर्ष की कवरेज का मुख्य आकर्षण 'विल्स वर्ल्ड कप क्रिकेट प्रतियोगिता' था जिसे आकाशवाणी ने व्यापक कवरेज दी।

ध्वनि अभिलेखागार की सामग्री जारी करना

2.8.1 वर्ष 1995-96 के दौरान अनेक प्रमुख संगीतकारों की ध्वनि अभिलेखीय संग्रह की रिकार्डिंग एच.एम.वी., आई. एन.आर.ई.सी.ओ. और टी–सीरिज को जारी की गईं। इनमें स्वर्गीय पंडित चिन्मय लाहिड़ी (गायन), पंडित निखिल बनर्जी (सितार), बी.जी. जोग (वायलिन), श्रीमती गिरिजा देवी (गायन), बिस्मिल्ला खां और पार्टी (शहनाई), डा. बालामुरली कृष्णा (कर्नाटक गायन) तथा बेगम अख्तर (गायन) की रिकार्डिंग शामिल थीं। व्यावसायिक कंपनियों को 38 घंटे की डबिंग दी गई जिससे आकाशवाणी को रॉयल्टी के रूप में 2,16,000 रुपए मिले।

ध्वनि-प्रतिलिपि तथा कार्यक्रम विनिमय सेवा

2.9.1 ध्वनि–प्रतिलिपि (ट्रांस्क्रिप्शन) विनिमय सेवा के अंतर्गत ध्वनि अभिलेखागार, कार्यक्रम आदान–प्रदान लाइब्रेरी, ट्रांसक्रिप्शन इकाई, केंद्रीय टेप बैंक, विदेश कार्यक्रम लाइब्रेरी, और उपग्रह ट्रांसमिशन शामिल हैं। ध्वनि अभिलेखागार में वर्तमान तथा भूतपूर्व राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों तथा अन्य प्रमुख व्यक्तियों के भाषण सुरक्षित हैं। रेडियो आत्मकथाओं के लिए इस वर्ष विविध क्षेत्रों के 14 व्यक्तियों का चयन किया गया। कार्यक्रम आदान–प्रदान इकाई की लाइब्रेरी में भाषणों आदि की रिकार्डिंग, संगीत फीचर, भारतीय शास्त्रीय संगीत और लोकसंगीत की करीब 6800 टेप हैं। ध्वनि–प्रतिलिपि इकाई प्रधानमंत्रियों और राष्ट्रपतियों के भाषणों की ध्वनि–प्रतिलिपि के रिकार्ड तैयार करती है। इसने अप्रैल से अब तक राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के भाषणों की 135 ध्वनि–प्रतिलिपियां और रिकार्डिंग प्राप्त कीं। सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत ध्वनि–प्रतिलिपि तथा कार्यक्रम विनियम सेवा ने अप्रैल 1995 से संयुक्त राष्ट्र से 136, आस्ट्रेलिया से 59, वॉयस ऑफ अमेरिका से 55, जर्मनी से 105, फ्रांस से 3 और दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन के सदस्य देशों से 9 कार्यक्रम प्राप्त किए। इसे ज्यादा समृद्ध बनाने के लिए लोकसंगीत और जनजातीय संगीत अनुभाग शुरू किया गया।

2.9.2 आकाशवाणी केंद्रों में वितरण के लिए एक द्विमासिक बुलेटिन 'विनिमय' नियमति रूप से प्रसारित होता है।

व्याख्यान मालाएं तथा संबद्ध कार्यक्रम (स्पोकन वर्ड)

2.10.1 इस वर्ष पटेल स्मृति व्याख्यान राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री रंगनाथ मिश्र ने 13 अक्तूबर 1995 को दिया। इसका विषय था, 'आज हम सरदार पटेल को क्यों याद करते हैं?' 1995 का डा. राजेन्द्र प्रसाद स्मृति व्याख्यान गांधीवादी और सामाजिक कार्यकर्त्ता सुश्री निर्मला देशपांडे ने 1 दिसंबर, 1995 को दिया। विषय था–'सर्वधर्म समभाव'।

2.10.2 गणतंत्र दिवस की पूर्वसंध्या पर आकाशवाणी द्वारा 'सर्व भाषा कवि सम्मेलन' आयोजित किया जाता है।

नाटक

2.11.1 आकाशवाणी के करीब 80 केंद्र विभिन्न भाषओं में नाटक प्रसारित करते हैं। ये नाटक सांप्रदायिक सद्भाव, बेरोजगारी, निरक्षरता, पर्यावरण प्रदूषण जैसे सामाजिक–आर्थिक विषयों पर होते हैं। इस वर्ष आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष हास्य–व्यंग्य का कार्यक्रम 'हास्य तरंग' तथा नाटक–कार्यक्रम 'नाट्य संध्या' प्रस्तुत किया गया। रेडियो के नाटकों में नयापन लाने के लिए इस वर्ष 19 प्रमुख भाषाओं में रेडिओ नाटककारों की प्रतियोगिता आयोजित की गई। नाटक निर्माण के बारे में एक कार्यशाला आकाशवाणी के कटक केंद्र ने अप्रैल 1995 में आयोजित की।

श्रोता अनुसंधान एकांश

2.12.1 आकाशवाणी के श्रोता अनुसंधान एकांश ने एक संकलन प्रकाशित किया–ऑल इंडिया रेडिओ, 1995 (तथ्य

तथा आंकड़े)। श्रोता अनुसंधान एकांश ने 1995-96 में निम्न कार्य सम्पन्न किए–(i) पांच स्थानों–नलगौंडा (आंध्र प्रदेश), चित्रदुर्ग (कर्नाटक), हमीरपुर (उत्तर प्रदेश), रायगढ़ (मध्य प्रदेश) और गुमला (बिहार) में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के बारे में विभिन्न जनसंचार माध्यमों के प्रचार अभियान का सर्वेक्षण (ii) आकाशवाणी के शिलांग केंद्र से इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रसारणों का सर्वेक्षण (iii) बंगलौर, बारीपाड़ा, नजीबाबाद और कर्सियांग कार्यक्रमों के सुने जाने के बारे में सामान्य सर्वेक्षण।

केंद्रीय फीचर एकांश (हिंदी)

2.13.1 केंद्रीय फीचर एकांश (हिंदी) राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न विषयों पर फीचर प्रसारित करता है। ये फीचर क्षेत्रीय भाषाओं में भी प्रसारित किए जाते हैं। अप्रैल से दिसंबर 1995 तक हिंदी में 22 फीचर प्रसारित किए गए। इनके विषय थे–एड्स, ड्रग्स, मुंह का कैंसर, लोक अदालत, पंचायती राज और महिला पंच, सामाजिक न्याय, इंदिरा विकास योजना, मानव अधिकार और बाल मजदूरी तथा महात्मा गांधी की 125वीं जयंती आदि। इसके अलावा, कश्मीर में चरार–ए–शरीफ अग्निकांड पर 'अमन के साए में बारुद की सुरंगें', और 'सिसकते चिनार' फीचर प्रसारित किए गए। सरकार की रोजगार योजनाओं की जानकारी देने के लिए 'चौराहे पर खड़ा युवा' फीचर प्रसारित किया गया।

कृषि तथा घर

2.14.1 कृषि तथा घर से जुड़े कार्यक्रम रोजाना ग्रामीण श्रोताओं के लिए प्रसारित किए जाते हैं। जो खेती–बाड़ी के तरीकों, मौसम की जानकारी, ग्रामीण विकास योजनाओं, महिला तथा बाल विकास आदि पर आधारित होते हैं। ग्रामीण कार्यक्रमों में पर्यावरण संरक्षण योजनाओं, महिला समृद्धि योजना, राष्ट्रीय सामाजिक सहायता योजना, ग्रामीण विकास कार्यक्रमों तथा समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम, जवाहर रोजगार योजना, डी.डब्ल्यू.सी.आर.ए. आदि योजनाओं के बारे में विभिन्न संचार माध्यमों के संयुक्त प्रचार अभियान, पंचायती राज, जलविभाजक प्रबंध आदि पर ग्रामीण कार्यक्रमों में पूरा ध्यान दिया जाता है।

परिवार कल्याण

2.15.1 आकाशवाणी के प्रायः सभी केंद्रों से सभी भाषाओं/बोलियों में प्रतिमाह 9000 से ज्यादा कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। बालिका शिशु का महत्त्व, पल्स पोलियो, रोग–प्रतिरक्षण, बच्चों के अधिकार तथा गर्भवती महिलाओं तथा बच्चों की देखभाल पर विशेष जोर दिया। केंद्रों ने एड्स के बारे में जागरूकता पैदा करने के कार्यक्रम भी प्रसारित किए।

2.15.2 पल्स पोलियो प्रतिरक्षा अभियान सरकार ने शुरू किया। 9 दिसंबर, 1995 और 20 जनवरी, 1996 को पल्स पोलियो प्रतिरक्षा दिवस मनाए जाने को रेडियो ने काफी समर्थन दिया। पल्स पोलियो प्रतिरक्षा अभियान मीडिया द्वारा आयोजित सबसे सफल अभियानों में एक था। आकाशवाणी ने इस अभियान को व्यापक संचार समर्थन दिया जिनमें शामिल थे–

(i) अनेक कार्यक्रमों खासतौर महिलाओं और ग्रामीण लोगों को संबोधित कार्यक्रमों में रेडियो स्पॉट, घोषणा और सूचना के तौर पर लगातार प्रचार।

(ii) इस प्रतिरक्षा अभियान के समर्थन में चिकित्सा अधिकारियों, चिकित्सकों, जनमत बनाने वाले नेताओं के साक्षात्कार और संदेश तथा वार्ता/विचार–विमर्श/संवाद के कार्यक्रम प्रसारित किए गए जिनमें यह स्पष्ट किया गया कि पोलियो की खुराक सुरक्षित है और यह बीमार बच्चों तक को दी जा सकती है। इस प्रतिरक्षा से पोलियो कीटाणु को समाप्त करने में मदद मिलेगी।

(iii) स्थानीय अधिकारियों के सहयोग से इस बात का व्यापक प्रचार किया गया कि प्रतिरक्षा के लिए सुविधाएं किन–किन स्थानों पर उपलब्ध कराई गई हैं।

2.15.3 भीतरी और दूरदराज के क्षेत्रों के लिए विशेष सावधानी बरती गई।

विशेष कार्यक्रम

2.16.1 वर्ष 1995-96 में महात्मा गांधी के 125वें जयंती वर्ष में अनेक कार्यक्रम प्रसारित किए गए। यूनेस्को द्वारा पेरिस में आयोजित प्रधानमंत्री के गांधी स्मृति व्याख्यान का 12 जून 1995 को सीधा प्रसारण किया गया। दिल्ली में दो दिन के पंचायत अध्यक्षों के सम्मेलन की प्रधानमंत्री ने अध्यक्षता की। 10 अक्तूबर 1995 को इसका सीधा प्रसारण किया गया। 24 अक्तूबर 1995 को सूर्य ग्रहण का दिल्ली, नीम का थाना, भिंड

आकाशवाणी उद्‌घोषक आगंतुक से बात करते हुए

और इलाहाबाद से 'खग्रास–95', रेडियो ब्रिज कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया गया। संयुक्त राष्ट्र स्वर्ण जयंती के अवसर पर महासभा के विशेष अधिवेश में 25 अक्तूबर 1995 को प्रधानमंत्री के भाषण का भी प्रसारण किया गया। 2 मई 1995 को दिल्ली में हुए 'सार्क' देशों के शिखर सम्मेलन के उद्‌घाटन सत्र का भी सीधा प्रसारण किया गया। 22 से 24 जुलाई 1995 तक दिल्ली में हुई सार्क सांसद सम्मेलन के अध्यक्षों के संघ की पहली बैठक की भी पर्याप्त कवरेज की गई।

2.16.2 इस वर्ष आचार्य विनोबा भावे और श्री मोरारजी देसाई के जन्मशताब्दी के सिलसिले में आकाशवाणी ने अनेक कार्यक्रम प्रसारित किए। सिनेमा के शताब्दी वर्ष के सिलसिले में भी कई कार्यक्रम प्रसारित किए गए। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जन्मशताब्दी के लिए भी अनेक कार्यक्रमों की योजना बनाई गई।

2.16.3 वर्ष 1995-96 में विभिन्न क्षेत्रों के केन्द्र निदेशकों के छह सम्मेलन हुए। इनमें अन्य मुद्दों के अलावा आकाशवाणी के केंद्रों के लिए ज्यादा राजस्व जुटाने की संभावनाओं, एफ एम प्रसारण की शुरूआत तथा इसके पूर्ण उपयोग पर मुख्य रूप से विचार किया गया।

2.16.4 दिल्ली, कलकत्ता, मुंबई और मद्रास केंद्रों में एफ एम स्लॉट्स के लिए निविदाएं आमंत्रित की गई हैं। सबसे ज्यादा राशि की बोली लगाने वालों को स्लॉट प्रदान किए जाएंगे।

विज्ञापन प्रसारण सेवा

2.17.1 लोकप्रिय विविध भारती सेवा प्रतिदिन 14 घंटे से अधिक समय तक मनोरंजक कार्यक्रम प्रसारित करती हैं। मुंबई, मद्रास, दिल्ली और गुवाहाटी के शॉर्टवेव ट्रांसमीटरों सहित इसके कार्यक्रम 35 केंद्रों से प्रसारित होते हैं। विविध भारती विभिन्न केंद्रों से व्यावसायिक विज्ञापनों के जरिए राजस्व एकत्र करने वाली आकाशवाणी की मुख्य सेवा है। 1995-96 में विविध भारती सेवा तथा प्राइमरी चैनलों ने कुल 80.97 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया। आकाशवाणी द्वारा 1975-76 से 1995-96 तक विज्ञापनों से अर्जित राजस्व सारणी में दिया गया है।

2.17.2 आकाशवाणी में विज्ञापनों के समय की बिक्री को व्यापक रूप में लिया गया। 1995-96 में पहली बार विज्ञापनों से 80 करोड़ रुपए के सकल राजस्व का लक्ष्य रखा गया।

विविध भारती और प्राइमरी चैनलों से प्रसारित विज्ञापनों द्वारा अर्जित राजस्व

(रुपयों में)

वर्ष	विविध भारती	सकल अर्जित राजस्व–प्राइमरी चैनल		
		चरण I	चरण-II	कुल
1975-76	6,25,87,679	—	—	6,25,87,679
1976-77	6,85,54,222	—	—	6,85,54,222
1977-78	7,82,06,252	—	—	7,82,06,252
1978-79	8,90,75,436	—	—	8,90,75,436
1979-80	10,31,43,702	—		10,31,43,702
1980-81	12,51,32,824	—	—	12,51,32,824
1981-82	15,23,44,716	—	—	15,23,44,716
1982-83	15,39,89,422	72,64,000	—	16,12,53,422
1983-84	16,00,34,250	42,30,500	—	16,42,64,750
1984-85	15,93,58,046	66,78,500	—	16,60,31,546
1985-86	17,54,89,035	50,06,275	2,13,84,761	20,22,80,071
1986-87	17,71,77,765	1,06,68,575	5,20,92,195	23,99,38,535
1987-88	19,26,24,082	88,13,025	8,51,64,751	28,66,01,858
1988-89	21,99,92,445	84,81,675	9,60,45,546	32,45,20,666
1989-90	23,72,28,116	68,02,372	10,59,36,265	35,06,55,753
1990-91	25,25,09,742	64,71,500	13,40,37,024	39,30,18,255
1991-92	34,89,00,000	83,62,000	17,00,68,000	52,73,00,000
1992-93	37,66,00,000	1,38,00,000	19,87,00,000	58,91,00,000
1993-94	36,96,00,000	1,93,00,000	25,46,00,000	64,35,00,000
1994-95	35,44,00,000	58,00,000	28,37,00,000	84,32,00,000
1995-96	37,32,30,000	1,45,48,000	42,19,79,000	80,97,57,000

दस और प्राइमरी चैनल केंद्रों और सभी स्थानीय केंद्रों से विज्ञापनों का प्रसारण शुरू किया गया। रेडियो संगीत सम्मेलन, भारत–न्यूजीलैंड क्रिकेट मैच, विल्स वर्ल्ड कप जैसे कार्यक्रमों के दौरान विज्ञापनों का प्रसारण शुरू किया गया। प्राइमरी चैनल पर फिल्म संगीत पर आधारित प्रायोजित कार्यक्रम और स्थानीय केंद्रों से गाइड कॉमर्शियल्स की भी अनुमति दी गई। रेडियो विज्ञापनों की बुकिंग के लिए एजेंसियों को ज्यादा प्रोत्साहन दिए गए।

2.17.3 निदेशालय और केंद्रीय विज्ञापन प्रसारण सेवा के प्रमुखों की समीक्षा बैठकों में स्थिति का निरंतर जायजा लिया गया। निरंतर प्रयासों के परिणामस्वरूप नवंबर 1995 तक रेडियो विज्ञापनों से 53.5 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ। इसमें करीब 8 करोड़ रुपये की वह राशि शामिल नहीं है जो एफ एम लाइसेंसों और आर डी एस रेडियो पेजिंग

से प्राप्त होगी।

आकाशवाणी वार्षिक पुरस्कार

2.18.1 विभिन्न विधाओं और विषयों के उत्कृष्ट प्रसारणों के लिए हर वर्ष आकाशवाणी वार्षिक पुरस्कार दिए जाते हैं। इनमें नाटक, डाक्यूमेण्टरी, संगीत, कल्पनाशीलता से परिपूर्ण नए कार्यक्रम, सर्वश्रेष्ठ कृषि और घर कार्यक्रम, परिवार कल्याण कार्यक्रम और युववाणी शामिल हैं। राष्ट्रीय एकता के श्रेष्ठ कार्यक्रम के लिए 'लास्सा कौल पुरस्कार' तथा उत्कृष्ट समाचार रिपोर्टिंग के लिए भी पुरस्कार दिए जाते हैं। विशिष्ट विषयों की डाक्यूमेण्टरी के लिए भी पुरस्कार का प्रावधान है। इस वर्ष का विषय था - 'सहिष्णुता'। विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों पर बच्चों के सहगान की प्रतियोगिता आयोजित की जाती है और सर्वश्रेष्ठ सहगान समूह (वरिष्ठ और कनिष्ठ वर्ग) के लिए राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार दिया जाता है। इस वर्ष (1995) से श्रोता अनुसंधान सर्वेक्षण/रिपोर्टों के लिए पुरस्कार शुरू किया गया है। सर्वश्रेष्ठ विज्ञापन प्रसारण सेवा केंद्र तथा अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने के लिए तकनीकी उत्कृष्टता पुरस्कार भी दिया जाता है। सर्वश्रेष्ठ तरीके से स्थापित और रख-रखाव वाले केंद्र को भी पुरस्कार दिया जाता है। आकाशवाणी पुरस्कार योजना में प्रतिभाशाली कार्यक्रम निर्माताओं/प्रसारणकर्मियों को इन प्रतियोगिताओं में रचनात्मक प्रयासों के लिए सम्मानित किया जाता है।

अनुसंधान विभाग

2.19.1 आकाशवाणी और दूरदर्शन का अनुसंधान विभाग रेडियो और टेलीविजन में आधुनिकतम टेक्नोलॉजी लाने के लिए अनुसंधान तथा विकास की गतिविधियों में लगा रहता है। अनुसंधान विभाग की प्रमुख उपलब्धियां इस प्रकार हैं : (I) 16 प्रमुख नगरों में एफ एम-आर डी एस पेजिंग का प्रारंभ (II) डिजिटल ऑडियो ब्रॉडकास्टिंग, जिसमें 12 मोनो कार्यक्रम अथवा 6 स्टीरियो कार्यक्रम, एक डी ए बी चैनल पर होते हैं, विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में अनेक कार्यक्रम प्रसारित किए जा सकते हैं और यह सेवा उपग्रह के जरिए अथवा सामान्य टेरोस्ट्रियल प्रसारण से सभी केंद्रों को एक साथ उपलब्ध कराई जा सकती है। (III) मॉनिटरिंग के लिए ऑटोमेटिक रेडियो रिसेप्शन एंड लागिंग प्रणाली विकसित की गई तथा इंटरनेशनल रिसीविंग एंड मॉनिटरिंग स्टेशन, नई दिल्ली में लगाई गई। (IV) एशिया-पैसिफिक ब्रॉडकास्टिंग यूनियन के तत्वावधान में साफ्टवेयर पेकेज 'प्लेटिनम' का विकास, इससे वी एच एफ/यू एच एफ बैंड में प्रसारण सेवा की पूर्ण नेटवर्क प्लानिंग हो सकेगी और विश्वभर के प्रसारणकर्ता इसका उपयोग कर सकते हैं। (V) किसी भी प्रसारण स्टूडियो के किफायती और आवाज के सही प्रसारण वाले कुशल डिजाइन के लिए कंप्यूटर एडेड डिजाइन का इस्तेमाल करते हुए साफ्टवेयर का विकास। (VI) ट्रांसमीटर में मॉड्युलेशंस की कारगर निगरानी के लिए एक सरल सिस्टम विकसित किया गया है इसमें कम कीमत की इंटरफेस यूनिट साधारण रेडियो रिसीवर में लगा दिया जाता है तथा पी.सी. में एक इनपुट/आउटपुट कार्ड लगा दिया जाता है। (VII) आपसी संपर्क कर सकने वाले इंटर एक्टिव रेडियो के लिए वॉयसकास्ट यूनिट का विकास जो कार्यक्रम में भाग लेने वालों/श्रोताओं और प्रसारण स्टूडियो के बीच संपर्क जोड़ सके। (VIII) पुरानी ऑडियो रिकार्डिंग्स से शोर हटाने के लिए 'डिनौइजर' प्रणाली का विकास (IX) कार्यक्रमों के वितरण में बाधा पहुंचाए बिना वर्तमान उपग्रह आर एन सिस्टम का उपयोग करते हुए 38 किलो हर्टज़ सब कैरियर पर ध्वनि/आंकड़ों के ट्रांसमिशन के लिए एक सहायक चैनल बनाना (X) उपग्रह और केबल नेटवर्क के जरिए स्काई रेडियो सेवा का विकास, जिससे देश के किसी भी भाग में श्रोताओं को 20 क्षेत्रीय भाषाओं के रेडियो कार्यक्रमों में से किसी भी कार्यक्रम को सुन पाने की सुविधा मिल सके।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

2.20.1 सांस्कृतिक आदान-प्रदान समझौते के अंतर्गत फरवरी 1995 में राष्ट्रीय स्तर पर 'सार्क क्विज़' आयोजित किया गया। दो विद्यार्थियों का भारतीय दल फाइनल में भाग लेने ढाका भेजा गया। आकाशवाणी ने राष्ट्रमंडल संगीत, मंच, गुआंगदोंग इंटरनेशनल, शंघाई संगीत समारोह और प्रिक्सस इटालिया में हिस्सा लिया। ड्यूश वेलके सहयोग से दो कार्यशालाएं भी आयोजित की गईं।

जन संपर्क

2.21.1 आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की पूर्व सूचना राष्ट्रीय समाचारपत्रों में प्रकाशित की जाती हैं तथा

रेडियो से भी निरंतर कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी जाती हैं ताकि श्रोताओं को पहले से यह जानकारी रहे। 1995-96 से आकाशवाणी संगीत तथा अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए समग्र (कंसोलिडेटेड)विज्ञापन देने शुरू कर दिए।

2.21.2 आकाशवाणी द्वारा समय–समय पर श्रोताओं से घनिष्ट संपर्क बनाए रखने के लिए आमंत्रित श्रोताओं के सामने कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। 1995-96 में आयोजित ऐसे कार्यक्रमों में आकाशवाणी संगीत सम्मेलन, नाट्य संध्या, पटेल स्मृति व्याख्यान, राजेन्द्र प्रसाद स्मृति व्याख्यान, आकाशवाणी वार्षिक पुरस्कार, हास्य तरंग और सुगम संगीत कार्यक्रम शामिल हैं। आकाशवाणी ने 24 से 28 अक्तूबर 1995 तक नई दिल्ली के प्रगति मैदान में ब्राडकास्टिंग केबल सैटेलाइट इंडिया, 1995 प्रदर्शनी में हिस्सा लिया। आकाशवाणी ने 'ए मीट फॉर फेवरिट एफ एम प्रेजेंटर' भी आयोजित की।

कर्मचारी प्रशिक्षण

2.22.1 आकाशवाणी का स्टाफ ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (प्रोग्राम) प्रशासनिक स्टाफ सहित प्रोग्राम स्टाफ के विभिन्न काडर के कर्मचारियों को सेवाकालीन प्रशिक्षण देता है। इसके अलावा, क्षेत्रीय आकाशवाणी केंद्रों के कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए लखनऊ, तिरुअनंतपुरम, कटक, हैदराबाद, शिलांग और अहमदाबाद में क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र हैं। अप्रैल 1995 से संस्थान से 17 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जिनमें 309 कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया। सभी छह क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्रों ने भी नियमित आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए।

2.22.2 आकाशवाणी का स्टाफ ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (टेक्नीकल) आकाशवाणी और दूरदर्शन के तकनीकी स्टाफ की प्रशिक्षण संबंधी जरूरतें पूरी करता है। 1995-96 में संस्थान ने 98 पाठ्यक्रम आयोजित किए जिनके तहत आकाशवाणी और दूरदर्शन के 1438 तकनीकी कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण संस्थानों को आधुनिक प्रसारण तकनीकों के अनुरूप बनाने की संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की परियोजना पूरी की जा चुकी है। भुवनेश्वर में एक और प्रशिक्षण संस्थान बनाया जा रहा है।

शैक्षिक कार्यक्रम

2.23.1 आकाशवाणी के दिल्ली केंद्र की एफ एम सेवा से 24 घंटे प्रसारण 14 फरवरी 1995 से शुरू हुआ। इसके बाद मुंबई, कलकत्ता और मद्रास से ऐसा प्रसारण प्रारंभ हुआ।

2.23.2 अप्रैल 1995 से राष्ट्रीय पत्रिका 'रेडिओस्कोप' का प्रसारण प्रारंभ हुआ। देशभर से इसके लिए सामग्री प्राप्त होती है और श्रोताओं में यह बड़ा लोकप्रिय कार्यक्रम है। श्रोता नियमति रूप से अपनी प्रतिक्रिया भेजते हैं और सर्वोत्तम प्रतिक्रिया भेजने वालों को भारत सरकार की राष्ट्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी परिषद के संगठन विज्ञान प्रसार द्वारा पुरस्कृत किया जाता है।

2.23.3 'दहलीज' किशोरों के मुद्दों पर धारावाहिक सोप–ओपेरा है और इस वर्ष सात राज्यों से क्षेत्रीय भाषाओं में इसका प्रसारण शुरू हुआ।

2.23.4 बेहतर जिंदगी के बारे में 'तिनका तिनका सुख' धारावाहक जल्दी ही शुरू होगा। यह प्राइमरी चैनल का पूरे वर्ष तक प्रसारण के दौरान प्रायोजित होने वाला, आकाशवाणी के ही कर्मचारियों द्वारा तैयार पहला विकासमूलक कार्यक्रम है।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम परियोजना

2.24.1 नई दिल्ली के आकाशवाणी भवन का ध्वनि अभिलेखागार में कार्यक्रमों के आडियो सिग्नल रिफर्बिशिंग और ऑप्टिकल स्टोरेज के लिए आधुनिकतम तकनीकी सुविधाएं उपलब्ध हैं ताकि अभिलेखीय सामग्री की गुणवत्ता में सुधार आए और लंबे समय तक उसे सुरक्षित रखा जा सके। मई 1992 से मई 1995 तक संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.) की सहायता से चलाई गई परियोजना के अंतर्गत निम्न सुविधाएं उपलबध कराई गई :

ऑडियो सिगनल रिफर्बिशिंग लैब्स	2
ऑप्टिकल डिस्क ट्रांसफर/रिकार्डिंग लैब्स	1

2.24.2 आई.टी.यू. फैलोशिप के अंतर्गत विदेशों में प्रशिक्षित कार्मिकों की मदद से अब आकाशवाणी के लिए यह संभव है कि पुरानी तथा खराब रिकार्डिंग को साफ किया जा सके और उन्हें ऑप्टिकल डिस्क मीडियम (कम्पेक्ट डिस्क

कोटा, राजस्थान में मीडियम वेव ट्रांसमीटर के शिलान्यास के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का दृश्य

रिकार्डेबल्स) पर ट्रांसफर किया जा सके।

आकाशवाणी की भावी योजनाएं

2.25.1 आकाशवाणी से प्रारंभ से ही सभी भाषाओं में विज्ञान कार्यक्रम प्रसारित होते रहे हैं। इस समय आकाशवाणी में 21 विज्ञान सेल हैं। जिन केंद्रों में विज्ञान सेल है, वहां से प्रतिदिन कम से कम दो विज्ञान कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। विज्ञान सेल निर्माण के प्रथम चरण में ऐजल और पोर्टब्लेयर में विज्ञान सेल (यूनिट्स) खोलने का प्रस्ताव है ताकि सुव्यवस्थित तरीके से वैज्ञानिक जानकारी दी जा सके।

2.25.2 आगामी वर्षों में, आकाशवाणी की योजनाएं है कि प्राथमिक कवरेज के विस्तार के साथ–साथ राज्यों की राजधानियों और अन्य बड़े शहरों के केंद्रों से एफ एम स्टीरियो चैनल शुरू किए जाएं। विभिन्न बोलियों वाले क्षेत्रों और दूर–दराज क्षेत्रों में सामुदायिक रेडियो केंद्र खोलने की योजना है। शुरुआत में यह योजना पिछड़े क्षेत्रों के 19 चुने गए स्टेशनों से शुरू की जा रही है। राज्यों की राजधानियों और अन्य प्रमुख सांस्कृतिक केंद्रों से टेलीलिंक सुविधाओं के विस्तार की भी योजना है। कुछ अन्य केंद्र से आर डी एस पेजिंग जैसी सेवाएं शुरू करने का भी प्रस्ताव है। आकाशवाणी ने रिफर्बिशिग के जरिए पुराने आडियो टेप और डिस्क से ध्वनि अभिलेखागार के महत्व की सामग्री प्राप्त करने के लिए प्रयोगशालाएं बनाने की महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। आकाशवाणी में ध्वनि अभिलेखीय सामग्री को बेहतर बनाने तथा इन सुविधाओं का व्यावसायिक लाभ उठाने के लिए भी योजनाएं हैं।

2.25.3 कृत्रिम उपग्रहों के इस्तेमाल और शॉर्टवेव के ज्यादा सुपर पावर ट्रांसमीटर लगाकर विदेश प्रसारण नेटवर्क को मजबूत बनाने की योजनाएं हैं।

2.25.4 विदेश प्रसारण सेवा/समाचार सेवा प्रभाग के स्टूडियो की परियोजना केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने मंजूर कर ली है और इस पर काम शुरू हो गया है। इस परियोजना के अंतर्गत अच्छे प्रसारण के लिए अतिआधुनिक स्टूडियो बनाए जाएंगे। इसके अलावा, आकाशवाणी के इस समय जो स्टूडियो हैं, उनमें सी डी प्लेयर, डिजिटल ऑडियो टैकनीक तथा स्वचालित प्रणालियां शुरू करने की योजना है।

3
दूरदर्शन

नेटवर्क

3.1.1 समय के साथ–साथ दूरदर्शन का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है और विकास की इस प्रक्रिया में यह दुनिया के सबसे प्रमुख प्रसारण नेटवर्क के रूप में उभर कर सामने आया है। इस समय दूरदर्शन के उन्नीस चैनलों (डीडी–1 से 19) से कार्यक्रमों का प्रसारण होता है। इसके नेटवर्क में403 कार्यक्रम निर्माण केन्द्र और अलग–अलग क्षमता के 792 प्रसारण केन्द्र शामिल हैं। अनुमान है कि इसके कार्यक्रम देश के 68.4 प्रतिशत क्षेत्र में रहने वाले करीब 85.8 प्रतिशत लोगों द्वारा देखे जा सकते हैं।

3.1.2 दूरदर्शन के डीडी 1–2 और डीडी–19 चैनलों को छोड़कर बाकी चैनलों के कार्यक्रम इनसैट उपग्रह के माध्यम से प्रसारित किए जाते हैं। (इस समय इनसैट दो–ए और दो–बी उपग्रह कार्य कर रहे हैं।) उपग्रह से प्रसारण के लिए देश के विभिन्न दूरदर्शन केन्द्रों में अपलिंक, यानी उपग्रह–संपर्क की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। मूवी क्लब और अंतर्राष्ट्रीय चैनल के कार्यक्रम पी ए एस–4 उपग्रह के जरिए प्रसारित किए जाते हैं।

3.1.3 31 मार्च 1996 से मुख्य चैनल डीडी–एक के कार्यक्रम विभिन्न क्षमता वाले 743 ट्रान्समीटरों से रिले किए जा रहे हैं। इनका विवरण इस प्रकार है:

(अ) उच्चशक्ति ट्रान्समीटर (10 किलोवाट/1किलोवाट)77

(ब) निम्नशक्ति ट्रान्समीटर (300 वाट/100 वाट)520

(स) अत्यंत अल्पशक्ति ट्रान्समीटर/ट्रान्सपोंडर 140

केन्द्रीय कार्यक्रम निर्माण केन्द्र, नई दिल्ली

डीडी–दो चैनल के कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए बड़े शहरों में 6 उच्चशक्ति ट्रान्समीटरों सहित 42 ट्रान्समीटर काम कर रहे हैं। इसके अलावा दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता और मद्रास महानगरों में डीडी–तीन के कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए उच्चशक्ति ट्रान्समीटर कार्य कर रहे हैं।

3.1.4 31 मार्च 1996 को देश के विभिन्न भागों में 40

वर्ष 1995-96 के दौरान शुरू की गई दूरदर्शन परियोजनाएं

क्रम संख्या	राज्य		परियोजना
1.	आंध्र प्रदेश	एल. पी. टी. :	कोसगी; एच. पी. टी.–नांदयाल, एल.पी.टी.; कोमारेड्डी नोरायनपेट
2.	बिहार	पी. जी. एफ :	डाल्टनगंज, एल.पी.टी.; उपटना डीडी–II
3.	दिल्ली	एच. पी. टी. :	दिल्ली (डीडी III)
4.	गुजरात	एल. पी. टी. :	देवगढ़ बरिया, इदर, श्यामलाजी
5.	हरियाणा	एल. पी. टी. :	मंडी डबवाली (डीडी II)
6.	हिमाचल प्रदेश	स्टूडियो :	शिमला
		वी. एल. पी. टी. :	जोगिन्दरनगर, बैजनाथ, पालमपुर, सरकाघाट, खड़ा पत्थर, थेनेदर, शिवबदेर, वीर
7.	जम्मू- कश्मीर	एच. पी. टी. :	लेह
		एल. पी. टी. :	लेह (डी डी II), कठुआ
		वी. एल. पी. टी. :	बुधल, कालाकोट, थानामंडी कुड, बटोट, अर्द्धक्वारी, उरी, बारामूला, टिथवाल
8.	कर्नाटक	एल. पी. टी. :	कुमता, हुंगोंड, भतकल
9.	केरल	एल. पी. टी. :	कोचीन (डी डी II), काननगढ़, कालीकट (डी डी II), चेंगन्नूर
10.	मध्य प्रदेश	पी. जी. एफ. :	रायपुर
		एल. पी. टी. :	अशोकनगर, मैहर, खुराई, सिरौंज, राघवगढ़
		वी. एल. पी. टी. :	पाखनजोर, बुधनी
11.	असम	एल. पी. टी. :	होजई, सोनारी, लुमडिंग, हलसिंहमोरी, मोरघेरेट्टा, तिनसुखिया
		वी.एल.पी.टी. :	डिब्रूगढ़
		एच. पी. टी. :	बघमारा
12.	मेघालय	एल. पी. टी. :	तुरा (डी डी II) शिलांग (डी डी II)
13.	नगालैंड	एल. पी. टी. :	कोहिमा (डी डी II)
14.	मणिपुर	एल. पी. टी. :	इंफाल (डी डी II)
15.	राजस्थान	एल. पी. टी. :	बंसी

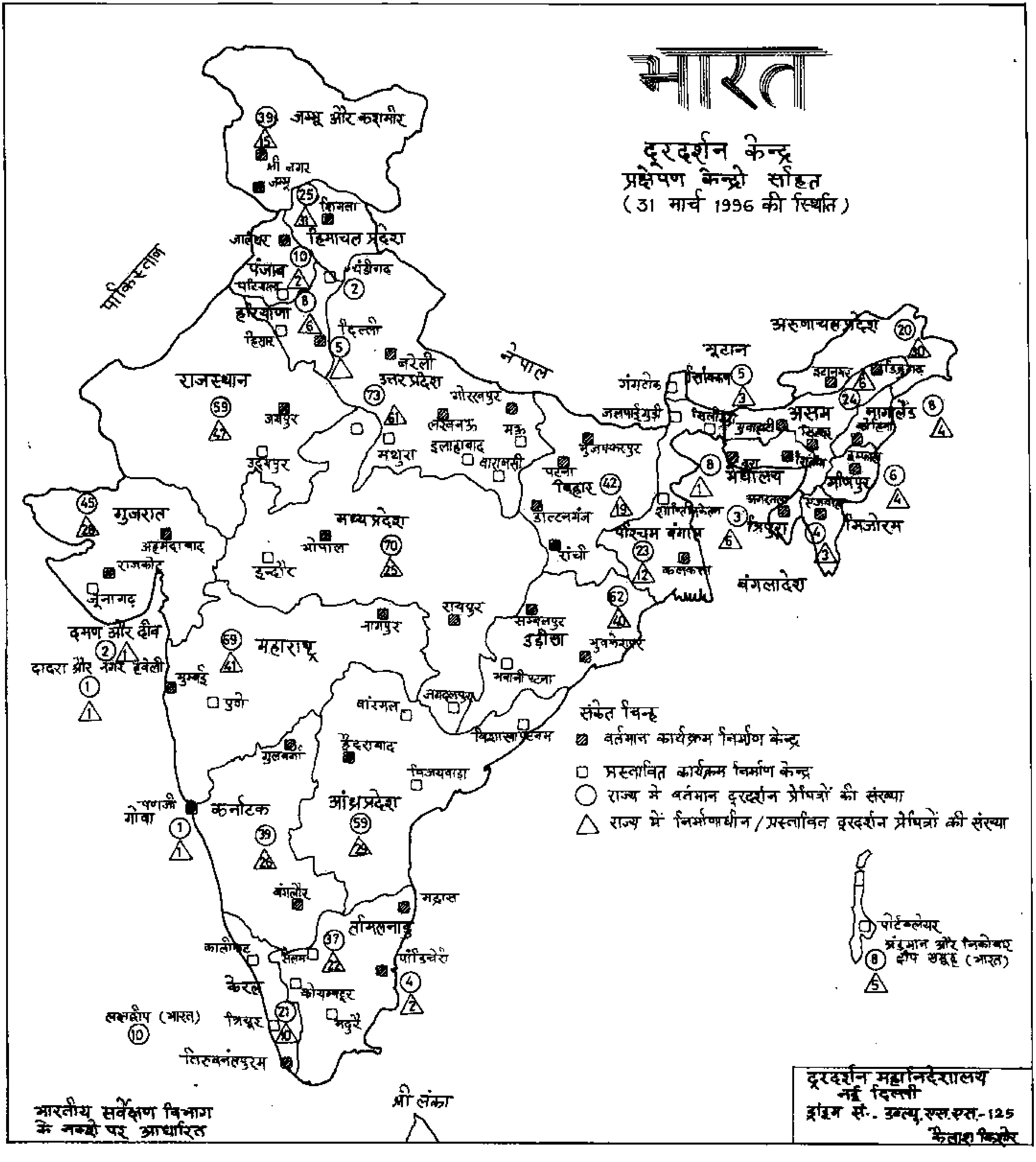

भारत
दूरदर्शन केन्द्र
प्रक्षेपण केन्द्रों सहित
(31 मार्च 1996 की स्थिति)
जम्मू और कश्मीर
हिमाचल प्रदेश
पंजाब
हरियाणा
दिल्ली
चंडीगढ़
उत्तर प्रदेश
राजस्थान
गुजरात
मध्य प्रदेश
महाराष्ट्र
बिहार
पश्चिम बंगाल
उड़ीसा
आंध्रप्रदेश
कर्नाटक
गोवा
केरल
तमिलनाडु
असम
मेघालय
नागालैंड
मणिपुर
मिजोरम
त्रिपुरा
अरुणाचल प्रदेश
दमण और दीव
दादरा और नगर हवेली
लक्षद्वीप (भारत)
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह (भारत)
पोर्टब्लेयर
पाकिस्तान
नेपाल
भूटान
बंगलादेश
श्री लंका
श्रीनगर
जम्मू
शिमला
जालंधर
पटियाला
हिसार
बरेली
लखनऊ
गोरखपुर
मऊ
मथुरा
इलाहाबाद
वाराणसी
जयपुर
उदयपुर
अहमदाबाद
राजकोट
जूनागढ़
भोपाल
इन्दौर
नागपुर
रायपुर
मुम्बई
पुणे
पटना
मुजफ्फरपुर
डाल्टनगंज
रांची
कलकत्ता
शांतिनिकेतन
जलपाईगुड़ी
गंगटोक
गुवाहाटी
शिलांग
कोहिमा
इम्फाल
डिब्रूगढ़
अगरतला
आइजवाल
सम्बलपुर
भुवनेश्वर
भवानीपटना
जगदलपुर
विशाखापट्टनम
वारंगल
हैदराबाद
गुलबर्गा
विजयवाड़ा
पणजी
बंगलौर
मद्रास
पांडिचेरी
सेलम
कालीकट
कोयम्बटूर
त्रिचूर
मदुरै
तिरुवनंतपुरम
संकेत चिन्ह
वर्तमान कार्यक्रम निर्माण केन्द्र
प्रस्तावित कार्यक्रम निर्माण केन्द्र
राज्य में वर्तमान दूरदर्शन प्रेषित्रों की संख्या
राज्य में निर्माणाधीन/प्रस्तावित दूरदर्शन प्रेषित्रों की संख्या
भारतीय सर्वेक्षण विभाग के नक्शे पर आधारित
दूरदर्शन महानिदेशालय
नई दिल्ली
कैलाश किशोर

16.	अरुणाचल प्रदेश	पी. जी. एफ. :	ईटानगर
17.	महाराष्ट्र	एच. पी. टी. :	मुंबई (डी डी III)
		एल. पी. टी. :	चिखली, मोहेक्कर, नागपुर (डी. डी. II,) ब्रह्मपुरी, अरवी, करंजा, देवरुख, राजापुर
18.	मिजोरम	स्टूडियो :	आइजोल
		एच. पी. टी. :	लुंगलेई
		एल. पी. टी. :	आइजोल (डी डी II)
19.	उड़ीसा	पी. जी. एफ. :	संबलपुर (अंतरिम)
		एल. पी. टी. :	नरसिंहपुर, दशरथपुर, केन्द्रपाड़ा, बोनई, तिरतोल, दुधारकोट (डी डी II), संबलपुर (डी डी II) ढेंकानाल (डी डी II)
		वी. एल. पी. टी. :	ललितगिरी (डी डी II), राउरकेला (डी डी II)
20.	त्रिपुरा	एल. पी. टी. :	अगरतला (डी डी II)
21.	पंजाब	एल. पी. टी. :	अबोहर
22.	तमिलनाडु	एच. पी. टी. :	मद्रास, (डी डी III) रामेश्वरम् (स्थायी व्यवस्था)
		एल. पी. टी. :	मार्तंडम, गुडियाथम, अरनी
23.	उत्तर प्रदेश	पी. जी. एफ. :	बरेली
		एल. पी. टी. :	लालगंज, कानपुर (डी डी II)
		एस. टी. आई. (टी):	लखनऊ
24.	पश्चिम बंगाल	स्टूडियो :	कलकत्ता (चैनल II)
		एच. पी. टी. :	कलकत्ता (डी डी III)
25.	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	पी. जी. एफ. :	पोर्ट ब्लेयर

पी. जी. एफ. : कार्यक्रम निर्माण सुविधा

एच. पी. टी. : उच्च शक्ति ट्रांसमीटर

एल. पी. टी. : अल्प शक्ति ट्रांसमीटर

वी. एल. पी. टी. : अत्यंत अल्प शक्ति ट्रांसमीटर

कार्यक्रम निर्माण केन्द्र काम कर रहे थे। इसके अलावा दिल्ली में केन्द्रीय कार्यक्रम निर्माण केन्द्र कार्य कर रहा है। इसमें दो बड़े स्टूडियो हैं, जो आधुनिक और परिष्कृत तकनीकी सुविधाओं से सुसज्जित हैं। कार्यक्रम निर्माण केन्द्र उच्चकोटि के कार्यक्रमों के निर्माण की सुविधाएं प्रदान करता है। गुवाहाटी में भी अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित कार्यक्रम निर्माण केन्द्र है जहां देश के पूर्वोत्तर राज्यों के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारण के लिए कार्यक्रमों का निर्माण किया जाता है।

3.1.5 दूरदर्शन के पास रंगीन प्रसारण की क्षमता वाली 15 आउटडोर ब्राडकॉस्ट गाड़ियां हैं। इनमें से प्रत्येक में 4 कैमरा और अन्य आवश्यक उपकरण लगे हुए हैं। इसके अलावा इसके पास छह कैमरों और नौ इलेक्ट्रॉनिक फील्ड प्रोडक्शन सुविधाओं से युक्त विशाल आउटडोर ब्राडकास्ट गाड़ी तथा 12 छोटी गाड़ियां हैं। स्टूडियो से बाहर की गतिविधियों और घटनाओं की कवरेज के लिए कार्यक्रम निर्माण की सुविधा वाले सभी केन्द्रों में इलेक्ट्रानिक समाचार संग्रह उपकरण भी उपलब्ध हैं।

विकास कार्यक्रम

3.2.1 दूरदर्शन (डीडी–एक) प्रसारण का दायरा बढ़ाने के लिए करीब 500 ट्रान्समीटरों की स्थापना की परियोजनाएं या तो लागू की जा रही हैं या लागू की जानी है। इन ट्रान्समीटरों के चालू हो जाने पर देश की 92 प्रतिशत आबादी के दूरदर्शन प्रसारण के दायरे में आ जाने की संभावना है। अभी करीब 85.8 प्रतिशत जनसंख्या इसके प्रसारणों की पहुंच के अंदर है। यही नहीं इन ट्रान्समीटरों के चालू होने से इस समय दूरदर्शन ने प्रसारण के दायरे में आने वाले क्षेत्रों में भी प्रसारण में सुधार होगा। डीडी–दो चैनल के प्रसारण में बढ़ोत्तरी के लिए बड़े शहरों में कम शक्ति वाले अतिरिक्त ट्रान्समीटर स्थापित करने की योजना है। बंगलौर और हैदराबाद में इस समय काम कर रहे निम्नशक्ति ट्रान्सभीटरों के स्थान पर उच्च शक्ति के ट्रान्समीटर लगाने का भी कार्यक्रम है।

3.2.2 दूरदर्शन केन्द्रों में कार्यक्रम निर्माण सुविधाओं के विस्तार के लिए आठवीं पंचवर्षीय योजना में स्टूडियो/कार्यक्रम निर्माण सुविधा संबंधी 32 परियोजनाएं लागू की जा रही हैं या लागू की जानी हैं। इसके अलावा दिल्ली में ग्यारह मंजिला दूरदर्शन भवन परियोजना भी लागू की जा रही है। इसके अंतर्गत राष्ट्रीय स्टूडियो परिसर का निर्माण किया जा रहा है। इसमें 50 वर्ग मीटर से 432 वर्ग मीटर तक आकार के सात स्टूडियो बनाए जाएंगे जिनमें सभी आवश्यक तकनीकी सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

3.2.3 टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में तेजी से आ रहे बदलाव को ध्यान में रखते हुए चालू पंचवर्षीय योजना (1992-97) में

दूरदर्शन की प्रगति

		वर्ष	
		1990	1995-96
कार्यक्रम उत्पादन केंद्र	(संख्या)	18	38
कार्यक्रम निर्माण	(घंटे प्रति सप्ताह)	300	1300
ट्रांसमीटर	(संख्या)	519	772
प्रसारण	(घंटे प्रति सप्ताह)	11	1021
उपग्रह चैनल	(संख्या)	–	19
	(दो भूस्थलीय प्रसारण चैनल)		
क्षेत्रीय नेटवर्क	(संख्या)	20	34
प्राथमिक दर्शक	(करोड़ों में)	150	250
प्रसारण क्षेत्र	(प्रतिशत)	54.5	68.4
दर्शकों की संख्या	(प्रतिशत)	76.3	85.4
विज्ञापन से होने वाली आय	(रुपये करोड़ों में)	254	398
बजट	(रुपये करोड़ों में)	602	1513

दूरदर्शन अपने विभिन्न केन्द्रों में वर्तमान सुविधाओं को और बेहतर बनाने, उनके आधुनिकीकरण तथा सुविधाओं के विस्तार पर जोर दे रहा है। चालू योजना में दूरदर्शन की विकास संबंधी गतिविधियों में समाचार प्रणाली का कम्प्यूटरीकरण और मैसर्स सी–डी ए सी द्वारा निम्नशक्ति ट्रान्समीटर विकसित प्रणाली के जरिए कार्यक्रमों का अनेक भाषाओं में प्रसारण की व्यवस्था भी शामिल है। इसके अलावा ई.एन.जी. स्टूडियो और आउटडोर ब्रॉडकास्ट गाड़ियों में सीसीडी कैमरे लगाने का फैसला कर लिया गया है और दूरदर्शन से सभी प्रमुख केन्द्रों में रिकार्डिंग के लिए चरणबद्ध तरीके से बीटाकैम प्रणाली अपनायी जा रही है। विभिन्न राज्यों में कार्यक्रमों के निर्माण को बढ़ावा देने के लिए देश में विभिन्न स्थानों पर ई.एन.जी. प्रणाली पर आधारित कार्यक्रम निर्माण सुविधाएं उपलब्ध कराने की योजना है। कार्यालयों की प्रबंध प्रणाली के कम्प्यूटरीकरण का कार्य भी शुरू किया गया है। दूरदर्शन प्रसारण के क्षेत्र में नवीनतम टेक्नोलॉजी अपनाने के लिए पूरी तरह तैयार है।

डीडी-1 राष्ट्रीय चैनल

3.3.1 राष्ट्रीय कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र का एकीकरण, लोगों में एकता का भाव जगाना और उनके मन में भारतीय होने का गौरव पैदा करना है। राष्ट्रीय कार्यक्रम की शुरुआत 15 अगस्त 1982 से हुई और विभिन्न चरणों में इसका विस्तार कर प्रातःकालीन तथा दोपहर बाद की सभाओं के प्रसारण शुरु हुए। इस समय राष्ट्रीय नेटवर्क के अंतर्गत करीब 80 घंटे के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इसमें शिक्षा, सूचना तथा मनोरंजन के कार्यक्रमों का अनुपात 30:40:30 रहता है।

3.3.2 राष्ट्रीय कार्यक्रमों के अंतर्गत सामयिक घटनाओं पर आधारित अनेक कार्यक्रमों का प्रसारण होता है।

3.3.3 संसद के दोनों सदनों की कार्यवाही का प्रसारण दिल्ली में दो निम्नशक्ति ट्रान्समीटरों के जरिए किया जाता है। इसे संसद भवन से 10-15 किलोमीटर के दायरे में देखा जा सकता है।

3.3.4 इस वर्ष राष्ट्रीय नेटवर्क के प्रसारण–समय को और तर्कसंगत बनाया गया है इससे डीडी–एक और डीडी–दो एक–दूसरे के पूरक बन गए है। डीडी–एक के मनोरंजक कार्यक्रम अब रात साढ़े नौ बजे शुरू होते हैं और प्राइम टाइम की अवधि साढ़े दस बजे तक बढ़ा दी गई है। दोपहर बाद के प्रसारण में सामाजिक दृष्टि से प्रासंगिक कार्यक्रमों के बीच लम्बे धारावाहिकों को रखकर और अधिक आकर्षक बना दिया गया है।

क्षेत्रीय प्रसारण

3.4.1 सभी दूरदर्शन केन्द्र अपनी–अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में कार्यक्रमों का प्रसारण करते हैं। महत्वपूर्ण केन्द्र हर सप्ताह 25 घंटे के कार्यक्रम प्रसारित करते हैं जबकि अन्य केन्द्र सप्ताह में एक से दस घंटे तक के कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। क्षेत्रीय कार्यक्रमों में ग्रामीण विकास पर काफी ध्यान दिया जाता है। उपग्रह संपर्क के जरिए अब तेरह राज्यों के दर्शकों को एक समान कार्यक्रम दिखाना संभव हो गया है।

मुख्य-मुख्य राष्ट्रीय कार्यक्रम

- गणतंत्र दिवस परेड
- स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भाषण
- पुरी की रथ यात्रा
- त्यागराज और तानसेन समारोह
- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों का उद्घाटन
- संसद की कार्रवाई
- लोकसभा और राज्यसभा में प्रश्नकाल–सीधा प्रसारण
- संसद समाचार
- टुडे इन पार्लियामेण्ट
- संसद के संयुक्त अधिवेशन में राष्ट्रपति का अभिभाषण
- केन्द्रीय बजट का प्रस्तुत किया जाना
- रेल बजट

शैक्षिक टेलीविजन

3.5.1 दूरदर्शन ने शुरू से ही शैक्षिक कार्यक्रमों को प्राथमिकता दी है। दिल्ली में स्कूली प्रसारणों की शुरुआत तो 1961 में ही हो गई थी। उपग्रह के जरिए टेलीविजन से शैक्षिक प्रसारण के परीक्षणात्मक कार्यक्रम (साइट) को जारी रखते हुए स्कूली बच्चों के लिए कार्यक्रम 1982 में प्रारंभ किए

दूरदर्शन के सामाजिक उद्देश्य

- **राष्ट्रीय अखंडता पर जोर देना, सामाजिक बदलाव को उत्प्रेरित करना और जनता में वैज्ञानिक समझ को बढ़ाना।**
- **जनसंख्या नियंत्रण और परिवार कल्याण को बढ़ावा देने वाले संदेश जारी करना।**
- **अधिक कृषि उत्पादन को प्रेरित करने के लिए आवश्यक सूचनाएं तथा जानकारी देना।**
- **पर्यावरण संरक्षण तथा पारिस्थितिकी संतुलन पर जोर देना।**
- **महिलाओं, बच्चों तथा कमजोर वर्गों की सामाजिक सुरक्षा पर जोर देना।**
- **खेलकूद में रुचि को बढ़ावा देना।**
- **कलात्मक तथा सांस्कृतिक विरासत के सम्मान के लिए मूल्यों का सृजन।**

गए। इस समय दूरदर्शन द्वारा निर्मित स्कूली कार्यक्रम दिल्ली, मुंबई और मद्रास केन्द्रों से क्षेत्रीय प्रसारणों के समय के अंतर्गत प्रसारित किए जाते हैं। राज्य शिक्षा संस्थानों द्वारा निर्मित शैक्षिक कार्यक्रम हिन्दी, मराठी, गुजराती, उड़िया और तेलुगु में प्रसारित होते हैं। इन्हें संबंधित क्षेत्र के सभी ट्रान्समीटर रिले करते हैं।

3.5.2 विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय हर सप्ताह तेरह घंटे के उच्च शिक्षा टेलीविजन कार्यक्रमों का राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्रसारण करते हैं। शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए एक अलग चैनल शुरू करने का भी प्रस्ताव है।

समाचार बुलेटिन और समाचार पत्रिकाएं

3.6.1 दूरदर्शन समाचार दिल्ली स्थित अपने मुख्यालय से हर रोज समाचार सारांश सहित 13 बुलेटिन प्रसारित करता है। 1995 में दो नए बुलेटिन शुरू किए गए। अंग्रेजी में न्यूज इंडिया, और हिंदी में भारत समाचार। दोनों बुलेटिन 15–15 मिनट की अवधि के हैं। इन्हें दूरदर्शन इंडिया अंतर्राष्ट्रीय चैनल के जरिए देश से बाहर के दर्शकों के लिए प्रसारित किया जाता है। रात साढ़े दस बजे और साढ़े ग्यारह बजे मुख्य–मुख्य समाचारों पर आधारित समाचार बुलेटिनों का प्रसारण भी 1995 में शुरू किया गया। दूरदर्शन समाचार सी.एन.एन. को नियमित समाचार देने के साथ–साथ हर रोज न्यूज कैप्सूल भी देता है। समाचारों पर आधारित अन्य नियमित कार्यक्रम इस प्रकार हैः (अ) रविवार को दो साप्ताहिक समाचार बुलेटिन–इनमें से एक बधिरों के लिए है और संकेत भाषा में दोपहर बाद एक बजे से प्रसारित किया जाता है। दूसरा संस्कृत में 10 मिनट का बुलेटिन है जो दोपहर बाद 1 बजकर 15 मिनट पर प्रसारित होता है। (आ) साप्ताहिक समाचार डायरी सोमवार को प्रसारित की जाती है। 1995 में समाचार बुलेटिनों, खासतौर पर महत्वपूर्ण समाचार बुलेटिनों का प्रसारण ऐसे समय में किया जाने लगा है जब सबसे अधिक लोग टेलीविजन देख रहे होते हैं। हिन्दी में सबसे महत्वपूर्ण समाचार बुलेटिन रात साढ़े आठ बजे और अंग्रेजी में रात नौ बजे प्रसारित किया जाता है। ये दोनों बुलेटिन बीस–बीस मिनट के हैं और राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्रसारित किए जाते हैं। लेकिन जिन दिनों संसद का सत्र चल रहा होता है इन समाचार बुलेटिनों की अवधि 15 मिनट कर दी जाती है और इनके बाद संसद की कार्यवाही की समीक्षा प्रसारित की जाती है। दोनों सदनों की कार्यवाही पर आधारित हिंदी में संसद समाचार और अंग्रेजी में पार्लियामेण्ट न्यूज की अवधि 15-15 मिनट है।

3.6.2 1995 में दूरदर्शन समाचार ने जिन प्रमुख घटनाओं को कवर किया उनमें संयुक्त राष्ट्र के 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित समारोह में प्रधानमंत्री का भाषण, कोलंबिया में गुट–निरपेक्ष आंदोलन का शिखर सम्मेलन, अर्जेण्टीना में जी–15 देशों का शिखर सम्मेलन, दिल्ली और मशोबरा (शिमला) में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन सार्क का शिखर सम्मेलन। प्रधानमंत्री की मलेशिया, तुर्कमेनिस्तान, किर्गिस्तान, बुर्किनाफासो, घाना और मिस्र की यात्रा तथा राष्ट्रपति की चिली, पुर्तगाल, जाम्बिया, और

जिम्बाब्वे की यात्रा की कवरेज विशेष दलों ने की। इसके अलावा साल के दौरान जिन प्रमुख घटनाओं को कवर किया गया उनमें भारत में पूर्ण सूर्य ग्रहण, पेइचिंग में संयुक्त राष्ट्र महिला सम्मेलन, अनेक राज्यों में अभूतपूर्व बाढ़, चरार–ए–शरीफ हादसा, फिरोजाबाद में भीषण रेल दुर्घटना, देश के कई भागों में दुग्ध चमत्कार केरल और उत्तर प्रदेश में स्थानीय निकायों के चुनाव, उत्तर प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र में राजनीतिक संकट, एनरॉन परियोजना का मुद्दा, जम्मू–कश्मीर के बारे में प्रधानमंत्री द्वारा एकमुश्त कार्यक्रम की घोषणा, इस्राइल के प्रधानमंत्री की हत्या, भारत और न्यूजीलैंड के बीच नागपुर में क्रिकेट मैच के दौरान दुर्घटना, भारत–न्यूजीलैंड क्रिकेट श्रृंखला, चीन में विश्व भारोत्तोलन प्रतियोगिता, चैम्पियन्स ट्राफी हाकी टूर्नामेण्ट, इनसेट–2सी का प्रक्षेपण, दिल्ली में बोइंग विमान दुर्घटना आदि महत्वपूर्ण हैं।

3.6.3 इनमें से अधिकांश घटनाओं में दूरदर्शन समाचार ने अन्य सभी एजेंसियों (जिनमें विदेशी एजेंसियां और प्रसारण संगठन भी शामिल हैं) से पहले समाचार प्रसारित करके समाचार सर्वप्रथम देने का श्रेय प्राप्त किया। यही नहीं दूरदर्शन के दृश्य समाचार अंशों को बाद में, रायटर, सी.एन.एन., बी.बी.सी. और ए.एन.आई. जैसे समाचार संगठनों ने इस्तेमाल किया। पंजाब के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री बेअंत सिंह 31 अगस्त 1995 को चंडीगढ़ में जिस बम विस्फोट में मारे गए थे उसके दृश्य समाचार का प्रसारण सर्वप्रथम दूरदर्शन ने ही किया। यूरोविजन न्यूज, एशियाविजन, और एसोसिएटेड प्रेस टेलीविजन जैसे संगठनों ने दूरदर्शन समाचार की बड़ी तारीफ की है।

3.6.4 दूरदर्शन समाचार ने महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, बाबा साहेब डाक्टर भीमराव आम्बेडकर, श्रीमती इंदिरा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल और पंडित गोविंद वल्लभ पंत जैसे कई महत्वपूर्ण नेताओं के जन्मशताब्दी समारोहों को अपने समाचारों और कार्यक्रमों मे पर्याप्त महत्व दिया है।

सामयिक विषय

3.7.1 दूरदर्शन सामयिक महत्व के विषयों पर कई कार्यक्रम प्रसारित करता है। राष्ट्रीय नेटवर्क पर सप्ताह में एक बार कश्मीर और पूर्वोत्तर की घटनाओं के बारे में पत्रिका कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। 'द वर्ल्ड दिस वीक' नाम का एक कार्यक्रम कई वर्षों से प्रसारित किया जा रहा है। हिन्दी में पत्रिका कार्यक्रम 'परख' इन दिनों उत्तर भारत के नेटवर्क पर प्रसारित किया जा रहा है। इस वर्ष दूरदर्शन ने व्यापक जनहित के विषयों पर उच्चतम न्यायालय के फैसलों पर आधारित साप्ताहिक राउण्ड–अप कार्यक्रम 'एपेक्स जजमेण्ट' शुरू किया है।

3.7.2 डीडी–दो पर भी सामयिक विषयों के कई कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं– (अ) दैनिक कार्यक्रम (1) आज तक – राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं पर आधारित बीस मिनट का यह हिन्दी कार्यक्रम जुलाई 1995 में शुरू किया गया। इसका प्रसारण हर सप्ताह सोमवार से शुक्रवार तक रात साढ़े नौ बजे प्रायोजित वर्ग के कार्यक्रमों में किया जाता है। (2) न्यूज टुनाइट: देश–विदेश की घटनाओं पर आधे घंटे का यह समाचार मूलक कार्यक्रम अंग्रेजी में हर सप्ताह रात दस बजे से प्रायोजित वर्ग के अंतर्गत प्रसारित किया जाता है। (3) न्यूज हैडलाइन्स: दो मिनट का मुख्य समाचारों पर आधारित यह बुलेटिन अंग्रेजी में हर सप्ताह सोमवार से शनिवार तक रात आठ बजे और ग्यारह बजे प्रसारित किया जाता है। (4) सुर्खियां: हिन्दी में मुख्य–मुख्य समाचारों का दो मिनट का यह बुलेटिन प्रायोजित वर्ग के अंतर्गत सोमवार से शनिवार तक रात सात बजे और सोमवार से बृहस्पतिवार तथा शनिवार को रात नौ बजे प्रसारित किया जाता है। (5) फर्स्ट एडीशन: यह पिछले साल कमीशंड कार्यक्रम के रूप में शुरू किया गया था। लेकिन बाद में इसमें परिवर्तन करके इसे प्रायोजित कार्यक्रम में बदल दिया गया। अब इस कार्यक्रम का प्रसारण हर सप्ताह सुबह आठ बजे से किया जाता है। सोमवार से शुक्रवार तक इसकी अवधि 45 मिनट और शनिवार और रविवार को एक घंटा होती है। इसमें समाचार पत्रों की सुर्खियों के साथ–साथ देश–विदेश की महत्वपूर्ण घटनाओं पर विश्लेषणात्मक रिपोर्टें प्रसारित की जाती हैं। (आ) साप्ताहिक कार्यक्रम (1) : कारोबारनामा–हिन्दी में प्रसारित उद्योग–व्यापार जगत का पहला कार्यक्रम है। इसमें अर्थव्यवस्था, उद्योग, वाणिज्य और कृषि के क्षेत्र में सभी गतिविधियों की जानकारी दी जाती है। पिछले वर्ष से प्रारंभ कमीशंड वर्ग का 25 मिनट का यह कार्यक्रम हर बुधवार को सुबह नौ बजे प्रसारित किया जाता है। (2) परसेप्शन्स: भारत में विभिन्न क्षेत्रों की प्रमुख

गतिविधियों पर आधारित 30 मिनट का यह कार्यक्रम हर सोमवार सुबह नौ बजे कमीशंड कार्यक्रम के रूप में प्रसारित किया जा रहा है। (3) इंडिया दिस विकः सप्ताह की प्रमुख घटनाओं पर आधारित 30 मिनट का यह कार्यक्रम हर सप्ताह शनिवार को रात 9.40 पर प्रसारित होता है। (4) न्यूजट्रेकः सप्ताह की प्रमुख घटनाओं की पृष्ठभूमि से संबंधित यह प्रायोजित कार्यक्रम अंग्रेजी में शनिवार रात 10 बजकर 10 मिनट पर प्रसारित किया जाता है।

3.7.3 पिछले वर्ष नए चैनल डीडी–तीन की शुरुआत से सामयिक विषयों के कुछ और कार्यक्रमों का प्रसारण प्रारंभ हुआ है। डीडी–तीन पर प्रसारित हो रहे कुछ कार्यक्रम इस प्रकार हैं। (1) न्यूज ऑवरः एक घंटे का समाचारों पर आधारित यह कार्यक्रम हर सप्ताह सोमवार से शुक्रवार तक रात साढ़े आठ बजे हिन्दी–अंग्रेजी में प्रसारित होता है। (2) बिजनेस न्यूजः अंग्रेजी में आधे घंटे का यह कार्यक्रम हांगकांग में तैयार किया जाता है। एशिया में व्यापार–वाणिज्य संबंधी गतिविधियों पर आधारित यह कार्यक्रम हर सप्ताह सोमवार से शनिवार तक शाम छह बजे प्रसारित किया जाता है। (3) मार्केट टु नाइटः शेयर बाजार के समाचारों से संबंधित सामयिक विषयों का 15 मिनट का यह कार्यक्रम हर सप्ताह सोमवार से शुक्रवार तक अंग्रेजी में रात 11 बजे प्रसारित होता है।

3.7.4 आम आदमी से संबंधित सप्ताह के प्रमुख मुद्दों पर सामयिक विषयों के कार्यक्रम शनिवार और रविवार को परिचर्चा और पत्रिका कार्यक्रमों के रूप में भी प्रसारित किए जाते हैं।

खेल

3.8.1 दूरदर्शन ने दिसम्बर 1995 में एक महत्वपूर्ण खेल प्रतियोगिता दक्षिण एशियाई परिसंघ खेल – 1995 का प्रसारण किया। उद्घाटन और समापन समारोहों के साथ–साथ अधिकतर प्रमुख प्रतियोगिताओं (14 में से 10) का सुबह 9 बजे से शाम सात बजे तक विभिन्न चैनलों के जरिए सीधा प्रसारण किया। प्रसारण की व्यापकता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि प्रतियोगिता के प्रसारण के लिए सात आउटडोर ब्राडकास्ट गाड़ियों, 14 ई.एन.जी. इकाइयों और करीब 500 कर्मचारियों की सहायता ली गई।

3.8.2 वर्ष के दौरान दूरदर्शन ने भारत तथा दुनियाभर में आयोजित सभी प्रमुख खेल प्रतियोगिताओं का सीधा प्रसारण किया। इनकी कुल प्रसारण अवधि 600 घंटे से भी अधिक रही। इसके अलावा विभिन्न वर्गों के अंतर्गत खेलकूद से संबंधित 200 घंटे से अधिक के रिकार्डेड कार्यक्रमों का भी प्रसारण किया गया। देश के विभिन्न भागों में आयोजित 130 से अधिक खेल प्रतियोगिताओं को भी दूरदर्शन ने वर्ष के दौरान कवर किया।

3.8.3 वर्ष के दौरान दूरदर्शन ने जिन महत्वपूर्ण खेल प्रतियोगिताओं का सीधा प्रसारण किया, उनमें सांघी नगर हैदराबाद में विश्व शतरंज चैम्पियनशिप का सेमीफाइनल, भारत में खेले गए डेविस कप मैच, इंदिरा गांधी गोल्ड कप अंतर्राष्ट्रीय हाकी टूर्नामेण्ट, मुंबई में विश्व पेशेवर स्क्वाश श्रृंखला, हैदराबाद में ग्रेंड स्लेम बिलियर्ड चैम्पियनशिप, मुंबई में विश्व बिलियर्ड्स चैम्पियनशिप, टेनिस खिलाड़ियों के संघ (ए टी पी) के विभिन्न मुकाबले और सैटेलाइट टेनिस प्रतियोगिताएं, चंडीगढ़ में चार राष्ट्रीय हाकी चैम्पियनशिप, नई दिल्ली में जूनियर वर्ग की विश्व पावरलिफ्टिंग चैम्पियनशिप, नई दिल्ली में राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय जूडो चैम्पियनशिप और एशियाई जूडो चैम्पियनशिप, महिलाओं की दूसरी विश्व पेशेवर स्नूकर चैम्पियनशिप, कलकत्ता में एशिया क्लब कप फुटबाल प्रतियोगिता, मद्रास में विश्व वालीबॉल चैम्पियनशिप, नई दिल्ली में विश्व कॉर्फबाल चैम्पियनशिप, नई दिल्ली में पहली राष्ट्रमंडल निशानेबाजी प्रतियोगिता, कोचीन में राष्ट्रमंडल कप हैंडबाल प्रतियोगिता, नई दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय एथलेटिक्स स्पर्धा और भारत–इंग्लैंड महिला क्रिकेट श्रृंखला शामिल हैं। इसके अलावा मुंबई में विश्व मास्टर्स क्रिकेट टूर्नामेण्ट और भारत–न्यूजीलैंड क्रिकेट श्रृंखला के प्रसारण में भी दूरदर्शन ने सहयोग किया।

3.8.4 जिन अन्य अंतर्राष्ट्रीय खेल स्पर्धाओं का दूरदर्शन ने वर्ष के दौरान सीधा प्रसारण किया उनमें कोपा अमरीका फुटबाल, यूरोपियन कप, विनर्स कप का फाइनल, यूरोपियन चैम्पियनशिप कप फाइनल, एफ.ए. कप फुटबाल प्रतियोगिता का फाइनल और विश्व पेशेवर शतरंज चैम्पियनशिप का फाइनल भी शामिल है। पिछले वर्षों की तरह इस बार भी सुप्रसिद्ध ग्रेंड स्लेम टेनिस प्रतियोगिताओं, जैसे आस्ट्रेलियन ओपन, अमरीकी ओपन, विम्बलडन और फ्रेंच ओपन प्रतियोगिताओं का दूरदर्शन ने सीधा प्रसारण किया। घरेलू खेलकूद स्पर्धाओं में अधिकतर राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं और

महत्वपूर्ण टूर्नामेण्टों का दूरदर्शन ने सीधा प्रसारण किया। इस वर्ष दूरदर्शन ने सबसे महत्वपूर्ण घरेलू खेल स्पर्धा ग्रेट हिमालयन एक्सपीडीशन जो भारतीय सेना द्वारा आयोजित की गई थी का प्रसारण किया, जिसमें स्कींग, राफ्टिंग, बैलून द्वारा यात्रा मोटर/कार दौड़, पर्वतारोहण ग्लाइडिंग आदि शामिल थे।

3.8.5 पूर्वोत्तर राज्यों में आयोजित खेलकूद स्पर्धाओं को विशेष महत्व दिया गया। अगरतला में आयोजित पूर्वोत्तर खेल समारोह की काफी अच्छी कवरेज की गई। शिलांग में डॉ. बी. सी. राय नेशनल जूनियर फुटबाल चैम्पियनशिप, सिलचर में भारत और शेष विश्व की टीम के बीच एक दिवसीय मैच, गुवाहाटी में भारत और इंग्लैंड के बीच दूसरा एकदिवसीय महिला क्रिकेट मैच, डिब्रूगढ़ में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय टेन्ट पैगिंग चैम्पियनशिप, गुवाहाटी में रोहितेश्वर सैकिया स्वर्ण कप बैडमिण्टन टूर्नामेण्ट, सिलचर में राष्ट्रीय आमंत्रण टेनिस चैम्पियनशिप का फाइनल और अगरतला में राष्ट्रीय स्कूली खेलकूद जैसी कई प्रतियोगिताओं का प्रसारण किया गया।

3.8.6 विजयवाड़ा में आयोजित राजीव गांधी जनजातीय खेलकूद प्रतियोगिता, कलकत्ता में आमंत्रण कबड्डी टूर्नामेण्ट, अलेप्पी में नेहरू नौका दौड़, हैदराबाद में ए.आर. मल्लू स्मारक जिमनास्टिक टूर्नामेण्ट और उदयपुर में नेत्रहीनों की राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता तथा राजस्थान ग्रामीण खेलकूद समारोह की भी कवरेज की गई और प्रसारण किया गया। दूरदर्शन के इतिहास में पहली बार इस वर्ष गोल्फ प्रतियोगिता का सीधा प्रसारण किया गया। इसके अलावा घुड़दौड़ के सीधे प्रसारण की भी अनुमति दी गई।

विशेष दर्शकों के लिए कार्यक्रम

3.9.1 दूरदर्शन महिलाओं, बच्चों और युवाओं आदि के लिए विशेष रूप से बनाए गए कार्यक्रमों का प्रसारण करता है। ये कार्यक्रम धारावाहिकों, डाक्यूमेंटरी फिल्मों, टेलीफिल्म, स्पॉट, क्विकी और लघु फिल्मों के रूप में होते हैं। इनमें लड़के–लड़की में भेदभाव, समाज में महिलाओं के मुकाबले पुरुषों को अनावश्यक महत्व दिए जाने और बचपन में विवाह, यौन शोषण, महिलाओं पर अत्याचार जैसी बुराइयों को दूर करने की ओर ध्यान आकृष्ट कराया जाता है। 1995 में महिलाओं के बारे में जिन उद्देश्यपूर्ण और शिक्षाप्रद कार्यक्रमों की सराहना हुई उनमें 'संपर्क', 'साहस', 'आरसी', 'सोशल वाच', 'आश्रय', 'काल कोठरी', 'करवटें', 'वीमन इन पालिटिक्स', 'शाप', 'मछलीघाट', आदि प्रमुख हैं। कुछ कार्यक्रमों, जैसे–नारी, संध्या, निर्णय, स्टेटस आ फ इंडियन

सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री पी.ए. संगमा दूरदर्शन स्टूडियो में

वीमेन, सहारा, प्रथम–महिला (विभिन्न व्यवसायों में पहली महिलाएं), स्मॉल वाइसेज–स्माल विक्टरीज, तालियां, पतियों की महफिल, मैं अबला नहीं हूं को कमीशंड कार्यक्रमों के अंतर्गत स्वीकृति दी गई।

3.9.2 दूरदर्शन कुछ ऐसे कार्यक्रमों का भी प्रसारण करता है जिनका संबंध बालिकाओं से है। इनमें रुढ़िवादी भारतीय समाज में बालिकाओं की भूमिका पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया जाता है। अपूर्वा, अपराजिता, मंजरी, इंदु, ममता, आकांक्षा जैसी कुछ फिल्मों का प्रसारण इसी के तहत किया गया।

3.9.3 बच्चों के कार्यक्रम बनाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि मनोरंजन करने के साथ–साथ वे शिक्षाप्रद भी हों तथा उनमें बच्चों का ज्ञान बढ़े जिससे स्वस्थ शारीरिक और मानसिक विकास के लिए उनमें उच्च जीवन मूल्यों का विकास हो। इस बात का खास ध्यान रखा जाता है कि बच्चों के कोमल मन पर गलत प्रभाव डालने वाले कार्यक्रम न दिखाए जाएं। बच्चों के धारावाहिकों, कार्टून फिल्मों, एनीमेशन फिल्मों, छोटी टेलीफिल्मों का निर्माण इस तरह किया जाता है जिससे वे बच्चों के लिए उपयोगी हो। इनका प्रसारण समय भी ऐसे निर्धारित किया जाता है जब बच्चे देख सकें। बच्चों के कार्यक्रम सप्ताह के काम के दिनों में दोपहर बाद और रविवार को दोपहर के वक्त प्रसारित किए जाते हैं। दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कुछ उल्लेखनीय बाल कार्यक्रम इस प्रकार हैं : सुनो कहानी, फुटबाल की वापसी, हिप हिप हुर्रे, जरा हट के, मीठा–मीठा बोल, वन्टूश के फन्टूश, चांद–सितारे आदि। प्रोफेसर जयंत नार्लीकर द्वारा निर्मित 'ब्रह्माण्ड' धारावाहिक बच्चों के लिए दिलचस्पी का कार्यक्रम था। इसके अलावा बच्चों के कार्यक्रमों के अंतर्गत अन्य एजेंसियों/संगठनों द्वारा प्रायोजित तथा उपलब्ध कराई गई। बच्चों की फिल्मों व धारावाहिकों का प्रसारण भी किया जाता है। हरी–भरी फुलवारी, चोरी–चुपके, बस्ता, नन्हें जासूस, खेल–खेल में सीखें, जैसे कुछ कार्यक्रमों को कमीशंड कार्यक्रम के वर्ग में स्वीकृति दी गई है।

3.9.4 युवाओं की दिलचस्पी के कार्यक्रम भी दूरदर्शन नियमित रूप से बनाता और प्रसारित करता है। इनकी विषय–वस्तु युवाओं की समस्याओं, अहिंसा का आदर्श, व्यावसायिक दिशा–निर्देशन, देशभक्ति की भावना, शराब तथा मादक पदार्थों की लत से छुटकारे के उपाय, वैज्ञानिक मनोवृत्ति का विकास और सामान्य जानकारी बढ़ाने वाली होती हैं। इस वर्ग के अंतर्गत मुक्ति, प्रेरणा, जैसे कुछ कार्यक्रम प्रसारित किए गए। 1995 में कैरियर पथ, स्पाइस, ब्रेक फ्री, निर्माण, टी टॉक, नीना गुप्ता टॉक शो जैसे कुछ और कार्यक्रम दिखाए गए।

3.9.5 आम आदमी को पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूक बनाने के लिए दूरदर्शन ने बाहर से कार्यक्रम बनवाने की अपनी योजना के तहत कुछ कार्यक्रमों को मंजूरी दी है। इनके नाम हैं : लिविंग ऑन द एज, आज भी खड़े हैं तालाब, फॉरेस्ट आफ इंडिया, नेचर प्लस, सेव भिट्टारकनिका, पार्टनर्स इन पेरिल आदि। 'लिविंग ऑन द एज', साप्ताहिक कार्यक्रम है। दर्शकों ने इसे काफी पसंद किया है।

3.9.6 विकलांगों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण के विकास तथा अक्षम और वृद्धों में जीने के लिए आत्मविश्वास तथा संकल्प जगाने के लिए दूरदर्शन विशेष कार्यक्रमों का निर्माण और प्रसारण करता है। 1995 में बैसाखियां, रोशनी का सफर, रीचिंग फार द स्काइज, आखिरी पड़ाव, जाएं तो जाएं कहां जैसे कुछ कार्यक्रम प्रसारित किए गए।

3.9.7 विज्ञान के क्षेत्र में हुई प्रगति की जानकारी भी दूरदर्शन नियमित रूप से देता है। दूरदर्शन द्वारा हर सप्ताह प्रसारित की जाने वाली विज्ञान पत्रिका 'टर्निंग प्वाइंट' के बारे में दर्शक अनुसंधान सर्वेक्षण से पता चलता है कि दर्शकों ने इसे काफी पसंद किया है। अक्तूबर 1995 में इस कार्यक्रम को प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्री–जूले फ्रेंच से सम्मानित किया गया। दूरदर्शन 'टर्निंग प्वाइंट' को हिंदी के अलावा दस क्षेत्रीय भाषाओं में भी बनवा रहा है। इसी तरह का एक और कार्यक्रम 'क्यों और कैसे' भी प्रसारित किया गया। 24 अक्तूबर 1995 को पूर्ण सूर्यग्रहण के अवसर पर एक घंटे का विशेष प्रसारण काफी सफल रहा। दूरदर्शन के क्षेत्रीय केन्द्र भी विज्ञान संबंधी मासिक या पाक्षिक कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। दूरदर्शन केन्द्र कलकत्ता द्वारा 'क्वेस्ट' और 'साइंस क्विज़' नाम के कार्यक्रम तैयार किए जा रहे हैं।

कार्यक्रमों का बाहर से निर्माण

3.10.1 दूरदर्शन बाहरी निर्माताओं से कार्यक्रम बनवाता है और विशेष साफ्टवेयर कार्यक्रम के तहत उन्हें धनराशि उपलब्ध कराता है। ये कार्यक्रम विभिन्न विषयों पर होते हैं और टेलीफिल्म, धारावाहिक, फीचर फिल्म, डॉक्यूमेण्टरी, समाचार फीचर, साक्षात्कार आदि के रूप में होते हैं। इस वर्ग के अंतर्गत वर्ष के दौरान प्रसारित कुछ कार्यक्रमों में उपासना, इंडिया क्विज और टर्निंग प्वाइंट, ऑन द एज, साहस, आरसी वाच

और संपर्क शामिल हैं। ग्रामीण विकास के बारे में अनेक सोशल कार्यक्रम संबद्ध मंत्रालयों के दिशा–निर्देश में बाहरी निर्माताओं को बनाने के लिए सौंपे गए। कुछ प्रमुख दूरदर्शन केन्द्रों में बाहरी निर्माताओं से क्षेत्रीय भाषाओं में कार्यक्रम बनवाए गए।

प्रायोजित कार्यक्रम

3.11.1 दूरदर्शन ने अपने नए प्रायोजित कार्यक्रम के तहत 1990 में प्रस्ताव आमंत्रित किए। करीब 400 स्वीकृत धारावाहिकों में से 75 के प्रारूप कार्यक्रमों को प्रदर्शन के लिए पहले ही मंजूरी दी जा चुकी है। इनमें से कुछ का प्रसारण भी शुरू हो गया है। धारावाहिकों का चयन इस बात को ध्यान में रखकर किया जाता है कि पूरे सप्ताह विभिन्न विषयों पर कार्यक्रम प्रसारित होते रहें। इसके अलावा प्रायोजित वर्ग में अनेक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं, जैसे मिस वर्ल्ड समारोह, 1995 का प्रसारण किया गया। दूरदर्शन ने रात साढ़े सात बजे से साढ़े आठ बजे तक हिन्दी प्रसारण के लिए अतिरिक्त समयावधि निर्धारित की है जिसका उपयोग केवल दिल्ली, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, और राजस्थान के लिए किया गया। प्रायोजित कार्यक्रम वर्ग के अंतर्गत फिल्मों पर आधारित अनेक कार्यक्रम भी प्रसारित किए गए। जिनसे दूरदर्शन को काफी आमदनी हुई।

फिल्में और फिल्मों पर आधारित कार्यक्रम

3.12.1 इस समय दूरदर्शन अपने राष्ट्रीय नेटवर्क के जरिए शुक्रवार और शनिवार को हिंदी फीचर फिल्मों का प्रसारण करता है। ये फिल्में रात 9.20 से प्रसारित की जाती हैं और आमतौर पर प्रायोजित होती हैं। जिन दिनों संसद का अधिवेशन चल रहा होता है उन दिनों शुक्रवार की फीचर फिल्म रात साढ़े नौ बजे प्रसारित की जाती हैं। रविवार को दोपहर बाद 1.25 बजे क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्में वर्णमाला क्रम से प्रसारित की जाती हैं। इस वक्त सिर्फ ऐसी फिल्में प्रसारित होती हैं जिन्हें पुरस्कार प्राप्त हुआ हो, पैनोरमा खंड में चुनी गई हों या जिन्होंने सिल्वर जुबली मनाई हो। रविवार शाम को हिंदी फीचर फिल्म शाम चार बजे प्रसारित की जाती है और इसे दिल्ली तथा हिंदी भाषी राज्यों के केंद्रों से प्रसारित किया जाता है। इस दौरान अन्य क्षेत्रीय केंद्र अपनी–अपनी भाषाओं की फिल्में प्रसारित करते हैं।

3.12.2 हिंदी फिल्मी गीतों का प्रायोजित कार्यक्रम रंगोली सुबह 7.10 बजे से 8.10 बजे तक प्रसारित किया जाता है। चित्रहार भी हिंदी फिल्मी गीतों का प्रायोजित कार्यक्रम है जो बुधवार 7.50 बजे से 8.30 बजे तक प्रसारित किया जाता है। इस समय रंगोली और चित्रहार, दोनों ही कार्यक्रम बाहरी निर्माताओं द्वारा बनाए जा रहे हैं। वे इन कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए दूरदर्शन को एक निश्चित आमदनी की गारंटी भी देते हैं।

केन्द्रीय कार्यक्रम निर्माण केन्द्र

3.13.1 केन्द्रीय कार्यक्रम निर्माण केन्द्र ऐसे कार्यक्रम बनाता है जिन्हें अन्य केन्द्र बनाने में असमर्थ हैं। पिछले दो वर्षों में केन्द्रीय कार्यक्रम निर्माण केन्द्र ने नाटकों पर आधारित लम्बे धारावाहिकों का निर्माण किया है। इनमें से कुछ तो प्रसारित भी किए जा चुके हैं जबकि कुछ अन्य के लिए राष्ट्रीय नेटवर्क पर उपयुक्त समय उपलब्ध होने की प्रतीक्षा की जा रही है। केन्द्रीय कार्यक्रम निर्माण केन्द्र के कई विदेशी टेलीविजन संगठनों को बेचे जा चुके हैं।

आलोच्य वर्ष में केन्द्रीय कार्यक्रम निर्माण केन्द्र की उपलब्धियां	
कार्यक्रमों की कुल अवधि	200 घंटे
प्रदर्शित कार्यक्रमों की कुल अवधि	120 घंटे
पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि	23 %

3.13.2 वर्ष के दौरान केन्द्रीय कार्यक्रम निर्माण केन्द्र का पाकशास्त्र संबंधी 27 कड़ियों वाला धारावाहिक 'दावत' सिंगापुर टी.वी. नेटवर्क नाम की टेलीविजन प्रसारण कंपनी को बेचा गया। इसके अलावा कई अन्य कार्यक्रम आदान–प्रदान योजना के अंतर्गत विदेशों को भेजे गए हैं। केन्द्रीय कार्यक्रम निर्माण केन्द्र की एक विशेषता यह भी है कि यह संगीत और नृत्य के अपने राष्ट्रीय कार्यक्रमों के लिए देश के सुप्रसिद्ध कलाकारों को आमंत्रित करता है। इस केन्द्र की एक और खूबी यह है कि इसके कार्यक्रमों की रिकार्डिंग आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष की जाती है।

3.13.3 केन्द्रीय कार्यक्रम निर्माण केन्द्र द्वारा निर्मित जो कार्यक्रम प्रसारित किए जा चुके हैं/किए जा रहे हैं, उनके नाम हैं : फिकर चंद, फरियाद, ढलती शाम का सूरज, चकाचक होम्स, स्वप्न, संतति, डंब डांसर। केन्द्र द्वारा निर्मित कुछ अन्य कार्यक्रम हैं : क्वेश्चन फोरम, राउण्ड टेबल।

डीडी-2 मेट्रो मनोरंजन चैनल

3.14.1 26 जनवरी 1993 को दूरदर्शन ने प्रायोजिक आधार पर एक घंटे के मैट्रो प्रसारण की शुरुआत की थी। इस समय मैट्रो चैनल पर हर रोज 15 घंटे का प्रसारण हो रहा है। देश के विभिन्न भागों के 40 से अधिक नगरों में 9.7

करोड़ से अधिक दर्शक इसे देख सकते हैं। इस चैनल को अब डीडी–दो नाम से भी जाना जाता है।

3.14.2 1994-95 के लिए जो कार्य योजना बनाई गई है उसमें दो बुनियादी लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। पहला, इस चैनल को सुदृढ़ करना और इसकी अपनी पहचान कायम करना और दूसरा, इसे सिर्फ मनोरंजक चैनल की बजाए अपने आप में संपूर्ण, जीवंत, विविधतापूर्ण और चुस्त चैनल बनाना है ताकि इसके जरिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का प्रसारण हो और महानगरीय दर्शकों की जरूरतें पूरी हो सकें। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ये नीतियां अपनाई गई हैं: (1) नए कार्यक्रमों की समय–समय पर समीक्षा और उन्हें नया रूप देना; (2) विभिन्न दर्शकों को ध्यान में रखकर कार्यक्रमों और उनके प्रसारण के समय का व्यवस्थित तरीके से निर्धारण।

3.14.3 मैट्रो मनोरंजन चैनल की प्रातःकालीन सभा के प्रसारण (सात बजे से दस बजे) में पर्यावरण/जीव–जंतुओं और वनस्पति, भक्ति संगीत, व्यायाम, शेयर बाजार संबंधी जानकारी और सुबह के हल्के–फुल्के कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। इनसे स्वस्थ मनोरंजन के साथ–साथ समसामयिक विषयों पर आम दिलचस्पी की जानकारी भी मिलती है। सुबह की सभा में सप्ताह में तीन दिन रोजगार संबंधी कार्यक्रम भी प्रसारित किया जाता है। दोपहर बाद और शाम के मैट्रो प्रसारण में (12.00 बजे और शाम 7.00 बजे) क्षेत्रीय कार्यक्रमों के लिए दो घंटे का समय निर्धारित है जिसके बाद गृहणियों के लिए कार्यक्रम, जैसे टेलीशॉपिंग, उपभोक्ता जागरूकता, खेलकूद, बच्चों के धारावाहिक, क्विज, विज्ञान पत्रिका और युवाओं के लिए संगीत आदि के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इनमें पारिवारिक धारावाहिकों का भी प्रसारण होता है। हर रोज शाम 5 बजे से 7 बजे और रात 12 बजे से 1 बजे तक एम.टी.वी. के कार्यक्रमों का भी प्रसारण होता है। सप्ताह में पांच दिन शाम 7 बजे युवा श्रोताओं के लिए विशेष 'मैट्रो क्लब' प्रसारित किया जाता है। मैट्रो चैनल के देर शाम के और प्राइम टाइम प्रसारण में (शाम 7 बजे से 9.30 बजे तक) पारिवारिक मनोरंजन के ऐसे कार्यक्रम दिखाए जाते हैं जिन्हें सभी सदस्य एक साथ बैठकर देख सकते हैं। सामयिक विषयों के कार्यक्रमों को और बढ़ावा देने के उद्देश्य से रात 9.30 से 10 बजे तक का समय निजी निर्माताओं द्वारा निर्मित समाचारों तथा सामयिक विषयों के कार्यक्रमों के लिए विशेष रूप से निर्धारित कर दिया गया है। दो–दो मिनट के मुख्य समाचार बुलेटिनों (हिंदी में रात 7 बजे और रात 9 बजे तथा अंग्रेजी में रात 8 बजे और 11 बजे) का भी प्रसारण किया जा रहा है। देर रात्रि के प्रसारणों में विभिन्न विषयों पर विशिष्ट दर्शकों से बातचीत, सीधे प्रसारण वाले कार्यक्रम, विदेशी धारावाहिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि का प्रसारण किया जाता है। एम.टी.वी. के कार्यक्रम रात 12 बजे से एक बजे तक फिर प्रसारित किए जाते हैं। शुक्रवार को देर रात्रि की अंग्रेजी फीचर फिल्म के अलावा शनिवार और रविवार को दोपहर बाद हिंदी फीचर फिल्में भी प्रसारित की जाती हैं।

क्षेत्रीय भाषा उपग्रह सेवा

3.15.1 देश की प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं में इनमें से कुछ भाषाएं जो पांच करोड़ से अधिक लोग बोलते हैं अतिरिक्त साफ्टवेयर उपलब्ध कराने के लिए दूरदर्शन ने कई क्षेत्रीय भाषा उपग्रह चैनल प्रारंभ किए हैं। (डीडी–4 से डीडी–11 और डीडी–13) इनके अंतर्गत असमिया, बंगला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालयम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, तमिल और तेलुगु में कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इन चैनलों के कार्यक्रमों में क्षेत्रीय प्रसारण सेवाएं शामिल रहती हैं जो संबंधित राज्यों में ही उपलब्ध रहती हैं। इसके अलावा डिश एंटेना का इस्तेमाल करके कुछ और कार्यक्रम भी देखे जा सकते हैं इनसैट उपग्रह की पहुंच अब समूचे देश में है इसलिए क्षेत्रीय भाषाओं के कार्यक्रम अब देश के सभी लोगों के लिए, चाहे वे किसी भी स्थान पर क्यों न रहते हों, उपलब्ध हैं। इस तरह क्षेत्रीय भाषा उपग्रह सेवा के जरिए क्षेत्रीय भाषाओं में और अधिक कार्यक्रम प्रसारित करना आसान हो गया है। देशभर के दर्शक अब क्षेत्रीय भाषा कार्यक्रमों का आनंद ले सकते हैं। जहां क्षेत्रीय सेवा के कार्यक्रम कुछ खास राज्यों में देखे जा सकते हैं, वहीं उपग्रह के जरिए इन्हें राज्यों से बाहर भी देखा जा सकता है। दूसरी ओर क्षेत्रीय भाषा उपग्रह सेवा के अंतर्गत प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों (विशिष्ट उपग्रह कार्यक्रम) को संबंधित राज्य के अलावा अन्य राज्यों में उपग्रह के जरिए देखा जा सकता है।

3.15.2 दूरदर्शन के क्षेत्रीय भाषाओं के उपग्रह चैनल 1 अक्तूबर, 1993 से शुरू हुए। इनके जरिए असमिया, बंगला, गुजराती, कन्नड़, मलयालयम, मराठी, उड़िया, तमिल और तेलुगु में कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। पहले दूरदर्शन के चार उपग्रह चैनलों से सप्ताह में पांच दिन प्रसारण किया गया।

1 फरवरी, 1994 से तीन अलग चैनलों (कन्नड़, मलयालम, तमिल और तेलुगु के लिए) डीडी–4 तथा (कश्मीरी, गुजराती, मराठी और पंजाबी के लिए) डीडी–6 का दिल्ली से उपग्रह संपर्क स्थापित किया गया।

3.15.3 15 अगस्त, 1994 से प्रत्येक भाषा के लिए अलग चैनल शुरू किया गया। राज्यों की राजधानी से उपग्रह संपर्क की व्यवस्था को क्षेत्रीय भाषा उपग्रह सेवा से समन्वित कर दिया गया। इस तरह हर भाषा के लिए अलग चैनल उपलब्ध हो जाने से जहां राज्यों के दर्शकों को सबसे व्यस्त समय में क्षेत्रीय भाषाओं में अधिक समय के कार्यक्रम उपलब्ध होने लगे, वहीं देशभर में दर्शकों को क्षेत्रीय कार्यक्रम और समाचार देखने का अवसर मिला है। क्षेत्रीय भाषा उपग्रह सेवा के अंतर्गत सूचनात्मक और मनोरंजक कार्यक्रम, फिल्में, फिल्मी गीत, धारावाहिक और नाटक आदि प्रसारित किए जाते हैं।

डीडी-तीन

3.16.1 डीडी–तीन चैनल की औपचारिक शुरुआत 14 नवंबर 1995 को हुई। प्रारंभ में इसका सीधा प्रसारण समय शाम छह बजे से रात ग्यारह बजे तक था। 14 दिसंबर 1995 से दोपहर 11.30 बजे से 1 बजे तक डेढ़ घंटे की दोपहर की सभा का प्रसारण भी शुरू किया गया है।

3.16.2 डीडी–तीन चैनल का प्रसारण जब इनसेट–दो–सी के जरिए से होने लगेगा तो प्रसारण, सुबह सात बजे मध्यरात्रि तक बढ़ाने की योजना है। इस समय इनसेट दो–बी के जरिए दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता और मद्रास से इस चैनल के कार्यक्रमों का प्रसारण हो रहा है। इस चैनल का प्रसारण चरणबद्ध तरीके से बढ़ाया जा रहा है तथा बंगलूर और अहमदाबाद जैसे शहरों को भी इसके दायरे में लाने की योजना है।

3.16.3 डीडी–तीन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में न्यूज आवर नाम का समाचारों से संबंधित कार्यक्रम शामिल है। इसमें दिनभर के समाचारों के साथ–साथ विशेषज्ञों से इनका गहराई से विश्लेषण भी कराया जाता है। इसके अलावा समसामयिक विषय पर परिचर्चा तथा इसी तरह के कई अन्य कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इस चैनल पर साहित्य, रंगमंच, नृत्य, संगीत तथा अन्य कला विधाओं के साथ–साथ पर्यावरण, उपभोक्ताओं के अधिकार, स्त्री–पुरुष में भेदभाव, जैसे अनेक मुद्दों पर कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। डीडी–तीन पर बीबीसी और डिस्कवरी चैनल के कुछ कार्यक्रम शामिल करने के लिए विशेष प्रबंध किए गए हैं।

अंतर्राष्ट्रीय चैनल

3.17.1 दूरदर्शन इंडिया का शुभारंभ 14 मार्च 1995 को एशियासैट उपग्रह के जरिए हुआ। इसके प्रसारण के लिए एशियासैट–एक के ट्रान्सपोडर को छह महीने के लिए किराए पर लिया गया था। इसकी सेवा सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह नौ बजे से दोपहर बारह बजे तक थी। यह सेवा 13 सितंबर 1995 को छह महीने की अवधि समाप्त हो जाने के बाद रुक गई। पैनमसैट–4 ट्रांसपोंडर पर एक नया ट्रांसपोंडर किराए पर लेने के बाद 15 अक्तूबर, 1995 से यह सेवा फिर शुरू की गई। प्रसारण का समय पहले जैसा ही है लेकिन अब यह सेवा सप्ताह के सभी दिनों में उपलब्ध है।

3.17.2 कार्यक्रम मिक्स में समाचार, सामयिक घटनाक्रम, व्यापार राउंड अप, फिल्म आधारित कार्यक्रम, शास्त्रीय संगीत और नृत्य, संगीत, पारिवारिक धारावाहिक आदि शामिल हैं। पैस–4 ट्रांसपोंडर के जरिए उपलब्ध कराई गई। यह सेवा सार्क देशों, खाड़ी, पश्चिमी एशिया, मध्य एशिया, उत्तरी अफ्रीका तथा यूरोप में देखी जा सकती है।

दूरदर्शन-सी.एन.एन.आई चैनल

3.18.1 30 जून 1995 से प्रभावी सी.एन.एन. समझौते के तहत सी.एन.एन. को दूरदर्शन के एक ट्रांसपोंडर पर चौबीसों घंटे समाचार और सूचना कार्यक्रम के पुनर्प्रसारण की अनुमति दी गई। पुनश्चय, दूरदर्शन को सप्ताह के सातों दिन कम से कम ढाई घंटे और अधिक से अधिक साढ़े आठ घंटे का समाचार और सामयिक घटनाक्रम के कार्यक्रम डालने का अधिकार है। इस समझौते के तहत सी.एन.एन. को दूरदर्शन कार्यक्रमों पर संपादकीय नियंत्रण नहीं है। हालांकि सी.एन.एन. आई के कार्यक्रमों पर दूरदर्शन का कोई संपादकीय नियंत्रण नहीं होगा लेकिन सी.एन.एन. अपने कार्यक्रमों के मामले में दूरदर्शन के प्रसारण/विज्ञापन नियम का पालन करेगा। इस व्यवस्था के अलावा दूरदर्शन के उपग्रह चैनल पर सी.एन.एन. को दिनभर में कम से कम एक घंटे का मनोरंजन और सामयिक विषयों के कार्यक्रम प्रसारित करने की अनुमति दी गई। इस सिलसिले में कार्यक्रम को प्रसारण के लिए स्वीकार करने या न करने का दूरदर्शन का फैसला अंतिम और दोनों पक्षों पर बाध्यकारी होगा। उपग्रह कार्यक्रमों के लिए, जिसमें कार्यक्रम और दूरदर्शन के खुद के निर्मित कार्यक्रम शामिल हैं, विज्ञापन से प्राप्त राजस्व दूरदर्शन और सी.एन.एन. के बीच आधा–आधा बांटा जाएगा।

दूरदर्शन कार्यक्रम सलाहकार समिति

निम्न स्थानों पर कार्यरत

दिल्ली, कलकत्ता, मुंबई, मद्रास, बंगलौर, तिरुअनंतपुरम, श्रीनगर, जालंधर, भुवनेश्वर, जयपुर, गुवाहाटी, लखनऊ, अहमदाबाद और हैदराबाद

कार्यक्रम सलाहकार समिति

3.19.1 विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञों की राय जाने के उद्देश्य से प्रमुख दूरदर्शन केंद्रों में कार्यक्रम सलाहकार समिति का गठन किया गया है। विशेषज्ञों के पैनल में क्षेत्र विशेष में उपलब्ध अनेक विषयों और रुचि रखने वाले ग्रुप के लोग शामिल हैं। दूरदर्शन के ऐसे केंद्रों के नाम कोष्ठक में दिए जा रहे हैं जहां सलाहकार समिति काम कर रही है।

3.19.2 गैर–सरकारी सदस्यों के रूप में विशेषज्ञों का नामांकन संबंधित राज्यों के सूचना विभाग से सलाह मशविरा करके किया जाता है। कार्यक्रम सलाहकार समिति पिछली बैठक के बाद से प्रसारित कार्यक्रमों की समीक्षा करती है तथा कार्यक्रम में सुधार और आगे की अवधि की योजना तथा कार्यक्रम निर्माण से संबंधित मुद्दे पर सुझाव भी देती है। बैठक की अध्यक्षता संबंधित केंद्र के निदेशक करते हैं तथा इंजीनियरिंग प्रभाग के प्रमुख और कार्यक्रम प्रभाग के अधिकारी उनका सहयोग करते हैं। इसके अलावा दूरदर्शन केंद्र अंतर संचार माध्यम प्रचार समन्वय समिति से भी जुड़ा हुआ है ताकि राज्य में विभिन्न मीडिया एककों के साथ कार्यक्रमों को समन्वित और प्रगति को मानीटर किया जा सके।

दर्शक अनुसंधान

3.20.1 दूरदर्शन की दर्शक अनुसंधान इकाई का मुख्य कार्य दूरदर्शन नेटवर्क पर प्रसारित कार्यक्रमों के बारे में फीडबैक प्रदान करना है। 19 शहरों में दर्शक अनुसंधान इकाई की स्थापना की गई है और निदेशालय स्तर पर दर्शक अनुसंधान इकाई द्वारा अनुसंधान कार्य का समन्वय किया जाता है। दर्शक अनुसंधान के कार्यों का प्रबंध व्यावसायिक तौर पर प्रशिक्षित लोग करते हैं। दूरदर्शन राष्ट्रीय, मैट्रो और मुख्य क्षेत्रीय नेटवर्क पर कार्यक्रम लोकप्रियता (रेटिंग) देने की व्यवस्था 1993 में शुरू की गई और इसे मजबूत बनाया गया। 30 शहरों में गठित पैनल से सूचनाएं एकत्र की जाती हैं और काम को इस तरह संगठित किया जाता है कि हर सप्ताह 18 नगरों से 4000 लोगों से प्राप्त की गई सूचनाएं उपलब्ध हो सकें। पैनल के सदस्य प्रत्येक शहर के विभिन्न वर्गों के टेलीविजन दर्शक हैं। इस रेटिंग (कार्यक्रम लोकप्रियता) को दूरदर्शन और प्रमुख समाचार पत्रों से प्रचारित किया जाता है। वर्तमान में लगभग आठ राष्ट्रीय दैनिक और साप्ताहिक पत्र नियमित रूप से कार्यक्रम लोकप्रियता के बारे में समाचार प्रकाशित करते हैं।

3.20.2 दर्शक अनुसंधान इकाई निदेशालय और केन्द्रों के लिए 'डाटा बैंक' के तौर पर भी काम करता है। विभिन्न केन्द्रों की इकाई केन्द्रों की गतिविधियों के बारे में आंकड़ों का वार्षिक संकलन तैयार करती है। मुख्यालय स्थित दर्शक अनुसंधान इकाई ने 'दूरदर्शन 1995' निकाला जिसमें मीडिया, दूरदर्शन को केन्द्र में रखकर देश में स्थिति के बारे में सूचनाओं का संग्रह है। इस पुस्तक में दी गई सूचना का विज्ञापनदाता और विज्ञापन एजेंसियों सहित संचार माध्यम अनुसंधान एजेंसी बड़े पैमाने पर उपयोग कर रही है। दर्शक अनुसंधान इकाई अन्य स्रोतों से फीड बैक एकत्र करने का काम भी कर रहीहै। नियमित रूप से किए जा रहे क्षेत्र और टेलीफोन सर्वेक्षण तथा दर्शकों के पत्र आदि के रूप में प्राप्त फीडबैक का विश्लेषण भी किया जाता है। इकाई विश्वविद्यालयों आदि के भी संपर्क में रहता है ताकि मीडिया के क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए अनुसंधान को मानीटर कर सके।

लोक सेवा संचार परिषद

3.21.1 क्विकीज, लघु फिल्म और राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण उपभोक्ता जागरूकता तथा नशीले पदार्थों की बुराई जैसे सार्वजनिक महत्व के मुद्दे पर संदेश के निर्माण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जनवरी, 1987 में लोक सेवा संचार परिषद का गठन किया गया। परिषद एक गैर सरकारी निकाय है जहां सभी सदस्य स्वयंसेवी आधार पर अपनी सेवाएं देते हैं। कार्यक्रम/क्विकीज के प्रस्तुतीकरण का खर्च जैसे प्रयोगशाला शुल्क और परिवहन आदि का वहन आमतौर से भारतीय विज्ञापन दाता समिति के जरिए विज्ञापन दाता करते हैं। इसके कला और तकनीकी पक्षों की निगरानी विज्ञापन एजेंसियों निशुल्क करती है। दूरदर्शन इन संदेशों को निशुल्क प्रसारित करता है।

3.21.2 फोर्ड फाउंडेशन के सहयोग से लोक सेवा संचार परिषद ने लोक सेवा संचार पहल शुरू किया है जिसमें

पर्यावरण, स्थायी विकास, सामाजिक न्याय और महिलाओं के मुद्दे जैसे विषयों पर जोर है। इन विषयों पर लोक सेवा फिल्म/स्पॉट वृत्त चित्र/ टेलीफिल्म बनाए और प्रसारित किए जाएंगे। परिषद सामाजिक उत्तरदायित्व पर भी अभियान शुरू कर रहा है जहां अच्छे नागरिक व्यवहार, शिष्टाचार और मिलजुलकर काम करने की भावना पर जोर होगा।

दूरदर्शन, चरण-II परियोजना : एक झलक

1. भवन–I (टावर बी) : दो भूमिगत तल, भूतल और दस मंजिलें
2. भवन–II (टावर सी) : दो भूमिगत तल, भूतल और एक मंजिल
   (सात मंजिलें भविष्य में बनाई जाएंगी)
   (चरण–I के तहतनिर्मित टावर ए दूरदर्शन निदेशालय के प्रयोग के लिए)
3. कुल मंजूर प्लिंथ क्षेत्र : 31265 वर्ग मीटर। इसके अलावा भूमिगत तल में कार पार्किंग के लिए अतिरिक्त 8413 वर्ग मीटर
4. उपलब्ध कराई जा रही सुविधाएं :

स्टूडियो :	1.	593 वर्गमीटर	--	1
(कुल आठ)	2.	425 वर्ग मीटर	--	1
	3.	234 वर्ग मीटर	--	1
	4.	133 वर्ग मीटर	--	1
	5.	50 वर्गमीटर	--	2
	6.	67 वर्गमीटर	--	1
	7.	36 वर्गमीटर	--	1
	8.	पोस्ट प्रोडक्शन कमरे	--	6
	9.	संपादन बूथ	--	25
	10.	वाइस ओवर बूथ	--	4
	11.	श्रव्य–दृश्य बूथ	--	3

5. परिव्यय :

   सरकार द्वारा मंजूर कुल राशि :8160.43 लाख रुपये

   (कार्य के लिए 4928-00 लाख रुपये और उपकरण के लिए 3232.43 लाख रुपये)

6. परियोजना पूरी करने की तिथि का लक्ष्य :

1. निर्माण कार्य	
(क) तकनीकी	सितंबर, 1996
(ख) कार्यस्थल विकास सहित संपूर्ण कार्य	जून, 1997
2. स्थापना कार्य	जनवरी, 1998
3. उद्घाटन	मार्च, 1998

दूरदर्शन : एक नज़र में

1. ट्रान्समीटर और दर्शक

ट्रान्समीटर		नं.	दर्शक		नं.
डीडी-I	-	743	डीडी-I	-	27 करोड़
डीडी-II	-	42	डीडी-II	-	10 करोड़
डीडी-III	-	4	डीडी-III	-	0.5 करोड़
संसद	-	2	अन्य	-	4 करोड़
कश्मीर	-	1			

2. दूरदर्शन परिवार

- डीडी-1 राष्ट्रीय नेटवर्क
- डीडी-2 मैट्रो
- डीडी-3 इंफ़ोटेनमेण्ट
- डीडी-4 मलयालयम
- डीडी-5 तमिल
- डीडी-6 उड़िया
- डीडी-7 बंगला
- डीडी-8 तेलुगु और पंजाबी
- डीडी-9 कन्नड़
- डीडी-10 मराठी और कश्मीरी
- डीडी-11 गुजराती
- डीडी-12 मूवी क्लब
- डीडी-13 उत्तर–पूर्व और असमिया
- डीडी-14 राजस्थान
- डीडी-15 मध्य प्रदेश
- डीडी-16 उत्तर प्रदेश
- डीडी-17 बिहार
- डीडी-18 डीडी सी एन एन
- डीडी-19 डीडी इंटरनेशनल

3. दूरदर्शन : सेवाएं

	नेटवर्क	क्षेत्रीय
• सूचना	40%	30%
• शिक्षा	25%	40%
• मनोरंजन	35%	30%
• फिल्म–आधारित	11%	10%

4. दूरदर्शन की आय पिछले पांच वर्षों में

वर्ष	रु. (करोड़ में)
1991-92	300.61
1992-93	360.23
1993-94	372.93
1994-95	398.02
1995-96	430.13

5. दूरदर्शन कार्यक्रमों के स्रोत

	नेटवर्क	क्षेत्रीय
• दूरदर्शन द्वारा निर्मित कार्यक्रम	70%	70%
• कमीशंड	3%	2%
• प्रायोजित	9%	18%
• रॉयल्टी	5%	8%
• अन्य स्रोत	13 %	2%

4
फिल्म

फिल्म प्रभाग

4.1.1 सूचना और प्रसारण मंत्रालय पिछले 47 वर्षों से फिल्म प्रभाग के द्वारा फिल्म माध्यम का उपयोग कर राष्ट्र निर्माण के कार्यों में लोगों की सक्रिय भागीदारी निश्चित कर रहा है। मंत्रालय ने देश में वृत्तचित्र आंदोलन के विकास को बढ़ावा देकर सूचना के उन्मुक्त प्रवाह में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

4.1.2 फिल्म प्रभाग अपने मुख्यालय मुंबई में वृत्तचित्रों/समाचार पत्रिकाओं, दिल्ली में कृषि, रक्षा और परिवार कल्याण पर फिल्मों तथा अपने कलकत्ता और बंगलौर के क्षेत्रीय केंद्रों पर लघु वृत्तचित्रों का निर्माण करता है। प्रभाग देशभर के 12,911 से अधिक सिनेमाघरों और क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयों, राज्य सरकारों की सचल इकाइयों, दूरदर्शन, परिवार कल्याण विभाग की क्षेत्र इकाइयों, शैक्षिक संस्थानों और स्वयंसेवी संगठनों जैसे गैर–थिएटर इकाइयों को फिल्में उपलब्ध कराता है। सिनेमाघरों के लिए प्रभाग द्वारा जारी किए जाने वाले फिल्मों में राज्य सरकारों के वृत्तचित्र और 'न्यूजरील' भी शामिल हैं। प्रभाग फिल्मों के प्रिंट, स्टाक शाट्स, वीडियो कैसेट और लघु फीचर फिल्मों के वितरण

दादा साहब फाल्के पुरस्कार विजेता दिलीप कुमार, राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा से पुरस्कार प्राप्त करते हुए

अधिकार भी बेचता है।

4.1.3 इसी तरह प्रभाग भारतीय तथा विदेशी दर्शकों के लिए फिल्मों के द्वारा भारत की छवि और इसके इतिहास का संरक्षण, संस्कृति तथा विरासत को भी प्रस्तुत करता है। प्रभाग का उद्देश्य वृत्तचित्र आंदोलन की गति को और तेज करना भी है–जो कि भारत में सूचना, संचार और अखंडता के क्षेत्र में काफी महत्व रखता है।

4.1.4 फिल्म प्रभाग का गठन मुख्यतः चार भागों से मिलकर हुआ है यथा–निर्माण, वितरण, अंतर्राष्ट्रीय वृत्तचित्र तथा लघु फिल्म समारोह और प्रशासन।

फिल्म प्रभाग : विशिष्टताएं
1995-96

• समाचार पत्रिकाओं का निर्माण	32
• वृत्त चित्र	70
• लघु/लघु फीचर फिल्म	243
• विभागीय तौर पर फिल्मों का निर्माण	56 (160 रील)
• स्वतंत्र निर्माताओं द्वारा फिल्मों का निर्माण	14 (83 रील)

निर्माण

4.2.1 मुंबई स्थित मुख्यालय के अलावा प्रभाग के तीन निर्माण केन्द्र बंगलौर, कलकत्ता और दिल्ली में हैं। प्रभाग अपने वार्षिक निर्माण कार्यक्रम की लगभग 60 प्रतिशत फिल्में अपने ही निर्देशकों और निर्माताओं के जरिए बनाता है। अनेकानेक विषयों पर वृत्तचित्रों का निर्माण किया जाता है जिनमें मानव गतिविधि के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया जाता है।

4.2.2 आमतौर से, प्रभाग व्यक्तिगत क्षमताओं को बढ़ावा देने और देश में वृत्त–चित्र आंदोलन को तेज करने के लिए अपने निर्माण कार्यक्रम का लगभग 40 प्रतिशत समय स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं को देने के लिए आरक्षित रखता है। प्रभाग वृत्तचित्रों के निर्माण में विभिन्न मंत्रालयों और सरकारी विभागों सहित सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों को सहयोग भी प्रदान करता है।

4.2.3 निर्माण विभाग का न्यूजरील खंड पाक्षिक समाचार पत्रिकाएं तैयार करता है और अभिलेखागार से संबंधित सामग्री संकलित भी करता है। प्रभाग की कार्टून फिल्म इकाई वृत्तचित्रों के लिए एनिमेशन कथाक्रम और समाचार पत्रिकाएं तैयार करती है। अब यह इकाई कठपुतली फिल्मों के निर्माण के लिए पूरी तरह सुसज्जित है। इकाई ने लगातार एनिमेशन फिल्मों का निर्माण कर एक अलग पहचान बनाई है। जिसे दुनिया भर में मान्यता मिली। टीका–टिप्पणी अनुभाग अंग्रेजी और हिंदी से विदेशी भाषाओं के अलावा 14 भारतीय भाषाओं में फिल्मों और समाचार पत्रिकाओं की डबिंग का काम देखता है।

4.2.4 प्रभाग की दिल्ली इकाई की जिम्मेदारी कृषि और रक्षा मंत्रालयों तथा परिवार कल्याण विभाग के लिए उपदेशात्मक और प्रेरक फिल्मों का निर्माण है।

4.2.5 कलकत्ता और बंगलौर स्थित प्रभाग के क्षेत्रीय केन्द्र सामयिक सामाजिक विषयों पर 16 एम.एम. की ग्रामोन्मुख लघु फीचर फिल्में बनाते हैं। इन फिल्मों की कथाएं इस प्रकार विकसित की जाती हैं ताकि वे सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों जैसे परिवार कल्याण तथा साम्प्रदायिक सद्भाव के संदेश को फैला सकें और दहेज, बंधुआ मजदूर, अस्पृश्यता आदि बुराइयों की ओर ध्यान आकर्षित करें।

4.2.6 तमिल, तेलुगु, कन्नड, बंगला, मलयालम, असमिया, उड़िया और उत्तर–पूर्व भारत तथा दक्षिण भारत की विभिन्न बोलियों में ग्रामोन्मुख लघु फीचर फिल्में निर्मित की जाती हैं। स्थानीय भाषा और क्षेत्र विशेष की खुशबू बरकरार

रखने के लिए इनमें कथा–लेखन और अभिनय के लिए स्थानीय लोगों के कौशल का इस्तेमाल किया जाता है। इस तरह के निर्माण का ग्रामीण आबादी के साथ नजदीकी तादात्म्य होने के कारण काफी प्रभाव पड़ा है, खासतौर से लोगों को सामाजिक और आर्थिक न्याय दिलाने तथा साथ ही उनके भविष्य की संभावनाओं को बेहतर बनाने की योजना में। यह योजना अब उत्तर तथा पश्चिमी क्षेत्र की भाषाओं और बोलियों में भी फिल्म बनाकर लागू की जा रही है।

वितरण

4.3.1 फिल्म प्रभाग के वितरण खंड के शाखा कार्यालय 1500 सिनेमाघरों पर एक के अनुपात में हैं। वर्तमान में, बंगलौर, मुंबई, कलकत्ता, हैदराबाद, लखनऊ, मद्रास, मदुरै, नागपुर, तिरुअनंतपुरम् और विजयवाड़ा में 10 वितरण शाखा कार्यालय हैं। वर्ष 1995-96 में प्रभाग ने देशभर के 12,911 सिनेमाघरों को फिल्में उपलब्ध कराईं जिनके दर्शकों की संख्या नौ से दस करोड़ प्रति सप्ताह है।

4.3.2 वितरण खंड क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की सचल इकाइयों और केन्द्र तथा राज्य सरकारों के विभागों को 16 एम.एम. प्रिंट की आपूर्ति भी करता है। एक सामान्य आकलन के अनुसार इन इकाइयों द्वारा प्रत्येक सप्ताह लगभग चार से पांच करोड़ लोगों को फिल्में दिखाई जाती हैं। इसके अलावा वृत्तचित्र भी दूरदर्शन के राष्ट्रीय और क्षेत्रीय नेटवर्क पर प्रसारित किए जाते हैं। अप्रैल 1995 से मार्च 1996 के बीच प्रभाग की 57 फिल्में प्रसारण के लिए दूरदर्शन को जारी की गई। देशभर के शैक्षिक संस्थान और सामाजिक संगठन प्रभाग के वितरण शाखा कार्यालय की लाइब्रेरी से इसकी फिल्में उधार ले जाते हैं।

4.3.3 वीडियो कैसेट रेलवे, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, केंद्र और राज्य सरकार के विभागों शैक्षिक संस्थानों और निजी खरीदारों को गैर व्यावसायिक प्रयोग के लिए बेचे जाते हैं। अप्रैल 1995 से मार्च 1996 तक गैर व्यावसायिक प्रयोग के लिए 1799 कैसेट बेचे गए।

4.3.4 विदेश मंत्रालय का विदेश प्रचार विभाग चुनिंदा फिल्मों के प्रिंट विदेश स्थित भारतीय मिशन को वितरित करता है। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और निजी एजेंसियां फिल्मों के अंतर्राष्ट्रीय वितरण की व्यवस्था करती हैं। ये फिल्में विदेशी वीडियो और टी.वी. नेटवर्क को रायल्टी के आधार पर

वरिष्ठ वृत्त चित्र निर्माता श्री बी.डी. गर्गा को उनकी जीवन पर्यन्त उपलब्धि के लिए डॉ. व्ही शांताराम पुरस्कार प्रदान करते हुए मृणाल सेन

भी दी जाती है।

अंतर्राष्ट्रीय वृत्त चित्र और लघु फिल्म समारोह

4.4.1 फिल्म प्रभाग को मुंबई अंतर्राष्ट्रीय वृत्त चित्र, लघु और एनिमेशन फिल्म समारोह आयोजित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह द्विवार्षिक समारोह है। चौथा मुंबई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 29 जनवरी से 5 फरवरी 1996 तक आयोजित किया गया। इस बार समारोह में 55 देशों ने भाग लिया। इसमें विभिन्न वर्गों में 290 फिल्में दिखाई गईं। समारोह की मुख्य विशेषता थी वरिष्ठ वृत्त चित्र निर्माता श्री बी.डी. गर्गा को उनकी जीवन पर्यन्त उपलब्धि के लिए 'डाक्टर व्ही शांताराम पुरस्कार' से सम्मानित किया जाना।

प्रशासन

4.5.1 प्रशासन खंड प्रभाग के अन्य खंडों को वित्त, कार्मिक, भंडार और उपकरण जैसी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराता है। प्रतिष्ठान, भंडार, लेखा, फैक्ट्री प्रबंध और सामान्य प्रशासन से संबंधित सभी मामलों के लिए यह उत्तरदायी है।

निष्पादन

4.6.1 अप्रैल 1995 से मार्च 1996 के दौरान प्रभाग ने 32 समाचार पत्रिकाओं और 70 वृत्त–चित्रों/लघु फीचर फिल्मों (243 रील) का निर्माण किया। इनमें से 56 फिल्मों (160 रील) का निर्माण विभागीय तौर पर और 14 फिल्मों (83रील) का निर्माण स्वतंत्र निर्माताओं द्वारा किया गया।

4.6.2 प्रभाग सांप्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय अखंडता, अस्पृश्यता निवारण, परिवार कल्याण कार्यक्रम आदि जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियानों को अपने वृत्त–चित्रों, समाचार पत्रिकाओं तथा 16 एम.एम. की लघु फीचर फिल्मों के द्वारा लगातार प्रचार और संचार सहयोग उपलब्ध कराता है।

4.6.3 प्रभाग द्वारा जिन महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियानों के लिए फिल्म बनाई गई हैं– (i) पल्स पोलियो टीकाकरण (ii) रोजगार गारंटी योजना (iii) नया प्रकाश (शराब के बुरे प्रभावों पर), (iv) कवि सम्मेलन (परिवार कल्याण कार्यक्रम पर), (v) शैतान का चक्र (दहेज समस्या पर), (vi) आपसी विश्वास (कर दाताओं के अधिकार और दायित्व) तथा (vii) माझी (राष्ट्रीय अखंडता पर)।

4.6.4 रिपोर्ट की अवधि में प्रभाग ने महात्मा गांधी की जीवनी पर एक फिल्म पूरी की। अन्य अनेक महत्वपूर्ण व्यक्तियों पर कई फिल्में निर्माणाधीन हैं।

4.6.5 ग्रामीण विकास पर मल्टी–मीडिया अभियान के एक हिस्से के तौर पर फिल्म प्रभाग ने ग्रामीण जनता के लाभ/उत्थान के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा लागू की जा रही योजनाओं पर 10 विशेष फिल्में बनाईं। प्रभाग नई दिल्ली में 9-10 अक्तूबर 1995 को हुए पंचायतों के अध्यक्षों के सम्मेलन पर 45-60 मिनट अवधि की फिल्म भी तैयार कर रहा है। इस सम्मेलन में प्रधानमंत्री और अन्य केंद्रीय मंत्रियों ने भाग लिया था। इस फिल्म में सम्मेलन में भाग लेने वालों के साक्षात्कार और 73वां संवैधानिक संशोधन के बाद पंचायतों के पुनर्गठन के बारे में उनके विचार शामिल होंगे।

4.6.6 विश्व सिनेमा के सौ वर्ष पूरे होने और भारत में सिनेमा के आगमन समारोह के अवसर पर प्रभाग ने एक फिल्म बनाई जिसका शीर्षक था 'आई एम 100 ईयर्स यंग', 'फ्लैश बैक' शीर्षक के तहत इस फिल्म का एक लघु रूप भी तैयार किया गया है।

राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर बनाई गई फिल्में

- पल्स पोलिया टीकाकरण
- रोजगार गारंटी योजना
- नया प्रकाश (शराब के दुष्प्रभाव)
- परिवार कल्याण
- दहेज प्रथा की बुराई (शैतान का चक्र)
- करदाताओं के अधिकार और दायित्व
- राष्ट्रीय अखंडता

4.6.7 प्रभाग विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लेता रहा है। अप्रैल 1995 से मार्च 1996 के दौरान प्रभाग ने तीन राष्ट्रीय और 9 अंतर्राष्ट्रीय समारोहों में भाग लिया जिनमें क्रमशः 42 और 21 फिल्में दिखाई गईं।

राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा से वर्ष 1994 का सर्वश्रेष्ठ अभिनेता पुरस्कार लेते हुए नाना पाटेकर

इन समारोहों में इसकी अनेक फिल्मों को पुरस्कार और मान्यता मिली।

राजस्व

4.7.1 अप्रैल 1995 से मार्च 1996 के दौरान प्रभाग ने रंगमंच के क्षेत्र में 39 वृत्त–चित्रों और 25 समाचार पत्रिकाओं के 21,691 प्रिंट जारी किए। प्रभाग ने भारत और विदेशों में गैर–व्यावसायिक प्रयोग के लिए अपनी फिल्मों के 417 प्रिंट और 1799 वीडियो कैसेट भी बेचे। वर्ष 1995-96 के दौरान प्रभाग को कुल 642.12 लाख रुपये के राजस्व की प्राप्ति हुई। इनमें स्टाक शाट्स की बिक्री से प्राप्त 5.58 लाख रुपये भी शामिल हैं।

फिल्म समारोह निदेशालय (डी.एफ.एफ.)

4.8.1 अच्छे सिनेमा को बढ़ावा देने के मुख्य उद्देश्य के साथ ही भारत सरकार ने 1973 में सूचना और प्रसारण मंत्रालय के तहत फिल्म समारोह निदेशालय (डी.एफ.एफ.) की स्थापना की। इसके बाद से ही निदेशालय ने प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय फिल्म समारोह का आयोजन कर भारतीय सिनेमा के लिए एक मंच उपलब्ध कराया है। यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक समझ और मित्रता को बढ़ावा देने का एक मंच भी साबित हुआ है। देश के भीतर इसने विश्व सिनेमा को आम लोगों तक पहुंचाने में नए आयाम बनाए हैं।

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

4.9.1 42वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह के निर्णायक मंडल ने अप्रैल 1995 से फिल्मों की समीक्षा शुरू की। फीचर फिल्म निर्णायक मंडल की अध्यक्षता श्री चेतन आनंद ने और गैर फीचर फिल्म निर्णायक–मंडल की अध्यक्षता श्री कुमार साहनी ने की। सिनेमा पर सर्वोत्कृष्ट लेखन का निर्णय करने के लिए गठित समिति की अध्यक्ष सुश्री उदय तारा नायर थीं। पुरस्कार के लिए 105 फीचर फिल्म, 72 गैर–फीचर–फिल्म, 15 किताबें और 21 लेख शामिल किए गए। 17 जुलाई, 1995 को नई दिल्ली में विज्ञान भवन में आयोजित एक समारोह में राष्ट्रपति डॉक्टर शंकर दयाल शर्मा ने पुरस्कार प्रदान किए। श्री रितुपर्ण घोष द्वारा निर्देशित 'उन्नीशे अप्रैल' (बंगला) को सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार मिला जबकि श्री नंदन कुडयाडी की 'रसयात्रा' को सर्वश्रेष्ठ गैर–फीचर फिल्म का पुरस्कार

फिल्म समारोह निदेशालय की गतिविधियां

- राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों का आयोजन
- भारतीय पैनोरमा वर्ग की फिल्मों का चयन
- सरकार की तरफ से विशेष फिल्म कार्यक्रम
- प्रिंटों का संग्रह और उनका प्रलेखन
- भारत और विदेशों में सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रमों का आयोजन और उसमें भागीदारी
- विदेशी में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भागीदारी
- भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों का आयोजन

दिया गया। सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक का पुरस्कार पद्मश्री भारत गोपी की 'अभिनयम् अनुभवम्' को दिया गया और 1994 के लिए सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक का पुरसकार सुश्री रश्मि दुरैस्वामी को देने की घोषणा की गई। वर्ष 1994 का दादा साहेब फाल्के पुरस्कार वरिष्ठ अभिनेता श्री दिलीप कुमार को भारतीय सिनेमा में उनके बहुमूल्य योगदान के लिए दिया गया।

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह

4.10.1 भारत का 27वां अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह नई दिल्ली में 10-20 जनवरी, 1996 तक आयोजित किया गया। इस समारोह में 1987 के समारोह के बाद पहली बार प्रतियोगी वर्ग की वापसी हुई। इस वर्ग में 13 एशियाई देशों की 19 फीचर फिल्में शामिल की गई। इसके निर्णायक मंडल की अध्यक्षता फ्रांस की मशहूर नायिका और निर्देशिका जीन मोरे ने की। निर्णायक मंडल के अन्य सदस्य थे–हंगरी के फिल्मकार मार्ता मेजरस्जारोस जिनकी फिल्में पुनरावलोकन खंड में दिखाई गई, जापान के तादाव सातो, अमरीका की ऑस्कर पुरस्कार विजेता सुश्री सूसन सीडेलमैन और जानेमाने भारतीय फिल्म निर्देशक श्याम बेनेगल।

4.10.2 इस समारोह में विभिन्न वर्गों में भारत सहित 43 देशों की 217 फीचर और 14 गैर–फीचर फिल्में थीं। इनमें सबसे अधिक 35 देशों की 96 फिल्में विश्व सिनेमा खंड में थी। ये ऐसी फिल्में थी जिन्होंने विभिन्न फिल्म समारोहों में पुरस्कार जीते या मान्यता प्राप्त की। पुनरावलोकन खंड में कनाडा के डेनिस आर्कंड, अमरीका के जीन केली, हंगरी के मार्ता मेरजारोस और इटली के नन्नी मोरेट्टी की 36 फिल्में दिखाई गई। जर्मनी के राइन विंडर फासबिंडर, चीन के झांग यिमोऊ और फ्रांस के लुइ माले की छह फिल्में श्रद्धांजलि के तौर पर दिखाई गई। सांस्कृतिक वर्ग सिनेमा की शताब्दी को समर्पित था। इसमें आरसन वेल्स की 10 फिल्में, सात भारतीय विशिष्ट फिल्में और फिल्म प्रभाग का एक वृत्त–चित्र शामिल था।

4.10.3 भारतीय पैनोरमा वर्ग में 19 फीचर और 13 गैर–फीचर फिल्में थीं जबकि भारतीय फिल्म महासंघ द्वारा चयनित मुख्यधारा वर्ग में 1995 की 12 लोकप्रिय फिल्में थीं। इसके अलावा 12 फिल्में फोकस ऑन ईरान पर दिखाई गई।

4.10.4 सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए स्वर्ण मयूर और पांच लाख रुपये का पुरस्कार चीन की ली शाओहांग की फिल्म 'ब्लश' को दिया गया। सबसे प्रतिबद्ध एशियाई महिला निर्देशक का पुरस्कार भी चीन की ही निंग यिंग को उनकी फिल्म 'ऑन द बीट' के लिए मिला। पुरस्कार के रूप में उन्हें रजत मयूर और ढाई लाख रूपये दिए गए। विशेष जूरी पुरस्कार सामूहिक रूप से दो फिल्मों, इरान की निर्देशिका रक्शन बनी इतेमाद की फिल्म 'द बल्यू वेल्ड' और लेबनान की लयला असॉफ तेंग्रोथ की फिल्म द फ्रीडम गैंग को सामूहिक रूप से दिया गया।

विदेशों में गतिविधियां

4.11.1 रिपोर्ट की अवधि के दौरान निदेशालय ने विदेशों में आयोजित 70 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लिया। अनेक भारतीय फिल्मों और फिल्मकारों ने पुरस्कार प्राप्त कर, संगोष्ठियां में भाग लेकर तथा जूरी सदस्य के रूप में काम करके अंतर्राष्ट्रीय फिल्म परिदृश्य में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

4.11.2 आनंद पटवर्धन की फिल्म 'फादर, सन एंड होली वार' बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में दिखाई गई। अडूर गोपालकृष्णन की फिल्म 'विधेयन' अनेक फिल्म समारोहों में शामिल की गई और इसे सिंगापुर फिल्म समारोह में विशेष जूरी पुरस्कार तथा फिपरेशी पुरस्कार मिला। श्री शाजी एन. करूण की फिल्म 'स्वाहम' को बर्गाय फिल्म समारोह में तृतीय पुरस्कार मिला। बुद्धदेव दास गुप्त की फिल्म 'चराचर' ने फ्रीबोर्ग में प्रिक्स दयू पब्लिक पुरस्कार जीता। पद्मकुमार की फिल्म 'सम्मोहन' को फुकुओका एशियाई फिल्म समारोह में शामिल किया गया। इसे विशेष पुरस्कार भी मिला। श्री पद्मकुमार ने समारोह में भाग लिया। इसे मानहेम में भी विशेष पुरस्कार प्राप्त हुआ। विनोद चोपड़ा की फिल्म '1942 एक लव स्टोरी' अनेक फिल्म समारोहों में दिखाई गई। गैर–फीचर फिल्म 'द क्लैप ट्रेप' मैन फिल्म समारोह, रूस, नार्वे फिल्म समारोह और यामागारा फिल्म समारोह के प्रतियोगिता वर्ग में दिखाई गई। इस फिल्म ने विशेष पुरस्कार जीता। गोविंद निहलानी की फिल्म 'द्रोहकाल' मास्को, मांट्रियल और दमिश्क फिल्म समारोहों में दिखाई गई। श्री गोविंद निहालनी को दमिश्क फिल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार मिला और उन्होंने यह पुरस्कार स्वयं प्राप्त किया। दमिश्क में पकरीस्वामी द्वारा निर्देशित और फिल्म प्रभाग द्वारा निर्मित गैर–फीचर फिल्म 'द लास्ट चाइल्डहुड' को तृतीय पुरस्कार और 1000 अमरीकी डालर मिला। दमिश्क फिल्म समारोह में श्री सईद अख्तर मिर्जा ने जूरी के एक सदस्य के रूप में कार्य किया। सईद मिर्जा की फिल्में पुनरावलोकन खंड में भी दिखाई गईं। मृणाल सेन की पांच फिल्में केपटाउन फिल्म समारोह के पुनरावलोकन खंड में और राष्ट्रीय फिल्म समारोह, जोहांसबर्ग में भी दिखाई गईं। 'पाथेर पांचाली' की मांग बनी हुई है और इस्तंबूल अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में इसे उत्कृष्ट फिल्म घोषित किया गया। सुशांत मिश्र की फिल्म 'इन्द्रधनुर छाई' कान्स फिल्म समारोह के अंसर्टैन रीगर खंड में दिखाई गई। इस फिल्म को रूस में सोशी अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए ग्रांड प्रिक्स पुरस्कार मिला।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान

4.12.1 विभिन्न देशों में भारतीय फिल्मों के 20 फिल्म सप्ताह आयोजित किए गए। तुर्की में सत्यजित राय की फिल्मों का पुनरावलोकन और सीरिया में 10 भारतीय फिल्मों का समारोह आयोजित किया गया। मृणाल सेन की पांच फिल्में केपटाउन फिल्म समारोह के पुनरावलोकन खंड में और राष्ट्रीय फिल्म समारोह, जोहान्सबर्ग में भी दिखाई गईं। जमैका में शबाना आजमी की फिल्मोंका पुनवरावलोकन आयोजित किया गया। नीदरलैंड में भारतीय महिला निर्देशकों की फिल्मों का पुनरावलोकन आयोजित किया गया तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के तहत इटली में 25 भारतीय फिल्में दिखाई गईं। पोलैंड, जर्मनी और तुर्कमेनिस्तान में भारतीय फिल्म सप्ताह आयोजित किए गए। त्रिपोली में पहला भारतीय फिल्म समारोह अप्रैल 1995 में आयोजित किया गया।

4.12.2 भारत में दिखाई गई विदेशी फिल्मों में, नई दिल्ली, हैदराबाद और सिकंदराबाद में दिसंबर 1994 में दिखाई गई सीरिया की छह फिल्में, नई दिल्ली और मद्रास में सितंबर 1995 में दिखाई गई पुर्तगाल की फिल्में शामिल हैं। अप्रैल 1995 में इस्राइल की फिल्में मुम्बई, तिरुअनंतरपुरम और जमशेदपुर में दिखाई गईं। पश्चिमी आस्ट्रेलिया फिल्म समारोह का आयोजन सितम्बर 1995 में नई दिल्ली और मद्रास में किया गया। सिनेमा के सौ वर्ष पूरे होने पर नई दिल्ली और मद्रास में अक्तूबर 1995 में फ्रांसीसी फिल्मों का समारोह आयोजित किया गया।

राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र

4.13.1 राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केंद्र बच्चों और युवाओं के लिए कथा फिल्में, टेलीविजन सीरियल, लघु फिल्मों, एनीमेशन फिल्मों के निर्माण में लगा हुआ है। यह केंद्र विदेशी

फिल्मों के अधिकार भी खरीदता है और उन्हें भारतीय भाषाओं में डब करके भारत में प्रदर्शित भी करता है।

4.13.2 केंद्र द्वारा निर्मित कई फिल्में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में दिखाई गई हैं और उन्हें कई पुरस्कार मिले हैं। यह केंद्र हर दूसरे वर्ष अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित करता है। ऐसा नौवां फिल्म समारोह हैदराबाद में नवंबर, 1995 में हुआ। इसमें 25 देशों की 143 फिल्में प्रदर्शित की गईं। केन्द्र की फिल्मों ने 1995 में 18 अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लिया।

4.13.3 इस वर्ष के दौरान दो हिंदी फिल्में—संतोष सिवान द्वारा निर्देशित 'हालो' तथा महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध समाजसेवी के जीवन पर आधारित रमेश देव द्वारा निर्देशित सेनानी साने गुरुजी पूरी की गई।

4.13.4 केन्द्र सिंदबाद जहाजी की कहानी पर आधारित एनीमेशन फिल्म का डब किया हुआ संस्करण दूरदर्शन के राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्रसारित कर रहा है। इससे पहले यह केंद्र ज्यादा से ज्यादा दर्शकों के लिए पांच फिल्में (तीन तेलुगु, एक तमिल और एक हिंदी में) डब कर चुका है। इसके अलावा चार फीचर फिल्में तथा तीन लघु फिल्में, जिनके अधिकार केंद्र द्वारा प्राप्त कर लिए गए हैं, हिंदी में डब की गई हैं।

4.13.5 केंद्र द्वारा निर्मित फिल्में जिला आधार पर एकमुश्त कार्यक्रम के तहत दिखाई जाती हैं। इस वर्ष 85 कार्यक्रमों में 6,500 शो दिखाए गए जिन्हें 25 लाख लोगों ने देखा। इन कार्यक्रमों को नए क्षेत्रों में ले जाने के विशेष प्रयास किए गए हैं।

भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार

4.14.1 भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार का मुख्य

भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार
(गतिविधियां)

संरक्षण		**रील की संख्या** 16 मि.मी.	35 मि.मी.
फिल्मों की व्यापक जांच		77	1,474
फिल्मों की नियमित जांच		2,170	18,804
सुरक्षित स्थानों पर स्थानांतरित नाइट्रेट रील		22 (6,047 मीटर)	
फिल्म संस्कृति का प्रसार			
वितरण लाइब्रेरी सदस्य	8 (नए)	80 (नवीनीकृत)	88 (कुल)
वितरण लाइब्रेरी सदस्यों को सप्लाई की गई फिल्मों की संख्या		135	
विशेष अवसरों पर सप्लाई की गई फिल्में		275	
संयुक्त प्रदर्शन		196	
फिल्म मूल्यांकन पाठ्यक्रमों के लिए सप्लाई की गई फिल्में		135	
अकादमिक प्रदर्शन के लिए एफ.टी.आई.आई. को सप्लाई की गई फिल्में		377	
अवलोकन के लिए सांसदों को सप्लाई की गई फिल्मों की संख्या		1	
निर्माताओं/कॉपीराइट धारकों को वीडियो कापीइंग के लिए सप्लाई की गई फिल्में		31	
अनुसंधान कार्यकर्त्ताओं के लिए देखने की सुविधा का विस्तार		29 भारतीय 7 विदेशी	
दिखाई गई फिल्मों की संख्या		170	

भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार
(1995-96 के दौरान उपलब्धियां)

मद	31.12.94 तक	जनवरी 95 से मार्च 96	31.3.96 तक
फिल्में	13,031	252	13,283
वीडियो कैसेट	1,216	107	1,323
पुस्तकें	21,429	579	22,008
प्रत्रिकाएं	128	(-) 9	119
सजिल्द पत्रिकाएं	570	166	736
स्क्रिप्ट	21,403	306	21,709
पहले से रिकार्ड किए गए कैसेट	289	103	392
फोटो (स्टील्स)	98,620	1,740	1,00,360
दीवार पोस्टर	6,478	572	7,050
गीत पुस्तिकाएं	6,424	671	7,095
ऑडियो टेप्स (मौखिक इतिहास)	153	--	153
प्रेस की कतरनें	1,36,273	--	1,36,273
पेम्फलेट/फोल्डर	7,312	304	7,616
स्लाइड	3,436	578	4,014
माइक्रोफिसोह	42	--	42
माइक्रोफिल्म	1,957	--	1,957
डिस्क रिकार्ड	1,904	483	2,387

उद्देश्य फिल्मों का संरक्षण और जीर्णोद्धार है। यह दो स्तरों पर किया जाता है। पहला है आदर्श भंडारण स्थिति में फिल्मों का संरक्षण। इसके बावजूद कुछ पुरानी फिल्में समय के साथ ही खराब हो सकती हैं। इस तरह के फिल्मों की पहचान की जाती है और उनके पूरी तरह नष्ट हो जाने से पहले ही उनकी कापी कर ली जाती है। यह दूसरे चरण में किया जाता है। भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार की महत्वपूर्ण गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा दिया जा रहा है।

4.14.2 भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार का मुख्यालय पुणे में है और इसके तीन क्षेत्रीय कार्यालय बंगलौर, कलकत्ता और तिरुअनंतपुरम में हैं। इसकी 16 मिलीमीटर की फिल्म वितरण लाइब्रेरी द्वारा, विशेषज्ञ अवसरों, जयंती समारोहों, सिंहावलोकन, आदि के अवसरों पर 35 मिलीमीटर की फिल्में भी उपलब्ध कराई जाती हैं। बंगलूर, कलकत्ता, मुंबई, हैदराबाद और तिरुअनंतपुरम् के महत्वपूर्ण केंद्रों में नियमति रूप से संयुक्त प्रदर्शनी के जरिए दर्शकों को भारतीय सिनेमा के इतिहास और सर्वश्रेष्ठ विश्व सिनेमा की झलक मिलती है।

4.14.3 भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार मई 1969 से अंतर्राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार महासंघ का सदस्य है। इससे अभिलेखागार को संरक्षण तकनीक, प्रलेखन, ग्रंथ–सूची आदि के बारे में विशेषज्ञ सुझाव और सामग्री हासिल करने तथा अभिलेखागार आदान–प्रदान कार्यक्रम के तहत दुर्लभ

फिल्मों के आदान–प्रदान का मौका मिलता है।

4.14.4 अभिलेखागार के नए भवन में वातानुकूलित भूमिगत कक्ष है जिनमें मैनुअल मोबाइल भंडारण व्यवस्था में 1,50,000 रीलों को रखने की क्षमता है। इससे बड़ी संख्या में अभिलेखागार में रखी फिल्मों के केंद्रीयकृत भंडारण और आसनी से उनकी जांच तथा रख–रखाव की सुविधा प्राप्त हुई है। इसमें 330 सीटों का प्रेक्षागृह तथा 30 सीटों वाला प्रिव्यू–थियेटर है जहां सदस्यता के आधार पर भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार की फिल्मों का प्रदर्शन तथा भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान के विद्यार्थियों के लिए बराबर प्रदर्शन होता रहता है।

4.14.5 भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार हर वर्ष पुणे में चार सप्ताह का फिल्म मूल्यांकन पाठ्यक्रम आयोजित करता है तथा अन्य एजेंसियों के साथ मिलकर विभिन्न अन्य केंद्रों पर अनेक अल्पावधि पाठ्यक्रम भी चलाता है।

4.14.6 भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार ने शताब्दी सिनेमा समारोह की एक अग्रणी एजेंसी के तौर पर 1995-96 के दौरान पुनरावलोकन और गोष्ठियां आदि अनेक समारोहों का आयोजन किया। सिनेमा शताब्दी का राष्ट्रीय स्तर का समारोह हैदराबाद में 26 नवंबर, 1995 को उद्घाटन समारोह के साथ शुरू हुआ।

4.14.7 भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के पास अपनी पुस्तक लाइब्रेरी में भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा तथा अन्य संबंधित कलाओं पर अद्वितीय पुस्तकों और पत्रिकाओं का संग्रह है। प्रलेखन विभाग फोटो, पुस्तिकाएं, दीवार पोस्टर, डिस्क रिकार्ड, ऑडियो टेप, फिल्म समीक्षा, लेख आदि के माध्यम से सूचनाएं और सहायक सामग्री एकत्र करता है। भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार की हाल की प्राप्तियों का विस्तृत ब्यौरा दिया गया है।

भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे

4.15.1 पुणे स्थित भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान में फिल्म शाखा और टेलीविजन शाखा शामिल है। फिल्म शाखा द्वारा सिनेमा में डिप्लोमा कार्यक्रम चलाए जाते हैं ताकि (1) निर्देशन, (2) सिनेमेटोग्राफी (3) ध्वन्यांकन एवं ध्वनि इंजीनियरी तथा (4) फिल्म संपादन में विशेषज्ञता प्रदान करते हैं। इस संस्थान ने नए शिक्षा सत्र में निम्नलिखित तीन नए पाठ्यक्रम शुरू किए है : (1) सीनिक डिजाइन में डिप्लोमा (2) फिल्म निर्माण में डिप्लोमा (फिल्म और टेलीविजन), (3) अभिनय अल्पावधि सर्टिफिकेट कोर्स (फिल्म और टेलीविजन)

4.15.2 टेलीविजन शाखा द्वारा दूरदर्शन कर्मचारियों को सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। टेलीविजन कार्यक्रमों के निर्माण और तकनीकी संचालनों के बुनियादी पाठ्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। यह एशिया प्रशांत प्रसारण विकास संस्थान, क्वालालमपुर, मलेशिया के सहयोग से पाठ्यक्रम और कार्यशाला भी आयोजित करता है। संस्थान सेंटर इंटरनेशल डीलिएजन डिस इकोलेस डी सिनेमा एट डी टेलीविजन (सी.आई.एल.ई.सी.टी.) का सदस्य है। विभाग के सदस्य और संस्थान के विद्यार्थी सी.आई.एल.ई.सी.टी. के कार्यक्रमों में नियमित रूप से भाग लेते हैं।

4.15.3 वर्ष के दौरान संस्थान में विभिन्न पाठ्यक्रमों में 11 विदेशियों सहित 104 विद्यार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

4.15.4 भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान तथा भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार ने 22 मई से 17 जून, 1995 तक फिल्म मूल्यांकन का चार सप्ताह का पाठ्यक्रम सामूहिक रूप से आयोजित किया। विश्वविद्यालय शिक्षकों, फिल्म समीक्षकों, पत्रकारों, पुस्तकाध्यक्षों, फिल्म समिति सदस्यों तथा मीडिया अधिकारियों सहित 73 लोगो ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया। संस्थान ने सात दिन का फिल्म मूल्यांकन पाठ्यक्रम भी आयोजित किया – दो मुंबई में और एक तिरुअनंतपुरम में। स्क्रिप्ट लेखन और वीडियो फिल्म निर्माण का दस दिन का पाठ्यक्रम मसूरी में लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी में आयोजित किया गया।

4.15.5 टेलीविजन के क्षेत्र में, भारतीय सूचना सेवा के प्रोवबेशनर्स के लिए टेलीविजन निर्माण ओरिएंटेशन पाठ्यक्रम के अलावा निम्नलिखित पाठ्यक्रम संचालित किए गए :

- दूरदर्शन के केंद्र निदेशकों, कार्यक्रम नियंत्रकों, कार्यकारी निर्माताओं तथा सहायक केंद्र निदेशकों के लिए दो टेलीविजन ओरिएंटेशन पाठ्यक्रम।

सूचना और प्रसारण मंत्री श्री पी.ए. संगमा भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे में

- फिल्म क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए दो वीडियो पाठ्यक्रम।

- दूरदर्शन के वीडियो कार्यपालकों और ग्रेड–1 के कैमरामैन के लिए दो प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम।

4.15.6 मंत्रालय द्वारा गठित पाठ्यक्रम समीक्षा समिति की सिफारिश के आधार पर टेलीविजन खंड द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों के ढांचे में सुधार किया गया। इस आधार पर वर्तमान में प्रोग्राम एग्जीक्यूटिव और सहायक केंद्र निदेशकों के लिए एक प्रवेश पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है।

सत्यजित राय फिल्म और टेलीविजन संस्थान

4.16.1 सत्यजित राय फिल्म और टेलीविजन संस्थान कलकत्ता, को आरंभ में इस मंत्रालय के तहत एक सहायक कार्यालय के रूप में मान्यता दी गई। बाद में इसे अगस्त, 1995 से पश्चिम बंगाल सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1961 के तहत एक समिति के रूप में पंजीकृत किया गया। उसके बाद संस्थान की संचालन परिषद का गठन किया गया। वर्ष 1996-97 में संस्थान काम करना शुरू कर देगा।

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम

4.17.1 भारत में फिल्मों की गुणवत्ता में सुधार लाने और इसकी पहुंच का दायरा बढ़ाने के उद्देश्य से 11 अप्रैल, 1980 को राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम की स्थापना की गई। इस उद्देश्य को हासिल करने और देश में स्वस्थ फिल्म आंदोलन को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने अनेक गतिविधियां चला रखी हैं।

4.17.2 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम कम बजट वाली फिल्मों की धारणा को बढ़ावा देता है। फिल्म निर्माण में वित्त की समस्या का एक संभावित निराकरण कम बजट लेकिन उच्च गुणवत्ता वाली फिल्मों का निर्माण है।

4.17.3 निगम ने रिचर्ड एटनबरो द्वारा निर्देशित सफल फिल्म 'गांधी' से सह–निर्माण का अपना कार्यक्रम शुरू किया उसके बाद 'सलाम बाम्बे', 'उन्नी', 'माया मेमसाब', आदि फिल्में बनीं, अंतर्राष्ट्रीय सह–निर्माण की दो फिल्में हाल में

पूरी हुई हैं। वे हैं--राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और दक्षिण अफ्रीका प्रसारण निगम की संयुक्त परियोजना 'मेकिंग ऑफ ए महात्मा' तथा भारत–फ्रांस संयुक्त सहयोग से 'जय गंगा'। ब्रिटिश फिल्म संस्थान के साथ अंतर्राष्ट्रीय सह–निर्माण योजना के तहत दो और फिल्में एक ऋत्विक घटक पर तथा दूसरी सिनेमा शताब्दी पर निर्माणाधीन हैं।

4.17.4 1995-96 के दौरान राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और दूरदर्शन के बीच सह–निर्माण समझौते के तहत तीन फिल्मों–नचिकेत पटवर्धन की 'देवी अहिल्याबाई' (हिंदी), सुभाष चन्द्र अग्रवाल की 'रुई का बोझ' (हिंदी) तथा पी.ए. अब्दुल अजीज की 'डून्सडे ' (मलयालम) को मंजूरी दी गई। इस योजना के तहत पहले से मंजूरशुदा फिल्मों में से 16 या तो पूरी हो गईं या निर्माणाधीन हैं।

4.17.5 वर्ष 1995-96 के दौरान निगम ने अपर्णा सेन की फिल्म 'युगांत' का निर्माण स्वयं शुरू किया जो अब पूरी हो चुकी है।

4.17.6 देश के थियेटरों में बैठने की अतिरिक्त क्षमता बनाने तथा अच्छे सिनेमा को बाजार उपलबध कराने के लए थियेटर वित्त पोषण योजना बनाई गई तथा राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम इसको लागू कर रहा है। वर्ष 1995-96 के दौरान 19 लाख रुपए के तीन थियेटर ऋण बांटे गए।

4.17.7 निगम 30 से 40 फिल्मों का हर वर्ष आयात करता है। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम की यह कोशिश है कि विभिन्न देशों की अनेक फिल्मों से भारतीय दर्शकों को परिचय कराया जाए। लेकिन सीमित संसाधनों को देखते हुए अच्छी गुणवत्ता वाली पारिवारिक फिल्मों पर जोर है। वर्ष 1995-96 के दौरान निगम ने थिएटर और गैर थियेटर अधिकार वाली 19 फिल्में, टेलीविजन अधिकार वाली 113 फिल्में, वीडियो अधिकार वाली 14 फिल्में तथा 18 टेलीविजन धारावाहिक आयात किए। विभिन्न क्षेत्रों के 16 केंद्रों में इसने भारतीय फिल्में भी जारी कीं।

4.17.8 वर्ष 1995-96 के दौरान निगम ने देश के विभिन्न भागों में 11 केंद्रों पर पैनोरमा फिल्म समारोह का आयोजन किया। इसमें इजरायली फिल्मों का पुनरावलोकन किया, ईस्ट मीट्स वेस्ट–जर्मन कॉमेडी, भारतीय पैनोरमा पैकेज का फिल्म समारोह, चीन की फिल्मों का सप्ताह, द फेमिलीयर एंड द फॉरेन–जर्मन फिल्म पैकेज, तथा चेक फिल्म सत्र जैसे अनेक महत्वपूर्ण पुनरावलोकन तथा फिल्म सप्ताह का आयोजन भी किया।

4.17.9 1995-96 के दौरान निगम ने 101 फिल्मों का विभिन्न देशों में निर्यात किया और 149.71 लाख रुपये हासिल किए।

4.17.10 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर अपनी और अन्य फिल्मों का लगातार प्रदर्शन कर रहा है। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने दूरदर्शन को मूवी क्लब शुरू करने में मदद दी जो कि भारत में पहला मूवी चैनल है। मूवी क्लब शुरू होने के तुरंत बाद राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम दूरदर्शन के साथ जुड़ गया और इसने तमिल, कन्नड़, बंगला और मलयालम भाषाओं के मूवी क्लब शुरू किए।

4.17.11 विभिन्न उपग्रह चैनलों की स्थापना के बाद अब दर्शकों के लिए चयन की सुविधा उपलब्ध है, इस कारण वीडिया कैसेट विपणन गतिविधियों को काफी धक्का पहुंचा है। लेकिन वर्ष 1995-96 के दौरान निगम ने बाजार में 18 फिल्में जारी कीं। वीडियो पाइरेसी से निपटने के लिए निगम इंडियन फेडरेशन एगेंस्ट कॉपीराइट थेफ्ट (इंफैक्ट) को लगातार अपना समर्थन दे रहा है।

4.17.12 तेजी से बदलती तकनीक के साथ कदम–से–कदम मिलाकर चलने के लिए निगम ने वर्तमान परियोजनाओं के आधुनिकीकरण के अलावा नई तकनीकी परियोजनाएं भी शुरू की हैं। निगम ने मुंबई में लेसर सब–टाइटल संयंत्र लगाया है जोकि इस उपमहाद्वीप में एकमात्र संयंत्र है। अब अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता के सब–टाइटल उचित मूल्य पर प्राप्त करना संभव हो गया है। वर्ष 1995-96 के दौरान 131 फिल्मों के सब–टाइटल लेसर पर तैयार किए गए। राष्ट्रीय फिल्म विकास क्षेत्रीय फिल्मों के रविवारीय प्रसारण के लिए विभिन्न भाषाओं में फिल्मों का सब--टाइटल तैयार कर रहा है। निगम ने मुंबई

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड
1995 में प्रमाणित की गई भारतीय फिल्में

(क्षेत्रवार-भाषावार) (सिनेमा हाल के लिए जारी की गई फिल्में)

भाषा	मुंबई	कलकत्ता	मद्रास	बंगलौर	तिरुअनंत.	हैदराबाद	नई दिल्ली	कटक	कुल
हिन्दी	123	-	22	4	2	6	-	-	157
तमिल	-	-	129	7	6	23	-	-	165
तेलुगु	4	-	67	17	6	74	-	-	168
कन्नड़	-	-	-	89	-	-	-	-	89
मलयालम	-	-	67	2	10	4	-	-	83
मराठी	21	-	-	-	1	-	-	-	22
पंजाबी	12	-	-	-	-	-	-	-	12
नेपाली	11	-	-	-	-	-	-	-	11
गुजराती	9	-	-	-	-	-	-	-	9
बंगला	1	23	1	-	-	-	-	1	26
भोजपुरी	3	1	2	-	-	-	-	-	6
राजस्थानी	3	-	-	-	-	-	-	-	3
असमिया	1	2	1	-	-	-	-	-	4
हरियाणवी	1	-	-	-	-	-	-	-	1
अंग्रेजी	3	-	6	-	9	-	-	-	18
मणिपुरी	-	2	-	-	-	-	-	-	2
तुलु	-	-	-	1	-	-	-	-	1
नागपुरी	-	1	-	-	-	-	-	-	1
बोडो	-	1	-	-	-	-	-	-	1
उर्दू	1	-	-	-	-	-	-	-	1
मूक पृष्ठभूमि वाले संगीत	-	-	-	1	-	-	-	-	1
सिंधी	1	-	-	-	-	-	-	-	1
कुल	194	31	297	121	34	107	-	11	705

में स्पेशल इफेक्ट सेट–अप स्टूडियो भी शुरू किया है जिसने इस वर्ष काम करना शुरू कर दिया।

4.17.13 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम का कलकत्ता स्थित फिल्म केंद्र निर्माण और निर्माण पश्चात सुविधाएं उपलब्ध कराता है जबकि निगम का मद्रास स्थित वीडियो केंद्र अच्छी गुणवत्ता वाली फिल्मों के हस्तांतरण की सुविधा उपलब्ध कराता हैं।

4.17.14 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम द्वारा 3.55 करोड़ रुपये की पूंजी से गठित भारतीय सिने कलाकार कल्याण कोष भूतपूर्व जरूरतमंद सिने कलाकारों को पेंशन और अन्य लाभ दे रहा है। वर्ष 1995-96 के दौरान 477 सिने कलाकारों को विभिन्न योजनाओं के तहत 33.49 लाख रुपये दिए गए।

4.17.15 निगम हिंदी के प्रयोग के लिए विभिन्न योजनाओं को लागू करने के प्रभावी कदम उठा रहा है। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए निगम में प्रोत्साहन योजनाएं जारी की हैं। राजभाषा लागू करने और हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए एक शैक्षिक सामाजिक–सांस्कृतिक संगठन 'आशीर्वाद' ने निगम को प्रथम पुरस्कार और 'रोटेटिंग शील्ड' प्रदान किया।

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड

4.18.1 भारत में फिल्मों का सार्वजनिक प्रदर्शन सिनेमेटोग्राफ अधिनियम 1952 के अंतर्गत केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड की मंजूरी के बाद ही हो सकता है। इस बोर्ड में एक अध्यक्ष तथा 25 गैर–सरकारी सदस्य होते हैं। इसका मुख्यालय मुंबई में है तथा बंगलूर, मुंबई, कलकत्ता, कटक, गुवाहाटी, हैदराबाद, मद्रास, नई दिल्ली और तिरुअनंतपुरम में 9 क्षेत्रीय कार्यालय हैं। गुवाहाटी कार्यालय का उद्घाटन 4 फरवरी 1996 को हुआ। क्षेत्रीय कार्यालयों को फिल्मों की जांच में समाज के विभिन्न क्षेत्रों के जाने–माने लोगों से गठित सलाहकार पैनल का सहयोग मिलता है। जाने–माने फिल्मकार श्री शक्ति सामंत बोर्ड के अध्यक्ष है। 7 मार्च, 1996 को बोर्ड का पुनर्गठन किया गया।

4.18.2 बोर्ड ने वर्ष 1995 के दौरान कुल 3532 प्रमाण–पत्र जारी किए। इनमें 2204 सिनेमा हालों में दिखाई जाने वाली फिल्मों और 1328 वीडियो पर दिखाई जाने वाली फिल्मों के लिए थे। जिन भारतीय फीचर फिल्मों को प्रमाण–पत्र दिए गए उनकी संख्या 795 थी। इन फिल्मों का क्षेत्रवार और भाषावार ब्यौरा नीचे दिया गया है।

4.18.3 सिनेमा हालों की फिल्म की श्रेणी के अंतर्गत बोर्ड द्वारा 795 भारतीय फिल्मों को प्रमाणित किया गया जिनमें 503 को 'यू' प्रमाण–पत्र, 122 को 'यूए' प्रमाण पत्र तथा 170 को 'ए' प्रमाण–पत्र दिया गया। इसी वर्ष के दौरान 220 विदेशी फिल्मों को प्रमाणित किया गया जिनमें 49 को 'यू' प्रमाण–पत्र, 21 को 'यूए' प्रमाण–पत्र तथा 150 को 'ए' प्रमाण–पत्र दिया गया। वर्ष के दौरान 21 भारतीय कथा फिल्मों तथा 14 विदेशी कथा फिल्मों को सिनेमा हालों की फिल्मों की श्रेणी के अंतर्गत प्रमाण–पत्र नहीं दिया गया क्योंकि ये फिल्में प्रमाणीकरण वैधानिक दिशा–निर्देशों में से एक या एकाधिक का उल्लंघन करती थीं। इनमें से कुछ को संशोधित रूप से प्रस्तुत किए जाने पर या फिल्म प्रमाणन अपील ट्रिब्यूनल द्वारा आदेश दिए जाने पर बोर्ड द्वारा प्रमाण–पत्र प्रदान कर दिए गए हैं।

4.18.4 1995 के दौरान बोर्ड ने सिनेमाहाल में दिखाई जाने वाली फिल्म श्रेणी के तहत 850 भारतीय लघु फिल्मों (798 को 'यू' प्रमाण–पत्र, 23 को 'यू.ए.' प्रमाण–पत्र तथा 29 को 'ए' प्रमाण–पत्र) और 230 विदेशी लघु फिल्मों (203 को यू प्रमाण–पत्र, 29 को 'यू.ए.' प्रमाण–पत्र तथा 98 को 'ए' प्रमाण–पत्र) को प्रमाणित किया।

4.18.5 बोर्ड ने 1328 वीडियो फिल्मों को प्रमाणित किया। इनमें से 111 भारतीय फीचर फिल्में, 108 विदेशी फीचर फिल्में, 581 भारतीय लघु फिल्में, 498 विदेशी लघु फिल्में तथा 30 अन्य वर्ग की फिल्में थीं।

4.18.6 वर्ष के दौरान फिल्मों में अत्यधिक सैक्स और हिंसा के प्रदर्शन के बारे में शिकायतें मिलती रहीं। बोर्ड द्वारा गठित समिति में महिलाओं को 50 प्रतिशत प्रतिनिधित्व देने के बारे में नियमों में पहले ही संशोधन किया जा चुका है। इस सिलसिले में महिलाओं को उचित प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिए सलाहकार पैनल के पुनर्गठन के लिए आगे की कार्रवाई की गई। बंगलूर, मुंबई, कटक, हैदराबाद, मद्रास, नई दिल्ली और तिरुअनंतपुरम के सलाहकार पैनल का पुनर्गठन किया

गया और बचे हुए पैनलों के पुनर्गठन की प्रक्रिया शुरू की गई।

4.18.7 सलाहकार पैनल के सदस्यों और जांच अधिकारियों के लिए विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों पर कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इन कार्यशाालाओं में अध्यक्ष ने सदस्यों से आग्रह किया कि वे फिल्मों से सैक्स और हिंसा के अत्यधिक प्रदर्शन को रोकने के लिए दिशा–निर्देश का कड़ाई और समान रूप से पालन करें।

4.18.8 बोर्ड सिनेकर्मियों के कल्याण के लिए सिनेमा हालों के लिए जारी की जाने वाली भारतीय फीचर फिल्मों के आवेदनों पर शुल्क इकट्ठा करने की प्रथा जारी रखे हुए है।

4.18.9 नई आयात–नीति के तहत विदेशी फिल्मों के आयात के लिए अनापत्ति प्रमाण–पत्र देने का काम केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के पास ही है। वर्ष के दौरान 253 फीचर फिल्मों और 339 वीडियो फिल्मों के लिए अनापत्ति प्रमाण–पत्र जारी किए गए। इससे संवीक्षा शुल्क के तौर पर 31.60 लाख रुपये हासिल हुए।

भारतीय फिल्म सोसायटी महासंघ

4.19.1 फिल्मों के प्रति जागरूकता बढ़ाने और सिनेमा के क्षेत्र में दर्शकों की अभिरुचि विकसित करने के लिए मंत्रालय देश में फिल्म समिति के सर्वोच्च निकाय – फिल्म सोसायटी महासंघ को अनुदान देता है। इन फिल्म समितियों का उद्देश्य फिल्म संस्कृति को बढ़ावा देना है। फिल्म सोसायटी को अनुदान के तौर पर 1995-96 के बजट में तीन लाख रुपये देने का प्रावधान रखा गया और इतनी ही राशि वित्तीय वर्ष के समाप्त होने से पहले एकमुश्त तौर पर जारी की गई।

5

प्रेस प्रचार

पत्र सूचना कार्यालय

5.1.1 पत्र सूचना कार्यालय सरकारी नीतियों, कार्यक्रमों और उपलब्धियों से संबंधित सूचना देने वाला प्रमुख संगठन है। यह अपने मुख्यालय और 40 क्षेत्रीय/ शाखा कार्यालयों के माध्यम से, समाचारपत्रों, श्रव्य, दृश्य और इलैक्ट्रानिक, सभी सूचना माध्यमों को जानकारी देता है। कार्यालय समाचारपत्रों में सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में प्रकाशित लोगों की प्रतिक्रियाओं के समाचारों को भी मुहैया कराता है।

5.1.2 पत्र सूचना कार्यालय के मुख्यालय में विभिन्न मंत्रालयों/विभागों से संबद्ध अधिकारी हैं जो सूचना माध्यमों को जानकारी देते हैं और समाचारपत्रों में प्रकाशित सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों से संबंधित लोगों की प्रतिक्रियाओं के समाचार उपलबध कराते हैं। कार्यालय के क्षेत्रीय/शाखा कार्यालय देशभर में क्षेत्रीय भाषाओं के समाचारपत्रों के अलावा हिंदी और अंग्रेजी के समाचारपत्रों को भी मुद्रित सामग्री

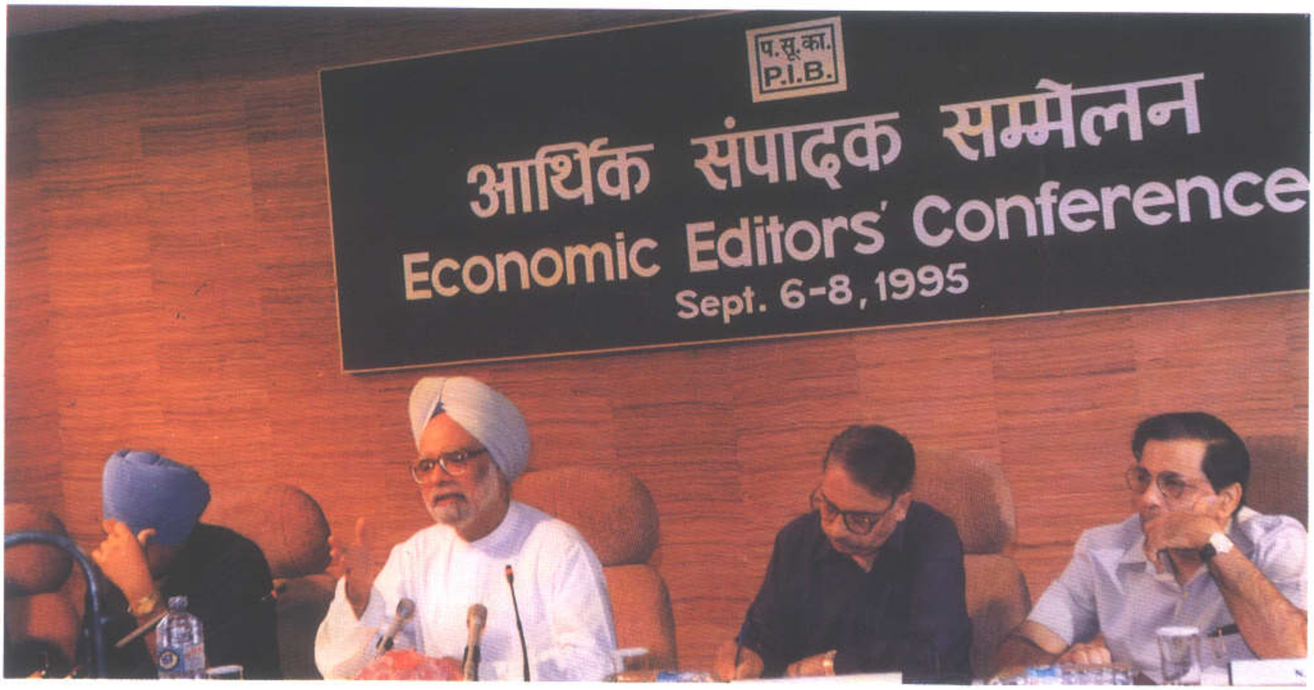

पत्र सूचना कार्यालय द्वारा आयोजित आर्थिक विषयों के संपादकों के सम्मेलन में केंद्रीय वित्त मंत्री श्री मनमोहन सिंह

पत्र सूचना कार्यालय के क्षेत्रीय/शाखा कार्यालय

क्षेत्रीय कार्यालय के नाम	शाखा कार्यालय	कार्यालय सह–सूचना केन्द्र	सूचना केन्द्र	शिविर कार्यालय	कुल
1. **उत्तरी क्षेत्र** चंडीगढ़	1. जम्मू 2. शिमला	1. श्रीनगर 2. जालंधर	-	-	5
2. **मध्य क्षेत्र** भोपाल	1. जयपुर 2. इंदौर 3. कोटा 4. जोधपुर				5
3. **पूर्व मध्य क्षेत्र** लखनऊ	1. वाराणसी 2. कानपुर 3. पटना	-	-	-	4
4. **पूर्वी क्षेत्र** कलकत्ता	1. कटक 2. अगरतला	गंगटोक	पोर्ट ब्लेयर	भुवनेश्वर	6
5. **उत्तर पूर्वी क्षेत्र** गुवाहाटी	शिलांग	1. कोहिमा 2. इम्फाल	आइजौल	-	5
6. **दक्षिण मध्य क्षेत्र** हैदराबाद	1. विजयवाड़ा	-	-	-	3
7. **दक्षिणी क्षेत्र** मद्रास	1. कालीकट 2. मदुरै 3. तिरुअनंतपुरम 4. कोचीन	-	-	-	5
8. **पश्चिमी क्षेत्र** मुम्बई	1. नागपुर 2. पुणे 3. पणजी 4. अहमदाबाद 5. राजकोट 6. नांदेड	-	-	-	7
कुल क्षेत्रीय कार्यालय =8	24	5	2	1	40

उपलब्ध कराते हैं।

5.1.3 पत्र सूचना कार्यालय के मुख्यालय को 20 क्षेत्रीय/शाखा कार्यालयों के साथ कंप्यूटर से भी जोड़ा गया है। कार्यालय में इंटरनेट व्यवस्था के तहत अंतर्राष्ट्रीय उपयोग के लिए सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। पत्र सूचना कार्यालय की प्रेस विज्ञप्तियां और समाचार, स्थानीय समाचारपत्रों और बाहर के कुछ प्रमुख समाचारपत्रों के स्थानीय संवाददाताओं को सीधे फैक्स से भेज दी जाती हैं। कार्यालय के क्षेत्रीय/शाखा कार्यालयों के माध्यम से फीचर और ग्राफिक्स को भी सभी भाषाओं में जारी किया जाता है।

5.1.4 मुख्यालय में सरकारी पत्रों से सूचना पहुंचाने के काम को सुगम बनाने के लिए कार्यालय पत्रकारों को मान्यता भी प्रदान करता है। इस समय कुल 1270 पत्रकारों, कैमरामैनों और तकनीकी कर्मचारियों को पत्र सूचना कार्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त है।

5.1.5 वर्ष के दौरान ब्यूरो ने 26 प्रमुख सरकारी विभागों से संबंधित नीतियों, कार्यक्रमों और उन्हें लागू करने जैसे मुद्दों की मुख्य बातों का संकलन प्रकाशित किया। यह मई 1995 में किया गया ताकि 1991 के मध्य से बाद की अवधि तक नीतियों, कार्यक्रमों तथा उन्हें लागू करने के बारे में की गई कार्रवाई की एक झलक मिल सके। यह संकलन सरकारी क्षेत्र में विभिन्न विकास गतिविधियों पर एक तैयार संदर्भ उपलब्ध कराता है। इन प्रमुख बातों को अद्यतन किया गया और दोबारा जनवरी, 1996 में जारी किया गया।

5.1.6 पहली बार ब्यूरो ने पुस्तिकाएं उपलब्ध कराईं जिसमें विभिन्न क्षेत्रों की नीतियों और विकास की झलक मिलती हैं इन पुस्तिकाओं में आमतौर पर 1947 से विभिन्न मंत्रालयों/विभागों के विकासपर सामग्री दी गई। पुस्तिकाओं का बड़े पैमाने पर स्वागत किया गया है। मंत्रालयों/विभागों की प्रमुख उपलब्धियों को शामिल करते हुए लगभग 40 पुस्तिकाएं तैयार करने का काम चल रहा है।

5.1.7 खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में सरकारी नीतियों से आम लोगों को सूचित करने के लिए अनेक सार्वजनिक जागरूकता अभियान चलाए गए। विभिन्न राज्यों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली नेटवर्क को कवर करने के लिए प्रेस दौरों की व्यवस्था की गई। कृषि उद्योग की विविधता और उसके वाणिज्यिकरण के बारे में सरकार की नीति को व्यापक रूप से प्रचारित किया गया। बदलते आर्थिक परिदृश्य में व्यापारिक विवादों का शीघ्र

1995-96 में पत्र सूचना कार्यालय की उपलब्धियां

● मुख्यालय द्वारा पूर्ण किए गए कार्य	1976
● समाचार पत्रों को जारी किए गए न्यूज फोटो की संख्या	1185
● जारी किए गए कुल प्रिंटों की संख्या	216260
● छोटे और मध्यम समाचारपत्रों को दिए गए एबोनाइड ब्लाकों की संख्या	671
● फोटो लाइब्रेरी में जोड़े गए फोटों की संख्या	2537
● जारी की गईं प्रेस विज्ञप्तियों की संख्या	30203
● जारी किए गए फीचर्स की संख्या	2632
● आयोजित की गई प्रेस कांफ्रेन्सों की संख्या	1147

पत्र सूचना कार्यालय का पत्र कतरन एकक

निपटारा सुनिश्चित करने के लिए कानून में बदलाव की तत्काल आवश्यकता पर अनेक संवाददाता सम्मेलन और विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। आम आदमी के लाभ के लिए कानून की विभिन्न प्रक्रियाओं के सरलीकरण में सरकार के प्रयासों के लिए प्रचार अभियान भी शुरू किए गए।

5.1.8 प्रधानमंत्री के समन्वित शहरी गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम को उजागर करने के लिए नवंबर, 1995 में एक बड़ा प्रचार अभियान शुरू किया गया। छोटे और मझोले आकार के नगरों के समन्वित विकास की फिर से शुरू की गई योजना (आई डी एस एम टी), बड़े नगर योजना के लिए दिशा–निर्देशों की मंजूरी, राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिक शिक्षा मिशन की शुरुआत, इंदिरा महिला योजना की प्रगति, राष्ट्रीय महिला कोष और महिलाओं के लिए राष्ट्रीय नीति के प्रारुप जैसे कार्यक्रमों का भी व्यापक प्रचार किया गया।

5.1.9 विभिन्न ग्रामीण विकास योजनाओं में हुई प्रगति के बारे में संचार माध्यमों को प्रत्यक्ष जानकारी देने के लिए एक बहु–माध्यम अभियान शुरू किया गया। इसके लिए क्षेत्रीय और ब्रांच अधिकारियों ने अभियान क्षेत्रों के प्रेस दौरे आयोजित किए। इसके अलावा, राष्ट्रीय स्तर के पंचायती राज सम्मेलन को बड़े पैमाने पर प्रचारित किया गया।

5.1.10 दूरसंचार क्षेत्र में सेल्युलर मोबाइल, रेडियो पेजिंग, मोबाइल रेडियो ट्रंक्ड जैसी 'वैल्यु ऐडेड सर्विसेज' शुरू किए जाने, सार्वजनिक क्षेत्र में स्टील संयंत्रों के आधुनिकीकरण और औद्योगिक क्षेत्र में बेहतर गुणवत्ता प्रबंध की आवश्यकता को भी प्रचारित किया गया।

5.1.11 ब्यूरो ने मई 1995 में आयोजित सार्क शिखर सम्मेलन शिखर सम्मेलन और दिसंबर, 1995 में आयोजित सार्क देशों के विदेश मंत्रियों के सम्मेलन के दौरान मीडिया गतिविधियों के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5.1.12 प्रधानमंत्री द्वारा हल्के लड़ाकू विमान और युद्धक टैंक 'अर्जुन' को राष्ट्र को समर्पित किए जाने के समाचार को पत्र–पत्रिकाओं तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से प्रचारित किया गया। इनसेट–2सी के सफलतापूर्वक प्रक्षेपण को भी व्यापक कवरेज दी गई।

6

समाचारपत्रों का पंजीकरण

भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक

6.1.1 भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक का कार्यालय सूचना और प्रसारण मंत्रालय का संलग्न संगठन है। समाचारपत्रों के लिए नाम आबंटित करने के आवेदनों की जांच करना और उनका नियमन करना इसका वैधानिक दायित्व है। इसके अलावा यह उनका पंजीकरण करता है और प्रसार संख्या के उनके दावों की जांच करता है। पंजीयक कार्यालय द्वारा प्रेस इन इंडिया नाम की एक वार्षिक रिपोर्ट भी प्रकाशित की जाती है जिसमें समाचरपत्रों के बारे में विस्तृत ब्यौरा रहता है। समाचारपत्रों के पंजीयक का कार्यालय अपने गैर–वैधानिक कार्यों के तहत 200 मीट्रिक टन वार्षिक से कम अखबारी कागज के कोटे के हकदार छोटे और मझोले समाचारपत्रों/पत्रिकाओं को अर्हता प्रमाणपत्र प्रदान करता है। इस प्रमाण पत्र से वे कुछ सूचीबद्ध स्वदेशी अखबारी कागज मिलों से कागज का आबंटन करवा सकते हैं या खरीद सकते हैं। इसके अलावा यह कार्यालय समाचारपत्रों की छपाई–मशीनों तथा इसी तरह की जरूरी वस्तुओं की आवश्यकता के बारे में भी प्रमाण–पत्र प्रदान करता है।

6.1.2 अप्रैल 1995 से मार्च 1996 तक समाचारपत्रों के नियंत्रक ने समाचर पत्रों के शीर्षक प्राप्त करने संबंधी प्रकाशनों के 22,114 आवेदनों पत्रों की जांच की। इनमें से 10,434 शीर्षकों को स्वीकृति दी गई। बाकी शीर्षक उपलब्ध नहीं पाए गए। इसी अवधि में 2,656 समाचार पत्रों/पत्रिकाओं के प्रसार के दावों की जांच की गई। इनमें से 108 मामलों में प्रसार संख्या संबंधी दावों को खारिज कर दिया गया।

6.1.3 प्रिंट मीडिया के बारे में विस्तृत जानकारी देने वाली वार्षिक रिपोर्ट 'प्रेस इन इंडिया–1994' प्रकाशित की गई और बिक्री के लिए जारी की गई। 'प्रेस इन इंडिया–1995' के संकलन का कार्य पूरा हो चुका है और शीघ्र ही इसके प्रकाशित होने की संभावना है।

6.1.4 वाणिज्य मंत्रालय द्वारा जारी एक गजट अधिसूचना के अनुसार 1 मई 1995 से अखबारी कागज को खुलेआम लाइसेंस वाली वस्तुओं की सूची में रख दिया गया है। इससे ग्लेज्ड न्यूजप्रिंट सहित सभी तरह का अखबारी कागज बिना किसी प्रतिबंध के मुक्त रूप से आयात किया जा सकता है। आयातित अखबारी कागज पर अब कोई आयात शुल्क नहीं लिया जाता। इसी तरह अखबारी कागज बनाने वाली मिलों द्वारा जो कागज समाचारपत्रों के पंजीयक के कार्यालय में पंजीकृत अखबारों को बेचा जाएगा उस पर उत्पाद शुल्क से छूट दे दी गई है। छोटे और मझोले समाचारपत्रों के हितों की रक्षा के लिए उद्योग मंत्रालय के औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग ने एक आदेश भी जारी किया है जिसके अनुसार देश की अनुसूचित अखबारी कागज मिलों को अपने उत्पादन का एक तिहाई इस तरह के समाचारपत्रों को बेचने के लिए आरक्षित करना होगा। इस नीति के अनुसार समाचारपत्रों के पंजीयक को अनुसूचित कागज मिलों से आरक्षित कोटा के अखबारी कागज की खरीद के लिए छोटे और मझोले समाचारपत्रों को अर्हता प्रमाणपत्र जारी करने का अधिकार दिया गया है। यह प्रमाणपत्र ऐसे समाचारपत्रों को दिया जाता है जिनका अखबारी कागज का वार्षिक कोटा 200 मीट्रिक टन से कम है और जिनकी दैनिक प्रसार संख्या प्रति प्रकाशन, 75,000 से कम है।

मुद्रण मशीनें

6.2.1 1 अप्रैल 1995 से 31 मार्च 1996 तक उन्नीस समाचारपत्र संगठनों के मुद्रण मशीनरी तथा अन्य संबंधित उपकरणों के आयात के आवेदन पत्रों को मंजूरी दी गई। इसके

अलावा इसी अवधि में 'बी' श्रेणी के प्रमाणपत्र के लिए 15 आवेदनपत्रों को अंतिम रूप दिया गया।

प्रेस और पुस्तक पंजीकरण अधिनियम में प्रस्तावित संशोधन

6.3.1 1867 के प्रेस और पुस्तक पंजीकरण अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों की समीक्षा के लिए सरकार ने जो विशेष समीक्षा दल गठित किया था उसने दिसंबर 1994 में अपनी रिपोर्ट पेश की जो सिफारिशें मानी हैं उनके आधार पर संशोधन विधेयक का प्रारुप तैयार किया जा रहा है।

समाचारपत्रों के पंजीयक की उपलब्धियां

6.4.1 पिछले पांच वर्षों में देश में पंजीकृत समाचारपत्रों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। दिसंबर 1991 में इनकी संख्या 33,330 थी जो मार्च 1996 में बढ़कर 41,000 हो गई। पंजीकृत समाचारपत्रों की कुल प्रसार संख्या दिसंबर 1991 में 5.39 करोड़ से बढ़कर मार्च 1996 तक की अवधि में समाचारपत्रों के 50,000 से अधिक शीर्षकों की जांच की गई। समाचारपत्रों के पंजीयक के कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों का वर्षवार ब्यौरा चित्र में दिया गया है।

समाचारपत्रों के पंजीयक की उपलब्धियां

(1991-1995)

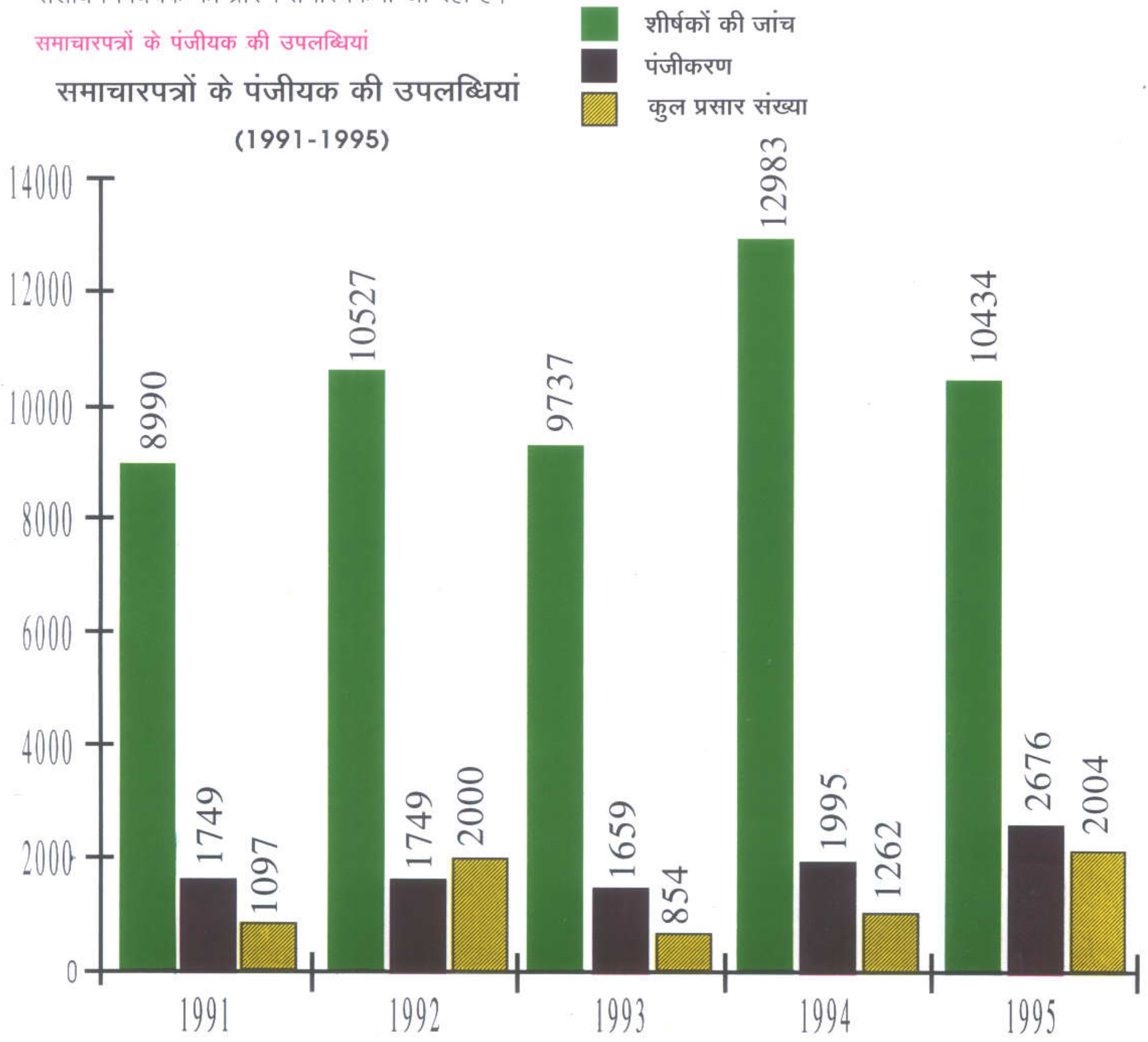

7
प्रकाशन

प्रकाशन विभाग

7.1.1 प्रकाशन विभाग सार्वजनिक क्षेत्र का सबसे बड़ा प्रकाशन संगठन है। 1941 में ब्यूरो ऑफ पब्लिक इन्फार्मेशन की शाखा के रूप में इसकी स्थापना हुई। 1944 में इसका नाम प्रकाशन विभाग रखा गया। हिंदी, अंग्रेजी और विभिन्न भारतीय भाषाओं में अपने प्रकाशनों के जरिए, यह विभाग हमारे देश की बहुआयामी संस्कृति को प्रस्तुत करता है और महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराता है।

पुस्तकें

7.1.2 वर्ष 1995–96 में अंग्रेजी और हिंदी में 100 और विभिन्न भारतीय भाषाओं में 14 पुस्तकें प्रकाशित की गई। महत्वपूर्ण पुस्तकों में 'पी.वी. नरसिम्ह रावः सेलेक्टेड स्पीचेज़ वॉल्यूम III और IV, 'फारगॉटन मौन्यूमेण्ट्स ऑफ उड़ीसा–वॉल्यूम I' 'नेशनल पार्क्स ऑफ इंडिया', 'गांधी–और्डेन्ड इन साउथ अफ्रीका', 'टुवर्डस फूड फॉर ऑल–आइडियाज फॉर ए न्यू पी डी एस,', 'एनशिएंट इंडिया',

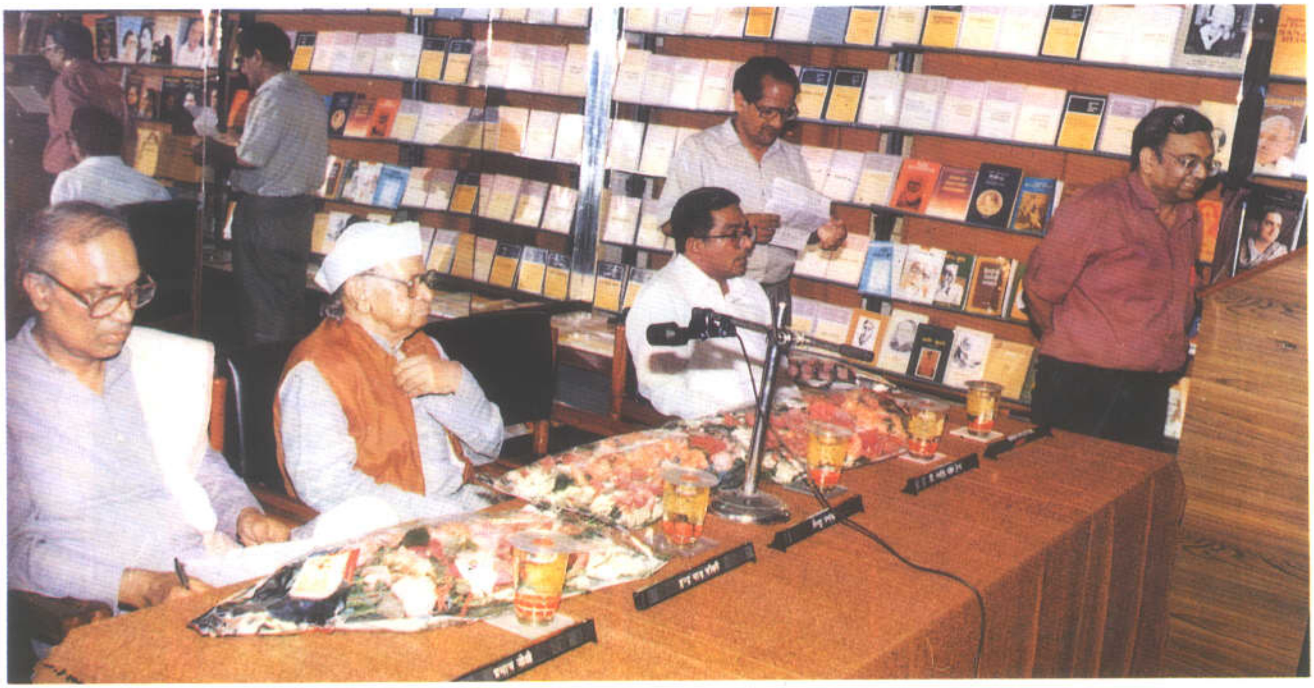

प्रकाशन विभाग में आयोजित एक पुस्तक विमोचन समारोह

विभाग की पुस्तक दीर्घा में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी

'इंडिया–1995', 'मास मीडिया इन इंडिया–1994-95', 'भारतीय विज्ञापन में नैतिकता', 'दूरदर्शनः दशा और दिशा', 'हिंदी और उसकी उपभाषाएं', 'बुद्ध गाथा', 'संयुक्त राष्ट्र–बच्चों के लिए', 'प्रेमचंद की विचार यात्रा', 'सी.के. नायडू', 'काका साहेब गाडगिल' (मराठी), 'के. कामराज' (तमिल), 'हमारी तहज़ीबी विरासत' (उर्दू), 'बी.आर. आम्बेडकर' (गुजराती), 'बाल गंगाधर तिलक' (गुजराती) शामिल हैं।

पत्रिकाएं

7.3.1 विभाग हिंदी, अंग्रेजी और विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनेक पत्रिकाएं प्रकाशित करता है।

7.3.2 'योजना' विभाग की प्रमुख पत्रिका है। इसमें आर्थिक विकास के विविध मुद्दों और पक्षों पर रचनाएं प्रकाशित होती हैं। यह पत्रिका तेरह भाषाओं में प्रकाशित होती हैं। (अंग्रेजी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, असमिया, मलयालम, कन्नड़, उड़िया, गुजराती, मराठी, पंजाबी, बंगला और उर्दू) इस वर्ष 'योजना' के दो विशेषांक प्रकाशित हुए। स्वतंत्रता दिवस विशेषांक 125 पृष्ठों का था। इसका मुख्य विषय था – 'सिनेमा और समाज'। इस अंक में फिल्मों से जुड़े प्रतिष्ठित लेखकों और समालोचकों के एक शताब्दी में भारतीय सिनेमा के विकास के बारे में उत्कृष्ट लेख थे। गणतंत्र दिवस विशेषांक में 'समाज कल्याण' विषय के अंतर्गत सभी प्रमुख कल्याणकारी गतिविधियों का जायजा लिया गया था।

7.3.3 उसके अलावा, निम्न विषयों पर लेख प्रकाशित किए गए 'संयुक्त राष्ट्र स्वर्ण जयंती समारोह', 'चौथा विश्व महिला सम्मेलन', 'आठवां दक्षेस शिखर सम्मेलन', 'पुरुषों और स्त्रियों के बीच समानता और महिलाओं का उत्थान', 'कृषि में महिलाओं की भूमिका', 'रोजगार–मूलक योजनाएं', 'सार्वजनिक वितरण प्रणाली का नया स्वरूप', 'पंचायती राज', 'बाल मजदूरी', आदि। महात्मा गांधी के 125वें जयंती वर्ष की समाप्ति पर विशेष लेख भी प्रकाशित किए गए।

7.3.4 'कुरुक्षेत्र' ग्रामीण विकास के प्रति समर्पित पत्रिका है जो ग्रामीण क्षेत्र और रोजगार के लिए अंग्रेजी और हिंदी में प्रकाशित की जाती है। इस वर्ष पत्रिका के दो विशेषांक और एक वार्षिकांक प्रकाशित हुए। अप्रैल अंक 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992, के दो वर्ष पूरे होने के

महत्वपूर्ण प्रकाशन

अंग्रेजी

1. पी.वी. नरसिम्ह रावः सलेक्टेड स्पीचेज वॉल्यूम–IV
2. पहाड़ी पेंटिंग्स ऑफ द नल दमयन्ती थीम
3. मोहनदास करमचंद गांधी – एन इंडियन पैट्रयट इन साउथ अफ्रीका
4. इंडिया 1995: ए रेफरेन्स एनुअल
5. द लैंग्वेज़ ऑफ म्यूज़िक
6. प्रोमिनेण्ट मिस्टिक पोएट्स ऑफ पंजाब
7. नेशनल पार्क्स ऑफ इंडिया
8. टुवार्ड्स फुड फॉर ऑलः आइडियाज फॉर ए न्यू पी डी एस
9. आंध्र केसरी टी. प्रकाशम (बी.एम.आई.)
10. गांधी आरडेन्ड इन साउथ अफ्रीका
11. मास मीडिया इन इंडिया 1994–95
12. यूनाइटेड नेशन्स इन द सर्विस ऑफ द कॉमन मैन

हिंदी

1. भारत 1994
2. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त
3. प्राचीन कथाएं
4. चिंतन के दर्पण में (खंड–दो)
5. लघु उद्योग विकास के लिए
6. हिंदी और उसकी उपभाषाएं
7. सी.के. नायडू
8. आजकल अनुक्रमणिका
9. प्राचीन भारत
10. योग सचित्र
11. महान व्यक्ति, महान विचार–सुब्रह्मण्यम भारती
12. महान व्यक्ति महान विचार–विनोबा भावे

क्षेत्रीय भाषाएं

1. के. कामराज (तमिल)
2. काका साहेब गाडगिल (आधुनिक भारत के निर्माता) मराठी)
3. हिन्दुस्तानी तहज़ीब का मुसलमानों पर असर (उर्दू)
4. मंत्रिकापट्टी (टेलीविजन) (मलयालम)
5. वी.ओ. चिदम्बरम पिल्लै (तमिल)
6. बी.आर. आम्बेडकर (आ.भा. के नि.) (गुजराती)
7. रवीन्द्रनाथ टैगोर (आ.भा. के नि.) (गुजराती)
8. बाल गंगाधर तिलक (आ.भा. के नि.) (गुजराती)
9. इंडिया चुथरू चूज़ल (तमिल)

अवसर पर प्रकाशित हुआ। इसमें आम जनता के स्तर पर लोकतांत्रिक परंपराओं का अध्ययन किया गया। अगस्त अंक चौथे विश्व महिला सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित किया गया। दोनों अंकों को पाठकों ने बहुत सराहा। वार्षिकांक में 'भूमि सुधारों' के बारे में विश्लेषणात्मक लेख तथा गांधी जी और संत विनोबा भावे के बारे में सामग्री प्रकाशित की गई। 'कुरूक्षेत्र' के हिंदी संस्करण के भी दो विशेषांक प्रकाशित हुए। अप्रैल अंक में 'पंचायती राज' पर और अक्तूबर अंक में 'भूमि सुधारों' पर विशेष सामग्री प्रकाशित की गई। ग्रामीण विकास और रोजगार मंत्रालय ने अप्रैल विशेषांक की 5,500 और 11,000 अतिरिक्त प्रतियां हिन्दी और अंग्रेजी में छपवाई और पंचायती राज सम्मेलन के दौरान सरपंचों और पंचायतों के सदस्यों में ये प्रतियां बंटवाई।

7.3.5 'बाल भारती' प्रकाशन विभाग की लोकप्रिय मासिक बाल–पत्रिका है। संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार समझौते की भावना के अनुरूप अप्रैल में 'बाल अधिकारों' के बारे में विशेष अंक प्रकाशित किया गया। पत्रिका ने इस विषय पर बाल रचना प्रतियोगिता आयोजित की और पुरस्कृत रचनाओं को अप्रैल, 1995 अंक में स्थान दिया गया। पत्रिका ने सिनेमा के सौ वर्ष (सितंबर 1995), विज्ञान (फरवरी '96) और विश्व कप क्रिकेट मार्च '96 पर विशेषांक निकाले गए।

7.3.6 पत्रिका ने गांधी जी, विनोबा भावे, नेहरूजी पर लेख छापने के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता, वैज्ञानिक मनोवृत्ति और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने वाली कहानियों/कविताओं का प्रकाशन जारी रखा। इनके साथ भारत के राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के भू–भाग, वहां के निवासियों और उनकी संस्कृति तथा सभी को एकता के सूत्र में पिरोने वाले तत्वों की जानकारी देने वाली लेखमाला के साथ राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं से संबंधित लेखमाला को भी छापा जा रहा है।

बिक्री केन्द्र

मुंबई-400 038 कॉमर्स रोड करीमभाई रोड बलार्ड पीयर	**मद्रास**-600 006 राजाजी भवन बेसेंट नगर काम्प्लैक्स
कलकत्ता-700 069 8 एस्प्लेनेड पूर्व	**नई दिल्ली**-110 001 सुपर बाजार कनॉट प्लेस
हैदराबाद-500 004 राज्य पुरातत्वीय म्यूजियम बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन्स	**पटना**-800 004 बिहार स्टेट कारपोरेशन बैंक बिल्डिंग अशोक राजपथ
लखनऊ-226 001 27/6, राम मोहन राय मार्ग	**तिरुअनंतपुरम्**-695 001 सरकारी प्रेस के पास

7.3.7 साहित्यिक मासिक पत्रिका 'आजकल' हिंदी और उर्दू में प्रकाशित होती है। आजकल (हिंदी) ने दो विशेषांक प्रकाशित किए। पहला विशेषांक पत्रिका के स्वर्ण जयंती वर्ष के समाप्त होने पर प्रकाशित किया गया और दूसरा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 125वें जयंती वर्ष के समापन के अवसर पर छापा गया। आजकल (उर्दू) ने भी दो विशेषांक निकाले। एक अंक महान शायर 'जोश मलीहाबादी' और दूसरा हिंदी और उर्दू के कहानी–उपन्यासकार 'उपेन्द्रनाथ अश्क' को समर्पित था। महात्मा गांधी के 125वें जयंती वर्ष के समापन पर भी विशेष लेख और कविताएं प्रकाशित की गई।

7.3.8 प्रकाशन विभाग का एम्प्लायमेण्ट न्यूज़ एकक हर सप्ताह अंग्रेजी में 'एम्प्लायमेण्ट न्यूज़' और हिंदी और उर्दू में 'रोज़गार समाचार' प्रकाशित करता है। इस पत्र में केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों के अंतर्गत रोज़गार के रिक्त पदों के बारे में जानकारी होती है। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं और साक्षात्कारों से संबंधित जानकारी वाले लेखों को भी छापा जाता है। 'डायरी ऑफ इवेंट्स' और 'अपनी हिंदी संवारें' जैसे स्तंभों की लोकप्रियता को देखते हुए 'एम्प्लायमेण्ट न्यूज़' ने 15 अगस्त 1995 से 'प्रधानमंत्री की रोज़गार योजना' नाम से एक नई लेखमाला शुरू की ताकि देशभर के योजना में दिलचस्पी रखने वाले उद्यमियों को लाभ मिल सके। इस लेखमाला में अपना उद्यम शुरू करने के बारे में सभी जरूरी जानकारी है। 'विश्व के आश्चर्य' श्रृंखला जनवरी 1995 से जून 1995 तक चली। इसकी बड़ी सराहना हुई। इस वित्त वर्ष में प्रति सप्ताह औसतन पांच लाख प्रतियों का प्रिंट आर्डर रहा। इस तरह, पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 13,161 अधिक प्रतियों का प्रिंट आर्डर रहा।

बिक्री

7.4.1 प्रकाशन विभाग अपने बिक्री एम्पोरियमों और अनेक पुस्तक–विक्रेताओं के विशाल नेटवर्क के जरिए अपनी पुस्तकों और पत्रिकाओं की बिक्री करता है। ये एंपोरियम मुंबई, मद्रास,

मुख्य प्रदर्शनियां और अर्जित राजस्व

क्रम संख्या	मेले/प्रदर्शनियां	स्थान	कुल बिक्री (लाख रुपयों में)
1.	दिल्ली पुस्तक मेला	नई दिल्ली	1.50
2.	आईफैक्स पुस्तक प्रदर्शनी	नई दिल्ली	7.00
3.	बंगलौर पुस्तक प्रदर्शनी	बंगलौर	2.00
4.	हैदराबाद पुस्तक मेला	हैदराबाद	0.60
5.	भव्य पुस्तक मेला	कार्यालय परिसर	3.00
6.	इंडिया हिस्ट्री कांग्रेस कांफ्रेंस	कलकत्ता	0.26
7.	विश्व पुस्तक मेला	नई दिल्ली	4.00
8.	सुपर बाज़ार पुस्तक प्रदर्शनी	नई दिल्ली	3.00

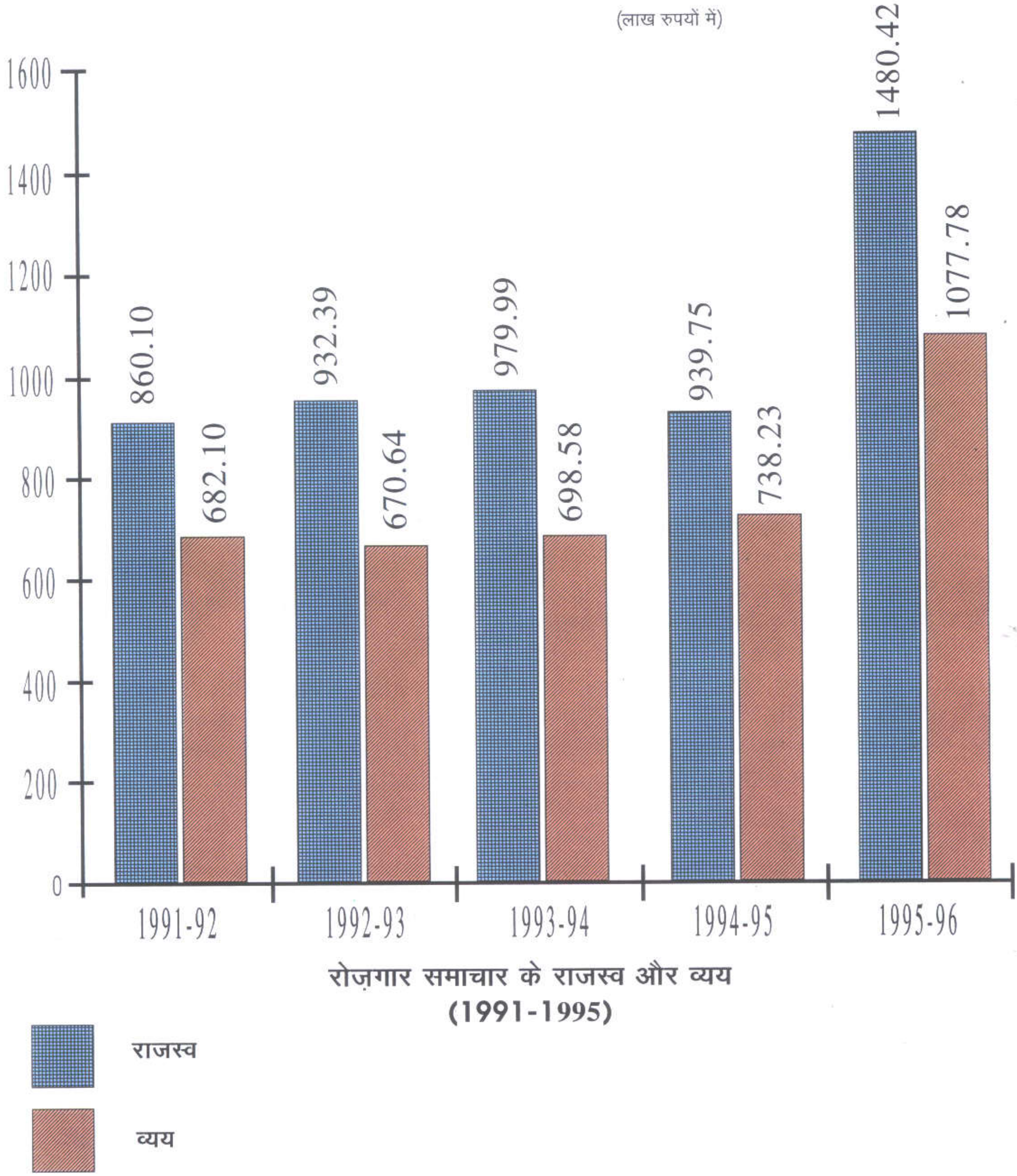

रोज़गार समाचार के राजस्व और व्यय
(1991-1995)

लखनऊ, कलकत्ता, हैदराबाद, पटना, तिरुअनंतपुरम और नई दिल्ली में हैं। प्रकाशन विभाग के मुख्यालय – पटियाला हाउस, नई दिल्ली में स्थायी पुस्तक दीर्घा खोली गई है ताकि बिक्री बढ़े। अपने प्रकाशनों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रकाशन विभाग पिछले साल से त्रैमासिक न्यूज़ लैटर प्रकाशित कर रहा है।

प्रदर्शनी

7.5.1 अपने प्रकाशनों की बिक्री बढ़ाने और इनके बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए प्रकाशन विभाग पुस्तक मेलों में भाग लेता है और बड़े पैमाने पर प्रदर्शनियां आयोजित करता है। इस वर्ष विभाग ने 62 प्रदर्शनियां/मेलों में भाग लिया/को आयोजित किया। प्रकाशन विभाग ने 22–29 सितंबर, 1995 के दौरान नई दिल्ली में आइफैक्स गैलरी में एक बड़ी प्रदर्शनी आयोजित की। इसमें सात लाख रुपये की रिकार्ड बिक्री हुई और करीब 1.25 लाख लोग इसे देखने आए। 15-25 जून 1995 के दौरान बिक्री एम्पोरियम सुपर बाजार, नई दिल्ली, पटियाला हाउस की स्थायी दीर्घा में 14–25 दिसंबर 1995 के दौरान दूसरी प्रमुख प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसमें 3.20 लाख रुपए और 3.10 लाख रुपये की पुस्तकों की बिक्री हुई।

7.5.2 प्रकाशन विभाग ने वर्ष 1995-96 के दौरान पुस्तकों और पत्रिकाओं की बिक्री से 16 करोड़ 85 लाख रुपए का राजस्व अर्जित किया जबकि पिछले वित्तीय वर्ष में यह 11 करोड़ 19 लाख रुपए के लगभग थी। एम्प्लायमेण्ट न्यूज़ ने 14 करोड़ 80 लाख 42 हज़ार रुपए का राजस्व अर्जित किया जिसमें पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 5 करोड़ 40 लाख 67 हज़ार रुपए की वृद्धि हुई।

विभाग द्वारा आयोजित 'नीरज संध्या' में हिन्दी के जाने माने कवि श्री नीरज

8
क्षेत्रीय प्रचार

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय

8.1.1 मंत्रालय की अंतर वैयक्तिक प्रचार ईकाई – क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय का गठन 1953 में 'पंचवर्षीय योजना प्रचार संगठन' के रूप में किया गया था। यह सीधे सूचना और प्रसारण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में काम करता था। धीरे–धीरे इसका कार्य–क्षेत्र विकसित हो गया और दिसंबर 1959 में पंचवर्षीय योजना प्रचार संगठन का नाम बदल कर 'क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय' कर दिया गया।

8.1.2 क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, आधारभूत स्तर का संगठन होने के कारण राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर गरीब लोगों के लाभ के लिए सरकार की विभिन्न विकास योजनाओं और गतिविधियों में जनता को शामिल करके और जनता के दृष्टिकोण में परिवर्तन करके यह उद्देश्य पूरा किया जा रहा है। लोगों के साथ व्यक्तिगत रूप से संपर्क करके उन्हें विकास योजनाओं के बारे में बताया जाता है। प्रत्यक्ष रूप से बातचीत के अलावा अपना संदेश पहुंचाने के लिए निदेशालय की क्षेत्रीय प्रचार इकाइयां अनेक साधन अपनाती हैं, इनमें फिल्म प्रदर्शन, कलाकारों के प्रदर्शन, लिखित सामग्री, सामूहिक चर्चाएं, सार्वजनिक सभाएं, विचार गोष्ठियां और विभिन्न प्रतियोगिताएं शामिल हैं। निदेशालय अपनी प्रचार

ग्रामीण विकास पर बहु–माध्यम प्रचार अभियान के अंतर्गत आयोजित एक रैली

इकाइयों के माध्यम से सरकार के विभिन्न विकास कार्यक्रमों और नीतियों के बारे में लोगों की प्रतिक्रियाएं भी एकत्र करता है। इन कार्यक्रमों और नीतियों के ग्रामीण स्तर पर क्रियान्वयन के संबंध में उपयुक्त कार्रवाई और सुधार उपायों के लिए संबद्ध अधिकारियों को सूचित करता है। इस प्रकार निदेशालय सरकार और जनता के बीच विचारों के आदान–प्रदान के लिए दोहरी श्रृंखला की भूमिका निभाता है।

संगठन

8.2.1 क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय का मुख्यालय नई दिल्ली में है। देश के विभिन्न भागों में इसके 22 क्षेत्रीय कार्यालय और 260 क्षेत्रीय प्रचार इकाइयां हैं। इन 260 इकाइयों में 156 सामान्य इकाइयां, 72 सीमावर्ती और 30 परिवार कल्याण इकाइयां है। निदेशालय के क्षेत्रीय कार्यालयों और क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों की सूची अध्याय के अंत में दी गई है।

गतिविधियां

8.3.1 क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयां फिल्म प्रदर्शन, मौखिक संचार और विशेष कार्यक्रमों जैसे – निबंध/चित्रकारी प्रतियोगिताएं, रैलियां, ग्रामीण खेल प्रतियोगिताएं और फोटो प्रदर्शिनियों के माध्यम से जन–जन तक पहुंचती हैं।

राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव

8.4.1 राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिकता सद्भाव को बढ़ावा देने के के लिए वर्ष 1995–96 के दौरान सद्भावना समारोह के रूप में अनेक बहु–माध्यम अभियान चलाए गए। मार्च–अप्रैल 1995 में पंजाब और जम्मू–कश्मीर में तीन सप्ताह की अवधि वाले सद्भावना समारोहों का आयोजन किया गया। इससे पहले ये समारोह पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश में आयोजित किए गए। जुलाई 1995 में जम्मू–कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र में चले दो सप्ताह के सद्भावना समारोह में निदेशालय की इकाइयों ने हिस्सा लिया। ये अभियान राज्य सरकारों, स्वयंसेवी संगठनों, शैक्षणिक संस्थानों और स्थानीय निकायों के सक्रिय सहयोग और तालमेल के साथ चलाए गए। कार्यक्रम पैकेज में विचारों के आदान–प्रदान की विभिन्न गतिविधियां, जैसे – सम्मेलन, गोष्ठियां, जनसभाएं और रैली शामिल हैं। साथ ही फिल्म प्रदर्शनों और कलाकारों के कार्यक्रमों का भी सहारा लिया गया। इन उच्च स्तरीय संचार अभियानों में केन्द्र और राज्य सरकारों के विशिष्ट व्यक्तियों का सहयोग भी लिया गया। इन अभियानों का विषय था – 'सद्भाव के साथ विकास'।

क्षेत्रीय इकाइयों की गतिविधियां
(अप्रैल 1995 - मार्च1996)

फिल्म प्रदर्शन	**53,713**
मौखिक संचार	**58,476**
विशेष कार्यक्रम	**9,974**
फोटो प्रदर्शनी	**37,309**

8.4.2 राष्ट्रीय एकता तथा सांप्रदायिक सद्भाव पर प्रचार गतिविधियों को महत्वपूर्ण अवसरों जैसे महात्मा गांधी की 125वीं जयंती, आचार्य विनोबा भावे की जन्मशती, सद्भावना दिवस/पखवाड़े, कौमी एकता दिवस/सप्ताह और स्वतत्रंता दिवस के साथ जोड़ा गया। राष्ट्रीय एकता पर कुछ उल्लेखनीय कार्यक्रम, निदेशालय की क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने देश के सीमावर्ती राज्यों – अरुणाचल प्रदेश, असम, उत्तर प्रदेश, जम्मू–कश्मीर, नगालैंड, मिज़ोरम आदि में आयोजित किए। नैनीताल (उत्तर प्रदेश), वड़ोदरा और हिम्मत नगर, (गुजरात), उधमपुर, अनंतनाग, डोडा, कठुआ, कारगिल, पुंछ और लेह (जम्मू–कश्मीर) सेप्पा, जीरो, नाम्पोंग, डापोरिजो और बॉम्डिला (अरुणाचल प्रदेश) जोरयांग, गंगतोक (सिक्किम), रिकाग पेओ (हिमाचल प्रदेश), उदयपुर (त्रिपुरा), जोवई (मेघालय) आइजोल, लुंगलेई (मिजोरम), चांदेल, इम्फाल (मणिपुर) और मॉन, कोहिमा (नगालैंड) की इकाइयों ने सामूहिक चर्चाएं, वाद–विवाद/भाषण प्रतियोगिताएं, रंगोली प्रतियोगिताएं और अनेक अन्य गतिविधियां आयोजित कीं। सद्भावना दिवस और कौमी एकता दिवस के सिलसिले में अनेक इकाइयों ने कर्मचारियों के साथ–साथ आम जनता के लिए शपथ–ग्रहण समारोह आयोजित किए।

ग्रामीण विकास और पंचायती राज

8.5.1 निदेशालय की गतिविधियों में ग्रामीण विकास और पंचायती राज को उच्च प्राथमिकता दी गई। ग्रामीण क्षेत्र और रोजगार मंत्रालय के सहयोग से ग्रामीण विकास पर तीन चरणों का तीन सप्ताह वाला बहु–माध्यम अभियान चलाया गया। तीन सप्ताह के इस अभियान का पहला चरण अक्तूबर 1995

में गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल और कर्नाटक के 36 जिलों में, दूसरा चरण नवंबर 1995 में आंध्र प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश और उड़ीसा के 36 जिलों तथा तीसरा चरण असम, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, मिज़ोरम, त्रिपुरा, मेघालय, नगालैंड, जम्मू–कश्मीर, हरियाणा, तमिलनाडु और केरल के 27 जिलों तथा सिक्किम और गोवा के समूचे क्षेत्र में शुरू किया गया। हिमाचल प्रदेश के दो जिलों में यह अभियान जनवरी–1996 में चलाया गया। अभियान का चौथा चरण 15 राज्यों के 58 ज़िलों में जनवरी–फरवरी 1996 में चलाया गया।

8.5.2 निदेशालय ने किसान सम्मेलन, महिला सम्मेलन, रैलियां, जनसभाएं, ग्रामीण खेल प्रतियोगिताएं, सामूहिक चर्चाएं, प्रश्नोत्तर सत्र, गोष्ठियां, जैसी विभिन्न गतिविधियां आयोजित कीं। ये सभी कार्यक्रम ग्रामीण विकास में जनता की भागीदारी के लिए गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत करने वाले लोगों को लक्ष्य करके रखे गए थे। इनके अलावा नियमित फिल्म शो, फोटो प्रदर्शनियां, मुद्रित सामग्री का वितरण और गीत और नाटक के कार्यक्रम तो किए ही गए। जिन मुख्य योजनाओं का प्रचार किया गया उनमें, समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम, ट्राइसेम, इंदिरा आवास योजना, सुनिश्चित रोजगार योजना, ग्रामीण कामगारों के लिए उन्नत उपकरण, ग्रामीण स्वास्थ्य और सफाई तथा सिंचाई सुविधाएं देना शामिल हैं। राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम के महत्व को भी उजागर किया गया। इस कार्यक्रम के चार अंग हैं:– स्कूली बच्चों के लिए दोहपहर का भोजन, परिवार लाभ योजना, वृद्धावस्था योजना और प्रसवकालीन लाभ योजना। इनके अलावा पंचायतों की भूमिका तथा महिलाओं के लाभ पर ज्यादा ध्यान देने वाली योजनाओं की भी जानकारी दी गई। वर्ष के आरंभ में आंध्र प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, उड़ीसा तथा उत्तर प्रदेश में भी इस प्रकार के अभियान चलाए गए। विभिन्न प्रचार माध्यमों के जरिए चलाए गए इन अभियानों में ग्रामीण जिला विकास संस्थानों और पंचायती राज निकायों के साथ सार्थक तालमेल किया गया।

8.5.3 क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय ने वर्ष के दौरान स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के विभिन्न पहलुओं पर गहन प्रचार जारी रखा। जुलाई 1995 में अनेक क्षेत्रीय इकाइयों ने एक सप्ताह के अभियान आयोजित किए जो विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई तक जारी रहे। इन अभियानों के दौरान बढ़ती जनसंख्या से उत्पन्न सामाजिक–आर्थिक प्रभावों तथा पर्यावरण के खतरों की ओर लोगों का ध्यान दिलाया गया। क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं को प्रचार के प्रभावी तौर तरीकों का प्रशिक्षण देने के लिए वर्ष के दौरान हैदराबाद, पटना, जयपुर और भोपाल में कार्यशालाएं आयोजित की गईं। राज्य सरकारों के सहयोग से शुरू किए गए केन्द्र सरकार के पल्स पोलियो टीकाकरण कार्यक्रम के लिए क्षेत्रीय इकाइयों ने व्यापक प्रचार–कार्य किया ताकि अधिक से अधिक लोगों को इस

ग्रामीण विकास पर बहु-विध प्रचार अभियान

चरण	जिलों की संख्या	राज्य
पहला (अक्तूबर–1995)	36	गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल और कर्नाटक
दूसरा(नवंबर,1995)	36	आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा
तीसरा (दिसंबर, 1995)	27	असम, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय, सिक्किम, जम्मू–कश्मीर , नगालैंड और गोवा
चौथा (जनवरी,1996)	58	15 राज्य*

*राज्यों के नाम उपलब्ध नहीं।

कार्यक्रम की जानकारी मिल सके। यह टीकाकरण कार्यक्रम 9 दिसंबर, 1995 तथा 20 जनवरी, 1996 को आयोजित किया गया।

8.5.4 परिवार कल्याण कार्यक्रमों पर प्रचार से पहले निदेशालय ने 90 कमजोर समझे जाने वाले जिलों तथा 24 ऐसे जिलों की पहचान की जहां अत्यधिक प्रचार की आवश्यकता थी। इन जिलों में क्षेत्रीय संपर्क योजना चलाई गई। इसके अंतर्गत महिला सम्मेलन, युवा शिविर, स्वस्थ शिशु प्रदर्शनी, क्विज़ प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रमों तथा कार्यशालाओं के जरिए विभिन्न संगठनों से व्यक्तिगत संपर्क साधा गया। इन कार्यक्रमों में छोटी फीचर फिल्मों, वृत्तचित्रों तथा अनेक दृश्य श्रव्य माध्यमों की सहायता ली गई। राजस्थान की इकाइयों ने आखा तीज के अवसर पर बाल–विवाह की बुराइयों के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए गहन अभियान चलाया। बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और असम की इकाइयों ने अगस्त–सितम्बर, 1995 की बाढ़ के दौरान पानी से पैदा होने वाली बीमारियों से लोगों को अवगत कराने के लिए प्रचार कार्यक्रम आयोजित किए। पूर्वोत्तर क्षेत्र में निदेशालय की इकाइयों ने मलेरिया की रोकथाम और उससे निपटने के तरीकों पर प्रचार–अभियान चलाए।

8.5.5 एड्स रोग की रोकथाम के प्रचार के लिए निदेशालय ने जो रणनीति तैयार की है। उसके अंतर्गत क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं को एड्स की संक्रामकता तथा रोग के सामाजिक, आर्थिक और मानवीय प्रभावों की जानकारी दी जाती है और साथ ही व्यपाक जन–जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं। वर्ष 1995-96 के दौरान एड्स के बारे में केरल, असम, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, राजस्थान, मणिपुर, नगालैंड, मेघालय, मिजोरम तथा अरुणाचल प्रदेश में क्षेत्रीय इकाइयों ने कार्यशालाएं आयोजित कीं। आंध्र प्रदेश में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 5 से जुड़े विशाखापटनम और श्रीकाकुलम जिलों में 10 दिन का अभियान चलाया गया। एच.आई.वी. के संक्रमण से रोकथाम के लिए केरल में विशेष कक्षाएं आयोजित की गईं। राजस्थान में कोटा में ट्रक ड्राइवरों के लिए जागरूकता अभियान शुरू किया गया। असम में उत्तर लखीमपुर, हाफलौंग, और नालबाड़ी इकाइयों ने एड्स रोकथाम पर गहन अभियान चलाए तथा पश्चिम बंगाल में कलकत्ता, जलपाइगुड़ी, तथा कूच–बिहार जिलों में एड्स के

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की वैन पर एड्स से संबंधित जानकारी देने वाला संदेश

बारे में लोगों को व्यापक स्तर पर जानकारी दी गई। कर्नाटक की इकाइयों ने गुलबर्गा, बेलगाम और चित्रदुर्गा जिलों में एड्स की रोकथाम के लिए स्वयंसेवी संगठनों के लिए कार्यशालाएं आयोजित कीं।

8.5.6 एड्स की रोकथाम के प्रचार की कार्यनीति की तैयारी तथा उसके क्रियान्वयन और निगरानी के उपायों पर विचार के लिए देहरादून और गुवाहाटी में कार्यशालाएं आयोजित की गईं। राज्य सरकारों तथा केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय से प्राप्त प्रचार सामग्री को व्यापक स्तर पर वितरित किया गया। एक दिसंबर को विश्व एड्स दिवस के अवसर पर भी इस रोग के दुष्परिणामों की जानकारी पर प्रचार केन्द्रित किया गया।

प्रचार गतिविधियों में उपयोग किए गए मेले और उत्सव

मेला/उत्सव	स्थान
नौचंदी मेला	मेरठ
रथ यात्रा	पुरी
गणेश पूजा	राजस्थान
गनगौर मेला	राजस्थान
ओणम	केरल
कामाख्या मेला	गुवाहाटी
शुद्ध महादेव उत्सव	उधमपुर
आदि ब्रदी मेला	चमोली
तिरुपति औद्योगिक, सांस्कृतिक तथा कला मेला	तिरुपति
सुंदरवन मेला	सुंदरवन

व्यक्तिगत स्तरीय प्रयोग और मूल्यांकन परियोजना

8.6.1 उड़ीसा में ढेंकनाल, क्योंझर, फूलबनी और पुरी जिलों के चुनिंदा 16 जिलों में शुष्क भूमि पर चावल की फसल के बारे में 5 महीने की व्यक्तिगत स्तर पर प्रयोग और मूल्यांकन की परियोजना चलाई गई। कटक के केन्द्रीय चावल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित चावल की नई किस्म के संरक्षण और भंडारण के बारे में लोगों को बताने के लिए निदेशालय की चार इकाइयों को संबंधित क्षेत्रों में भेजा गया। इन इकाइयों के कार्यकर्त्ताओं ने किसानों को संगठित कर उनके साथ सामूहिक चर्चा और प्रश्न–उत्तर सत्रों के माध्यम से विशिष्ट कृषि के वांछित तरीकों के बारे में जानकारी दी। इस कार्य में तकनीकी एजेंसियों का भी सहयोग लिया गया।

महात्मा गांधी की 125वीं जयंती

8.7.1 महात्मा गांधी की 125वीं जयंती के सिलसिले में क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने जून से अक्तूबर, 1995 के बीच देशभर में अनेक प्रकार की गतिविधियां आयोजित कीं। इस दौरान फिल्म शो, संगोष्ठियों, भाषण प्रतियोगिताओं, गांधी यात्राओं और कवि सम्मेलनों आदि का आयोजन किया गया। जम्मू–कश्मीर में उधमपुर इकाई ने भारत के बारे में महात्मा गांधी के विचार–दृष्टि पर संगोष्ठी आयोजित की। कर्नाटक में गुलबर्गा इकाई ने संगोष्ठियों और रैलियों का आयोजन किया। उत्तर प्रदेश में रानीखेत, नैनीताल, पिथौरागढ़ और गोपेश्वर इकाइयों ने राज्य सरकार द्वारा चुने गए अनेक गांधी ग्रामों में महात्मा गांधी पर कार्यक्रम आयोजित किए। केरल में कोट्टायम इकाई ने पांच दिवसीय गांधी दर्शन कार्यक्रम आयोजित किया जिसके दौरान जनसभाएं, फोटो प्रदर्शनियां और विशेष कक्षाएं आयोजित की गईं। गुजरात, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, पंजाब, तमिलनाडु और कर्नाटक राज्यों में भी अनेक इकाइयों ने महात्मा गांधी से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों को और प्रभावी बनाने के लिए 'देन केम गांधी', 'नमक आंदोलन' तथा 'डू एण्ड डाई' जैसी फिल्मों का उपयोग किया गया। राष्ट्रपिता की जयंती 2 अक्तूबर के दिन ग्रामीण विकास अभियान का पहला चरण आरंभ किया गया।

मेले और त्यौहार

8.8.1 प्रचार की व्यापकता के लिए क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने अनेक महत्वपूर्ण मेलों और उत्सवों में प्रचार गतिविधियां चलाईं। इनमें मेरठ का नौचंदी मेला, पुरी की रथयात्रा, राजस्थान में गणेश–पूजा और गणगौर मेला, केरल में ओणम त्यौहार, गुवाहाटी का कामाख्या मेला, उधमपुर का शुद्ध महादेव मेला, उत्तर प्रदेश में चमोली जिले में आदि ब्रदी मेला, तिरुपति औद्योगिक, सांस्कृतिक तथा कला उत्सव और सुंदरबन मेला शामिल हैं। राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, सांस्कृतिक समरसता, सामाजिक कुरीतियों का खात्मा तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने से संबंधित विषयों के प्रचार के लिए ऐसे मेलों और उत्सवों का समुचित उपयोग किया गया।

साक्षरता

8.9.1 निदेशालय की इकाइयों ने साक्षरता समितियों के

दिनों/सप्ताहों पर प्रचार आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस	विश्व एड्स दिवस
संयुक्त राष्ट्र के 50 वर्ष	अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस
सड़क सुरक्षा वर्ष–1995	स्वाधीनता दिवस
विश्व जनसंख्या दिवस	गणतंत्र दिवस
विश्व पर्यावरण दिवस	गांधी जयंती
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	बाल दिवस
अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस	डॉ. आंबेडकर जयंती
विश्व सुरक्षा दिवस	सद्भावना दिवस/पखवाड़ा
विश्व मितव्ययता दिवस	कौमी एकता/सप्ताह
विश्व स्वास्थ्य दिवस	रैदास जयंती
मादक पदार्थ विरोधी दिवस	

साथ ताल–मेल कर के जीवंत मनोरंजक कार्यक्रमों और फिल्मों के माध्यम से सभी के लिए प्राथमिक शिक्षा और कामकाजी साक्षरता के महत्व को उजागर किया। कर्नाटक और तमिलनाडु की इकाइयों ने नेहरू युवक केन्द्र के साथ मिलकर साक्षरता अभियान चलाए। साक्षरता को महिलाओं के अधिकारों के प्रयोग में सबसे कारगर माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया गया।

नई आर्थिक नीति

8.10.1 पहले की तरह इस साल भी क्षेत्रीय प्रसार निदेशालय की इकाइयां उदारवादी आर्थिक नीतियों, पुनर्गठित वितरण प्रणाली तथा विश्व व्यापार संगठन में भारत के शामिल होने के बारे में आम जनता में प्रचार करती रहीं। कर्नाटक में हासन इकाई ने नई आर्थिक नीति और व्यापार तथा तटकर आम समझौते 'गैट' के बारे में कवि–सम्मेलन आयोजित किया। असम में बारपेटा इकाई ने भी गैट से संबंधित प्रचार कार्यक्रम आयोजित किए। नई आर्थिक नीतियों के प्रस्तुतीकरण में 'चेतना', 'आशा की किरण', 'समय के साथ' जैसी प्रासंगिक फिल्मों का उपयोग किया गया।

दिन, सप्ताह और पखवाड़े

8.11.1 क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय ने 'अंतर्राष्ट्रीय सहिष्णुता वर्ष', 'संयुक्त राष्ट्र के 50 वर्ष', तथा 'सड़क सुरक्षा वर्ष–1995' पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए। विश्व जनसंख्या दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस, विश्व सुरक्षा दिवस, विश्व मितव्यतता दिवस, विश्व स्वास्थ्य दिवस, अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस, जैसे विशेष मौकों पर इन दिनों से संबंधित प्रचार गतिविधियां आयोजित की गईं। स्वाधीनता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयंती, बाल दिवस, डॉ. आंबेडकर जयंती, सद्भावना दिवस/पखवाड़ा, कौमी एकता दिवस/सप्ताह, जैसे राष्ट्रीय महत्व के अवसरों पर संबंधित प्रचार कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

महिला और बाल विकास

8.12.1 इस वर्ष भी महिलाओं और बच्चों का विकास क्षेत्रीय प्रचार कार्यों में प्राथमिकता के मुद्दे रहे। महिलाओं को अधिक अधिकार संपन्न बनाने के उद्देश्य से महिला समृद्धि योजना, समन्वित बाल विकास सेवाएं, इंदिरा महिला कोष, इंदिरा महिला योजना तथा महिलाओं की भागीदारी वाली अन्य विभिन्न योजनाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने की अनेक प्रचार गतिविधियां आयोजित की गईं। क्षेत्रीय इकाइयों ने बाल विवाह, दहेज तथा बालिकाओं के साथ भेदभाव जैसी कुरीतियों के विरुद्ध विशेष अभियान चलाए। प्रचार अभियानों में पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के आरक्षण पर विशेष बल दिया गया। इकाइयों ने बच्चों के अधिकारों पर भी कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में 'बहू भी बेटी होती है', 'नारी तू नारायणी', 'निकाह', 'सुबह होने तक', 'आशा का प्रतीक', 'वापसी' तथा 'ए विलिंग ग्लोव', जैसी प्रासंगिक फिल्मों

का प्रदर्शन किया गया। इन कार्यक्रमों में महिला संगठनों और स्थानीय संस्थाओं का भी सहयोग लिया गया।

अस्पृश्यता उन्मूलन

8.13.1 अस्पृश्यता मानवता के विरुद्ध अपराध है। विभिन्न क्षेत्रीय इकाइयों द्वारा इस कुरीति के विरुद्ध व्यापक प्रचार किया गया। संत रैदास जयंती, डॉ. बी. आर. आम्बेडकर जयंती, बुद्ध पूर्णिमा और गांधी जयंती जैसे अवसरों पर अस्पृश्यता उन्मूलन के कार्यक्रम आयोजित कर के लोगों को छुआछूत की बुराई के बारे में जागरूक किया गया। संत रैदास, क्राई फार जस्टिस, एन्शिएंट कर्स तथा फार हैपियर टुमारो जैसी फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

मादक पदार्थों का सेवन और मद्य निषेध

8.14.1 शराबबंदी को प्रोत्साहित करने तथा मादक पदार्थों और शराब की लत की बुराइयों को उजागर करने के लिए क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने एलकोहोलिक ड्रिंक, बूंद–बूंद जहर, जाम और अंजाम तथा बौटल्ड कैनिबल सहित शराब के दुष्परिणामों पर अनेक फिल्मों का प्रदर्शन किया।

पर्यावरण और वानिकी

8.15.1 केरल में कोट्टायम इकाई ने इडुकी में पर्यावरण के विषय पर छात्रों के लिए निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस इकाई ने विश्व पर्यावरण दिवस पर क्विज और चित्रकला प्रतियोगिताएं भी आयोजित कीं। केरल की वायनाड इकाई ने साइलेंट वैली नेशलन पार्क अथोरिटीज़ के साथ मिलकर आपसी संवाद का कार्यक्रम आयोजित किया। चंडीगढ़ इकाई ने पर्यावरण संस्थान पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया।

कार्यशालाएं और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

8.16.1 निदेशालय ने अपने संयुक्त निदेशकों, अधिकारियों और क्षेत्रीय प्रचार के लिए देहरादून और गुवाहाटी में दो कार्यशालाओं का आयोजन किया। इसके अलावा, भारतीय जन संचार संस्थान ने ढेंकनाल में क्षेत्रीय प्रचार सहायकों के लिए छह सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। क्षेत्रीय प्रचार अधिकारियों और सहायकों के लिए हैदराबाद, पटना, जयपुर और भोपाल में परिवार कल्याण पर चार कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इनके अलावा भी अनेक विषयों पर कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

पंजाब में आयोजित सद्भावना रैली का एक दृश्य

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के क्षेत्र तथा क्षेत्रीय प्रचार कार्यालय

आंध्र प्रदेश

1. कुडप्पा
2. गंटूर
3. हैदराबाद
4. काकीनाड़ा
5. करनूल
6. नलगौंडा
7. मेढक
8. नेल्लूर
9. निजामाबाद
10. श्रीकाकुलम
11. विशाखापत्तनम
12. वारंगल

अरुणाचल प्रदेश

1. अलोंग
2. अनिनि
3. बोमडिला
4. दापोरिजो
5. खोंसा
6. नामपोंग
7. न्यू इटानगर
8. पासीघाट
9. सेप्पा
10. त्वांग
11. तेजू
12. जीरो

असम

1. बारपेटा
2. दुबरी
3. डिबरुगढ़
4. दिफू
5. गुवाहाटी
6. हाफलोंग
7. जोरहाट
8. नलबाड़ी
9. उत्तर लखीमपुर
10. नौगौंग
11. सिल्चर
12. तेजपुर

बिहार (उत्तर) पटना

1. भागलपुर
2. बेगूसराय
3. छपरा
4. दरभंगा
5. फोरबेसगंज
6. किशनगंज
7. मुंगेर
8. मोतिहारी
9. मुज्जफरपुर
10. पटना
11. सीतामढ़ी

बिहार (दक्षिण) रांची

1. डालटनगंज
2. धनबाद
3. दुमका
4. गया
5. गुमला
6. हजारीबाग
7. जमशेदपुर
8. रांची

गुजरात

1. अहमदाबाद
2. आह्वा
3. भावनगर
4. भुज
5. गोधरा
6. हिम्मतनगर
7. जूनागढ़
8. पालनपुर
9. राजकोट
10. सूरत
11. वड़ोदरा

जम्मू-कश्मीर

1. अनंतनाग
2. बारामूला
3. चडूरा
4. डोडा
5. जम्मू (तवी)
6. कंगन
7. कारगिल
8. कदुआ
9. कुपवाड़ा
10. लेह
11. पुंछ
12. रजौरी
13. सोपिया
14. श्रीनगर
15. उधमपुर

कर्नाटक

1. बंगलूर	5. चित्रदुर्ग	9. मंगलूर
2. बेलगाम	6. धारवाड़	10. मैसूर
3. वेल्लरी	7. गुलबर्ग	11. शिमागो
4. बीजापुर	8. हासन	

केरल

1. एलिप्पी	5. क्विलोन	9. मल्लापुरम
2. कन्नूर	6. त्रिशूर	10. पालघाट
3. कोट्टायम	7. इरनाकुलम	11. तिरूअनंतपुरम्
4. कोझिकोड	8. कालपेटा (वायनाड़)	12. कावारत्ती

मध्य प्रदेश (पूर्वी) रायपुर

1. अंबिकापुर	5. जबलपुर	9. रीवा
2. बालाघाट	6. जगदलपुर	10. शाहडोल
3. बिलासपुर	7. कांकेर	11. सीधी
4. दुर्ग	8. रायपुर	

मध्य प्रदेश (पश्चिमी) भोपाल

1. भोपाल	5. ग्वालियर	9. मंदसौर
2. छतरपुर	6. होशंगाबाद	10. सागर
3. छिंदवाड़ा	7. इंदौर	11. उज्जैन
4. गुना	8. झाबुआ	

महाराष्ट्र और गोवा

1. अहमदनगर	7. कोल्हापुर	13. सतारा
2. अमरावती	8. नागपुर	14. शोलापुर
3. औरंगाबाद	9. नांदेड़	15. वर्धा
4. मुंबई	10. नासिक	16. पणजी
5. चन्द्रपुर	11. पुणे	
6. जलगांव	12. रत्नगिरी	

मेघालय, मिजोरम और त्रिपुरा

1. अगरतला	4. कैलाशहर	7. शिलांग
2. आइजोल	5. लुंगलेई	8. तूरा
3. जोवाई	6. सैहा	10. विलियमनगर

नगालैंड और मणिपुर

1. चंदेल	4. कोहिमा	7. तामेनलोंग
2. चूड़ाचांदपुर	5. मोकोकचुंग	8. तुएनसांग
3. इम्फाल	6. मोन	9. उखरूल

उत्तर पश्चिम

1. अंबाला
2. अमृतसर
3. चंडीगढ़
4. धर्मशाला
5. फिरोजपुर
6. हमीरपुर
7. हिसार
8. जालंधर
9. रिकोंगपेओ
10. लुधियाना
11. मंडी
12. नाहन
13. नारनौल
14. नई दिल्ली (i)
15. नई दिल्ली (ii)
16. पठानकोट
17. राजकोट
18. शिमला

उड़ीसा

1. बालासोर
2. बरीपाड़ा
3. बेरहामपुर
4. भवानीपटना
5. भुवनेश्वर
6. कटक
7. ढेंकनाल
8. जयपोर
9. क्योंझर
10. फुलबनी
11. पुरी
12. संबलपुर

राजस्थान

1. अजमेर
2. अलवर
3. बाडमेर
4. बीकानेर
5. डूंगरपुर
6. जयपुर
7. जैसलमेर
8. जोधपुर
9. कोटा
10. सवाई माधोपुर
11. सीकर
12. श्रीगंगानगर
13. उदयपुर

तमिलनाडु और पांडिचेरी

1. कोयम्बटूर
2. धर्मपुरी
3. मद्रास
4. मदुरै
5. पांडिचेरी
6. रामनाथपुरम
7. सेलम
8. तंजावूर
9. त्रिचिरापल्ली
10. तिरुनेलवेल्ली
11. वेल्लूर

उत्तर प्रदेश (मध्य पूर्व) लखनऊ

1. इलाहाबाद
2. आजमगढ़
3. बांदा
4. गोंडा
5. झांसी
6. कानपुर
7. लखीमपुर–खीरी
8. लखनऊ
9. रायबरेली
10. सुलतानपुर
11. गोरखपुर
12. वाराणसी
13. मैनपुरी

उत्तर प्रदेश (उत्तर पश्चिमी) देहरादून

1. आगरा
2. अलीगढ़
3. बरेली
4. देहरादून
5. गोपेश्वर
6. मेरठ
7. मुरादाबाद
8. मुज्जफरनगर
9. नैनीताल
10. पौड़ी
11. पिथौरागढ़
12. रानीखेत
13. उत्तरकाशी

पश्चिम बंगाल (उत्तर) सिलिगुड़ी

1. कूच बिहार
2. गंगटोक
3. जलपाइगुड़ी
4. जारथांग
5. कलिंपोंग
6. मालदा
7. रायगढ़
8. सिलिगुड़ी

पश्चिम बंगाल (दक्षिण) कलकत्ता

1. बांकुरा
2. बैरकपुर
3. बेरहामपुर
4. बर्दवान
5. कलकत्ता
6. कार–निकोबार
7. चिनसुरा
8. मिदनापुर
9. पोर्ट ब्लेयर
10. रानाघाट
11. कलकत्ता (एफ–डब्ल्यू)

क्षेत्रीय प्रचार इकाई द्वारा ग्रामीण विकास योजनाओं की जानकारी देने हेतु आयोजित जनसभा

9

विज्ञापन और दृश्य प्रचार

विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय

9.1.1 विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय केंद्र सरकार की मल्टी–मीडिया इकाई है। इसका उद्देश्य लोगों को केन्द्र सरकार की गतिविधियों, नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में जानकारी देना तथा उन्हें विकास कार्यों में भागीदार बनने के लिए प्रेरित करना है। निदेशालय अपने ग्राहक मंत्रालयोंऔर विभागों के साथ–साथ कुछ स्वायत्त संस्थाओं और सार्वजनिक उपक्रमों को विभिन्न भाषाओं में जन–संचार संबंधी सेवाएं उपलब्ध कराता है। ये सेवाएं मुद्रित सामग्री, पत्र–पत्रिकाओं में विज्ञापनों, रेडियो और टेलीविजन से दृश्य–श्रव्य प्रचार, बाह्य प्रचार तथा प्रदर्शनियों के रूप में होती हैं। निदेशालय ने जिन विषयों पर विशेष जोर दिया उनमें ग्रामीण विकास कार्यक्रम, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, बालिकाओं की स्थिति में सुधार , टीकाकरण, महिला तथा बाल विकास, राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव, रक्षा, नई आर्थिक नीति, पर्यावरण, साक्षरता, रोजगार, चुनाव, एड्स रोग, मादक पदार्थों का दुरुपयोग तथा नशाबंदी, सीमाशुल्क तथा केन्द्रीय राजस्व, आयकर और ऊर्जा संरक्षण आदि शामिल हैं।

सूचना और प्रसारण मंत्री श्री पी.ए. संगमा निदेशालय द्वारा आयोजित एक प्रदर्शनी में

9.1.2 विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय के मुख्यालय में कई इकाइयां काम कर रही हैं। इनमे से प्रमुख हैं :– प्रचार अभियान, विज्ञापन, बाह्य प्रचार, मुद्रित प्रचार, प्रदर्शनी, इलेक्ट्रानिक डेटा प्रोसेसिंग केन्द्र, दृश्य–श्रव्य सैल, स्टुडिओ और डाक से बड़े पैमाने पर मुद्रित प्रचार सामग्री भेजने के लिए मास–मेलिंग इकाई। विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय के देशभर में कई कार्यालय हैं। बंगलौर और गुवाहाटी में निदेशालय के क्षेत्रीय कार्यालय हैं जो अपने–अपने क्षेत्र में निदेशालय की गतिविधियों में तालमेल और निगरानी रखने का कार्य करते हैं। कलकत्ता और मद्रास में निदेशालय के वितरण केन्द्र हैं जो विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित प्रचार सामग्री के वितरण की व्यवस्था करते हैं। निदेशालय की 35 क्षेत्रीय प्रदर्शनी इकाइयां हैं जिनमें 7 सचल प्रदर्शनी वाहन, 7 परिवार कल्याण इकाइयां और 21 सामान्य क्षेत्रीय प्रदर्शनी इकाइयां शामिल हैं। इसके अलावा मद्रास में एक क्षेत्रीय प्रदर्शनी सामग्री निर्माण कार्यशाला और गुवाहाटी में प्रदर्शनी सामग्री निर्माण केन्द्र भी काम कर रहे हैं जो मुख्यालय स्थित प्रदर्शनी प्रभाग को प्रचार सामग्री के आकलन, निर्माण और प्रदर्शन में मदद करते हैं।

विशेष घटनाएं

9.2.1 6 फरवरी 1996 को सूचना और प्रसारण मंत्री ने मेघालय में तुरा में 'एक राष्ट्र–एक प्राण' नाम की एक विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इसमें पूर्वोत्तर के एक खास इलाके को प्रदर्शित किया गया था। इस प्रदर्शनी में भारत और यहां के लोगों, यहां के सांस्कृतिक विकास, विविधता और पिछले कई वर्षों में हुई प्रगति को भी दिखाया गया था। इसी दिन सूचना और प्रसारण मंत्री ने तुरा में विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय की क्षेत्रीय प्रदर्शनी इकाई का भी उद्घाटन किया। यह इकाई इटानगर से यहां लाई गई हैं जहां विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय की दो इकाइयां काम कर रही थीं जिनमें से एक सचल इकाई थी। तुरा की क्षेत्रीय प्रदर्शनी

डीएवीपी : क्षेत्रीय प्रदर्शनी इकाई

संख्या	एकक का नाम	इकाई	केंद्रशासित प्रदेश/राज्य का नाम	क्षेत्राधिकार
1.	अगरतला	सामान्य	त्रिपुरा	त्रिपुरा, मिजोरम
2.	अहमदाबाद	सामान्य	गुजरात	गुजरात, राजस्थान, दमन और दीव, दादरा और नगर हवेली
3.	बंगलौर	सामान्य	कर्नाटक	कर्नाटक
4.	भुवनेश्वर	सामान्य	उड़ीसा	बिहार (दक्षिणी)
5.	मुंबई	सामान्य	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र और गोवा
6.	कलकत्ता	सामान्य	पश्चिम बंगाल	पश्चिम बंगाल, सिक्किम और बिहार
7.	चंडीगढ़	सामान्य	केन्द्र शासित	चंडीगढ़, पंजाब और हरियाणा
8.	गुवाहाटी	सामान्य	असम	निचला असम और मेघालय
9.	मुख्यालय नं. I	सामान्य	नई दिल्ली	दिल्ली के साथ–साथ विशेष कार्यक्रमों के लिए पूरा देश
10.	मुख्यालय नं. II	सामान्य	नई दिल्ली	दिल्ली के साथ–साथ विशेष कार्यक्रमों के लिए पूरा देश
11.	हैदराबाद	सामान्य	आंध्र प्रदेश	आंध्र प्रदेश

12.	इंदौर	सामान्य	मध्य प्रदेश	मध्य प्रदेश
13.	इम्फाल	सामान्य	मणिपुर	मणिपुर
14.	जम्मू	सामान्य	जम्मू और कश्मीर	जम्मू और कश्मीर
15.	जोरहाट	सामान्य	असम	ऊपरी असम
16.	कोहिमा	सामान्य	नगालैंड	नगालैंड
17.	लखनऊ	सामान्य	उत्तर प्रदेश	उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार
18.	मद्रास	सामान्य	तमिलनाडु	तमिलनाडु, पांडिचेरी
19.	शिमला	सामान्य	हिमाचल प्रदेश	हिमाचल प्रदेश
20.	तिरुअनंतपुरम	सामान्य	केरल	केरल
21.	तुरा	सामान्य	मेघालय, असम	गारो पहाड़ी और इससे लगे असम के ज़िले
22.	जयपुर	परि. कल्याण	राजस्थान	राजस्थान, गुजरात
23.	भोपाल	परि. कल्याण	मध्य प्रदेश	मध्य प्रदेश और राजस्थान
24.	कलकत्ता	परि. कल्याण	पश्चिम बंगाल	पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र
25.	वाराणसी	परि. कल्याण	उत्तर प्रदेश	पूर्वोत्तर उत्तर प्रदेश
26.	लखनऊ	परि. कल्याण	उत्तर प्रदेश	उत्तर प्रदेश और बिहार
27.	नई दिल्ली	परि. कल्याण	नई दिल्ली	दिल्लीऔर आसपास के क्षेत्र तथा विशेष कार्य
28.	पटना	परि. कल्याण	बिहार	बिहार
29.	अहमदाबाद	वैन	गुजरात, दमन और दीव,	गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा दादरा और नगर हवेली
30.	आइजोल	वैन	मिज़ोरम	मिज़ोरम
31.	बीकानेर	वैन	राजस्थान	राजस्थान
32.	कलकत्ता	वैन	पश्चिम बंगाल	पश्चिम बंगाल
33.	इटानगर	वैन	अरुणाचल प्रदेश	अरुणाचल प्रदेश
34.	पोर्ट ब्लेयर	वैन	अं और नि. द्वीपसमूह	अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह
35.	शिलांग	वैन	मेघालय	असम और मेघालय

टिप्पणी:

परि. कल्याण : परिवार कल्याण इकाई

वैन : सचल वैन एकक

1995-96 में विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय की उपलब्धियां

समाचार पत्रों को विज्ञापन
162529 विज्ञापन

मुद्रण सामग्री
33337975 प्रतियां

बाह्य प्रचार
150756 होर्डिंग

प्रदर्शनिया
2025 दिवस

आकाशवाणी/दूरदर्शन प्रसारण
19360 प्रसारण

श्रव्य एवं दृश्य स्पॉट
4598 स्पॉट

34703975 मुद्रित सामग्री डाक द्वारा भेजी गई

इकाई गारो पहाड़ी इलाके के साथ–साथ असम के कुछ पड़ोसी जिलों में भी काम करेगी।

9.2.2 निदेशालय ने देशभर में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार किया। ग्रामीण विकास पर मंत्रालय के विशेष बहु–माध्यम प्रचार अभियान में निदेशालय ने महत्वपूर्ण सहयोगी की भूमिका निभाई। इस अभियान के लिए निदेशालय ने छह पोस्टरों की एक श्रृंखला तैयार की और इसका वितरण किया। इसके अलावा ग्रामीण विकास के विभिन्न कार्यक्रमों, जैसे पंचायती राज, जवाहर रोजगार योजना, सुनिश्चित रोजगार योजना, ग्रामीण जन आपूर्ति एवं स्वच्छता, सूखे की आशंका वाले इलाकों के विकास के कार्यक्रम, बंजर भूमि विकास कार्यक्रम, समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम, राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम आदि के बारे में सात फोल्डर, चार पुस्तिकाएं और 28 परचे तैयार कर बांटे गए। यह सारी प्रचार सामग्री पूर्वोत्तर क्षेत्र की विभिन्न भाषाओं/बोलियों में बनाई गई। अखिल भारतीय स्तर पर चलाए गए प्रचार अभियान के दौरान, हिंदी, अंग्रेजी और सभी क्षेत्रीय भाषाओं में समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित किए गए। विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में दृश्य श्रव्य तथा बाह्य प्रचार भी किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में इस बहु माध्यम प्रचार के अभियान के तहत 'गांव विकास की ओर' और 'एक राष्ट्र–एक प्राण' नाम की प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया। खंड विकास अधिकारियों, जिला ग्रामीण विकास एजेंसियों, पंचायतों, क्षेत्र प्रचार इकाइयों, निदेशालय की क्षेत्रीय प्रदर्शनी इकाइयों तथा विभिन्न संस्थाओं/कार्यालयों तथा लोगों को मुद्रित सामग्री की 1.8 करोड़ प्रतियां प्रेषित की गई। इसमें डाक से सीधे भेजी गई मुद्रित सामग्री भी शामिल हैं। इसके अलावा विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने हिंदी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में जनवरी, 1996 से रेडियो पर तीन साप्ताहिक प्रायोजित कार्यक्रमों का भी प्रसारण किया। इनके नाम हैं–'चलो गांव की ओर', 'गांव विकास की ओर' और 'कल हमारा होगा'।

प्रचार सामग्री का मुद्रण

9.3.1 अप्रैल 1995 से मार्च 1996 तक निदेशालय ने देश की अर्थव्यवस्था से संबंधित विभिन्न विषयों जैसे ग्रामीण विकास, लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण, स्वास्थ्य, श्रमिक कल्याण, संस्कृति, अंतर्राष्ट्रीय संबंध आदि पर पुस्तिकाएं, पोस्टर, फोल्डर और परचे प्रकाशित किए। इस प्रचार सामग्री का उपयोग दो बहु–माध्यम प्रचार अभियानों में किया गया।

- पंचायती राज–सच्चा स्वराज (पुस्तिका)
- भारत का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह–1996
  –दैनिक समारोह बुलेटिन
  –सिनेमा ऑफ द वर्ल्ड (स्मारिका)
  – इंडियन सिनेमा (स्मारिका)
- केन्द्रीय बजट 1995-96
  –इकोनॉमी आन द अपस्विंग : एसेंट ऑन पावर्टी एलीवेशन (पुस्तिका)
- महात्मा गांधी की 125वीं जयंती
  –महात्मा गांधी : टॉलेस्ट इंडियन ऑफ द सेंचुरी पर्ल्स ऑफ विज़डम

मुदित सामग्री के विषय

ग्रामीण विकास	सुरक्षित मातृत्व
पंचायती राज	डायरिया
जवाहर रोजगार योजना	**कल्याण और श्रम**
समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम	मादक पदार्थों के दुरुपयोग के खिलाफ लड़ाई
स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति	विकलांगों की देखभाल
बंजरभूमि विकास कार्यक्रम	महिला समृद्धि योजना
सुनिश्चित रोजगार योजना	श्रमिकों संबंधी मानदंडों में सुधार के प्रति वचनबद्धता
राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम	**सांस्कृतिक अंतर्राष्ट्रीय संबंध**
अर्थव्यवस्था	सार्क और एशियाई शताब्दी
केन्द्रीय बजट 1995-96	1995—सहिष्णुता वर्ष
अर्थव्यवस्था बजट 1995-96	भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष
आय कर	पश्चिमी आस्ट्रेलियाई फिल्म समारोह
स्वास्थ्य	फ्रांसीसी फिल्म समारोह (गावमोंट)
स्वस्थ रक्त	

न्यू विजन न्यू होप
- मादक पदार्थों का दुरूपयोग
  –वह पल और पहला कश (पुस्तिका)
- स्वास्थ्य
  डायरिया (पर्चा)
- जलियांवाला बाग (स्मारिका)
- संयुक्त राष्ट्र के 50 वर्ष (फोल्डर)

9.3.2 विशेष अवसरों पर प्रधानमंत्री के भाषणों को पुस्तिकाओं/पत्रकों के रूप में प्रकाशित किया गया। इनमें 'श्रमिकों संबंधी मानदंडों में सुधार की वचनबद्धता', '1995–सहिष्णुता वर्ष', 'सार्क और एशियाई शताब्दी, 'गरीबों के लिए नए कार्यक्रम', 'इल्म–ओ–अगाही–फितरते इन्सानी का तकाजा', 'विविधताओं से भरे भारत के अभिन्न अंग जम्मू–कश्मीर में भाग्य को बदलने का सही समय', 'गरीबी की चुनौती से निपटने का सार्क देशों का संकल्प', 'हिंद महासागर के देशों में आर्थिक सहयोग', 'गरीबी उन्मूलन के लिए रचनात्मक वार्ता', 'रचनात्मक निष्पक्षता–सच्ची धर्म –निरपेक्षता का लक्षण', 'गुट निरपेक्ष आंदोलन की चुनौतियां' और 'विवादों को निपटाने के लिए ICADAR'। इन सभी को प्रकाशित कर अखिल भारतीय स्तर पर बांटा गया। विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण को 'जनता के संकल्प से राष्ट्र की प्रगति–गरीबों के लिए नए कार्यक्रम हमारी प्राथमिकता' शीर्षक से प्रकाशित किया।

9.3.3 इसके अलावा 'टोकाडी मोहराजी', 'ज्ञानी जैल सिंह', 'स्वामी विवेकानंद', 'भारत में क्रिकेट', 'कस्तूरबा ट्रस्ट', 'टाटा इंस्टीट्यूट पर हिंदी और अंग्रेजी में स्टैम्प फोल्डर भी प्रकाशित किए गए। पांचवें विश्व हिंदी सम्मेलन पर हिंदी और अंग्रेजी में विशेष सामग्री प्रकाशित की गई। इसके अलावा 1996 के आम चुनाव के बारे में एक संदर्भ–पुस्तिका भी प्रकाशित की गई। राजभाषा अधिनियम 1963 के संबंध में सूचना और प्रसारण मंत्री की अपील वॉलहैंगर के रूप में प्रकाशित की। सरकारी कैलेण्डर और डायरी का आकल्पन तथा प्रकाशन किया।

9.3.4 अप्रैल 1995 से मार्च 1996 तक निदेशालय ने हिंदी, अंग्रेजी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में कुल मिलाकर 110 प्रकाशनों की करीब 3.33 करोड़ प्रतियां प्रकाशित कीं। इनके वितरण के लिए बड़े पैमाने पर डाक प्रेषण करने वाली मास

1995-96 में भाषावार मुद्रण
(प्रतिशत में)

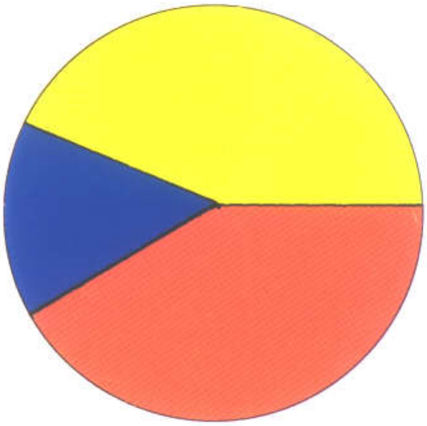

समाचारपत्रों/पत्रिकाओं के नाम दर्ज थे। भर्ती, टेंडर और नीलामी से संबंधित वर्गीकृत विज्ञापनों के साथ–साथ निदेशालय ने प्रचार के अनेक विषयों पर भी विज्ञापन जारी किए। इसके अलावा विशेष अवसरों/दिवसों पर समाचारपत्रों में परिशिष्ट विज्ञापन भी छपवाए गए।

9.4.2 विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने अप्रैल 1995 से मार्च 1996 तक विभिन्न समाचारपत्रों में प्रकाशन के लिए 18,270 विज्ञापन जारी किए। इनमें 17,793 वर्गीकृत विज्ञापनों और 477 डिस्प्ले विज्ञापनों के रूप में प्रकाशित किए गए। ये विज्ञापन देशभर की 5,000 से अधिक पत्र–पत्रिकाओं में हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में छपे।

प्रदर्शनियां

9.5.1 विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने अपनी 35 क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों की सहायता से (इनमें 7 सचल प्रदर्शनी वाहन, 7 परिवार कल्याण क्षेत्रीय प्रचार इकाइयां और 21 सामान्य क्षेत्रीय प्रचार इकाइयां शामिल हैं) सरकार के विभिन्न सामाजिक आर्थिक संदेशों का प्रचार–प्रसार किया।

डीएवीपी : जारी किए गए विज्ञापनों के विषय

इंदिरा आवास योजना
राष्ट्रीय एकता
तेल संरक्षण
मादक पदार्थों का दुरुपयोग
पंचायती राज
राष्ट्रीय बचत संगठन
महात्मा गांधी की 125वीं जन्मशती
अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस
अंतर्राष्ट्रीय प्रौढ़ दिवस
सामाजिक न्याय की ओर बढ़ते कदम
स्वैच्छिक रक्त दान दिवस
पल्स पोलियो टीकाकरण कार्यक्रम
इंदिरा विकास पत्र
आय कर
गैर–पारंपरिक उर्जा स्रोत
कृषि क्षेत्र
संपूर्ण स्वास्थ्य मेला
कर्मचारी पेंशन योजना 1995

विशेष आकर्षण

विश्व जनसंख्या दिवस
विश्व विकलांग दिवस
डॉ. भीमराव आम्बेडकर जन्मशती
विश्व संचार दिवस
बाल दिवस
राष्ट्रीय विनाश नियंत्रण दिवस
विश्व एड्स दिवस
अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 1996 का कार्यक्रम

मेलिंग इकाई की भी मदद ली गई।

समाचारपत्रों में विज्ञापन

9.4.1 विभिन्न केन्द्रीय मंत्रालयों/विभागों, कुछ स्वायत्त संस्थाओं तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए समाचारपत्रों में विज्ञापन दिए गए। इसके लिए निदेशालय की सूची में वर्ष के दौरान 5,000 से अधिक

विशेष प्रदर्शनियां

9.6.1 नई दिल्ली में 9-10 अक्तूबर 1995 को आयोजित पंचायती राज सम्मेलन के अवसर पर निदेशालय ने दो प्रदर्शनियों का आयोजन किया। इनमें से एक ग्रामीण विकास पर और दूसरी महात्मा गांधी पर थी। निदेशालय ने ग्रामीण विकास के क्षेत्र में 18 अन्य मंत्रालयों और विभागों की विभिन्न

गतिविधियों के बारे में एक विस्तृत प्रदर्शनी के आयोजन और समन्वय में भी सहायता दी। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन ग्रामीण क्षेत्र और रोजगार मंत्री ने किया। ग्रामीण विकास से संबंधित विभिन्न विषयों, जैसे पंचायती राज, प्रधानमंत्री की सुनिश्चित रोजगार योजना, ग्रामीण जल–आपूर्ति और स्वच्छता कार्यक्रम, जवाहर रोजगार योजना और समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम आदि पर हिंदी तथा सभी क्षेत्रीय भाषाओं में पोस्टरों, फोल्डरों और पुस्तिकाओं की 1 लाख 50 हजार से अधिक प्रतियां सम्मेलन में भाग लेने आए प्रतिनिधियों को बांटी गईं।

9.6.2 विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने 16 से 21 अक्तूबर 1995 तक 'भारत में सिनेमा के 100 वर्ष' विषय पर मारीशस में एक भव्य फोटो प्रदर्शनी आयोजित की। इसका उद्घाटन वहां के कला, संस्कृति और युवा विकास मंत्री ने किया। इसमें पिछले 100 वर्षों में भारत में सिनेमा के विकास के साथ–साथ इसकी प्रमुख उपलब्धियों को भी प्रदर्शित किया गया था। यह प्रदर्शनी काफी लोकप्रिय हुई और मारीशस के अनेक गणमान्य लोगों ने इसकी प्रशंसा की।

9.6.3 'भारत में सिनेमा के 100 वर्ष' नाम की प्रदर्शनी हैदराबाद, गुवाहाटी, कलकत्ता, कटक और तिरुअनंतपुरम में भी लगाई गई। इस विषय पर पहली प्रदर्शनी जनवरी 1995 में मुंबई में आयोजित की गई। नई दिल्ली के सिरीफोर्ट में 42वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह के अवसर पर पुरस्कृत फिल्मों के चित्रों, पोस्टरों और स्टिल छायाचित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई।

9.6.4 भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह–1996 के अवसर पर भी एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन तत्कालीन सूचना और प्रसारण राज्यमंत्री श्री पी. एम. सईद ने किया।

9.6.5 विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने डाक्यूमेंटरी और लघु फिल्मों के अंतर्राष्ट्रीय समारोह के अवसर पर मुंबई के नेहरू सेंटर में एक प्रदर्शनी आयोजित की। इसका उद्घाटन वृत्तचित्रों के वरिष्ठ निर्माता श्री अडूर गोपालकृष्णन ने किया। इसमें भारत में छोटी फिल्मों के विकास और इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया। 10,000 से अधिक लोग, जिनमें फिल्मी हस्तियां और पत्रकार भी शामिल थे, यह प्रदर्शनी देखने आए।

9.6.6 महात्मा गांधी की 125वीं जयंती के सिलसिले में निदेशालय ने जौनपुर, इलाहाबाद, साहिबाबाद, पांडिचेरी, कराइकल, हरिपाद और मुंबई में विशेष प्रदर्शनियां आयोजित कीं। देशभर में 35 से अधिक प्रदर्शनियां लगाई गईं।

9.6.7 देश के विभिन्न भागों में परिवार कल्याण पर 'छोटा परिवार–सुख का आधार' नाम की 45 प्रदर्शनियां आयोजित की गईं जो कुल 400 से भी अधिक दिन चलीं।

9.6.8 आठवीं राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता के अवसर पर निदेशालय ने नई दिल्ली में रबीन्द्र भवन में 'जीवन और पर्यावरण' विषय पर एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित की। इसका उद्घाटन सूचना और प्रसारण मंत्री श्री पी.ए. संगमा ने किया। इस अवसर पर सूचना और प्रसारण राज्यमंत्री श्री पी.एम. सईद भी उपस्थित थे।

9.6.9 सद्भावना समारोह के अवसर पर उड़ीसा, जम्मू–कश्मीर, गुजरात, पश्चिम बंगाल, नगालैंड, असम, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश और दिल्ली में 'एक राष्ट्र–एक प्राण', नाम की प्रदर्शनी आयोजित की गई। यह कुल 125 दिन तक चली। मेरठ में नौचंदी मेले के मौके पर राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव पर विशेष प्रदर्शनी लगाई गई जिसे बहुत से लोगों ने देखा।

9.6.10 अप्रैल 1995 से मार्च 1996 तक निदेशालय ने 490 प्रदर्शनियां आयोजित कीं जो 2,025 प्रदर्शनी–दिवसों तक चलीं।

बाह्य प्रचार

9.7.1 बाह्य प्रचार स्कंध ने विभिन्न सामाजिक–आर्थिक विषयों पर देश भर में व्यापक प्रचार किया। इनमें ग्रामीण विकास, मादक पदार्थों के दुरुपयोग, एड्स बीमारी के बारे में जानकारी, उपभोक्ता अधिकार, अस्पृश्यता, अनुमानित कर, महिला समृद्धि योजना, हस्तशिल्प, नौ–सेना और थलसेना में भर्ती, आईएसआई चिह्न, 42वां राष्ट्रीय फिल्म समारोह, भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह–1996 आदि शामिल थे। बाह्य प्रचार में होर्डिंग, बैनर, सिनेमा स्लाइड, वालपेंटिंग और बस पैनलों आदि का इस्तेमाल किया गया।

विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय के विभिन्न अभियान

9.7.2 ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के संदेश के प्रचार के लिए व्यापक अभियान छेड़ा गया। इसमें जवाहर रोजगार योजना, समन्वित ग्रामीण विकस कार्यक्रम, प्रधानमंत्री रोजगार योजना, पंचायती राज, सुनिश्चित रोजगार योजना, इंदिरा आवास योजना आदि का प्रचार किया गया। इसके लिए देशभर में हिंदी, अंग्रेजी, और सभी क्षेत्रीय भाषाओं में 130 होर्डिंग, 3,382 बस पैनल विज्ञापनों, 3,750 किओस्क, 55,752 सिनेमा स्लाइडों, 200 बैनरों, 50 बस–क्यू–शेल्टरों और 2,035 वालपेंटिंग का इस्तेमाल किया गया।

9.7.3 मादक पदार्थों के दुरुपयोग की रोकथाम के लिए अखिल भारतीय स्तर पर एक व्यापक अभियान छेड़ा गया। इसके लिए महात्मा गांधी के तीन बंदरों के प्रतीक बनाकर 'ड्रग्स को देखो नहीं, ड्रग्स को चखो नहीं, ड्रग्स की बात सुने नहीं' का संदेश प्रचारित किया गया। 180 से अधिक होर्डिंग, 1,375 कियोस्क, 120 बस क्यू शेल्टर, 100 सिनेमा स्लाइड और 50 बैनरों के जरिए मादक पदार्थों के दुरुपयोग के संदेश का प्रचार किया गया।

9.7.4 भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह–1996 के प्रचार के लिए व्यापक अभियान चलाया गया। इसके लिए 37 होर्डिंग, 600 कियोस्क, 100 बस पैनल, 100 सिनेमा स्लाइड, 120 बैनर और 28 कार्यक्रम बोर्डों का इस्तेमाल किया गया तथा विभिन्न सिनेमा हॉलों में फिल्मों के प्रदर्शन के कार्यक्रम का प्रचार किया गया।

9.7.5 अस्पृश्यता के खिलाफ जनमत तैयार करने के लिए व्यापक अभियान छेड़ा गया। इसके अंतर्गत करीब 18,000 सिनेमा स्लाइडों, 1,375 कियोस्को, 275 बस पैनलों, 120 बस क्यू शेल्टरों और होर्डिंग का इस्तेमाल किया गया।

9.7.6 विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने अनुमानित कर योजना का भी प्रचार किया और इसके लिए 2,290 बस पैनलों तथा 200 कियोस्क का इस्तेमाल किया।

9.7.7 महिला समृद्धि योजना के प्रचार के लिए तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक में दीवारों पर वॉलपेंटिंग का सहारा लिया गया। हिंदी, अंग्रेजी और सभी क्षेत्रीय भाषाओं में सिनेमा स्लाइडों की पूरी श्रृंखला तैयार की गई जिसके तहत कुल 9,000 स्लाइडें बनाई गईं। देशभर के सिनेमा हॉलों में इनका प्रदर्शन किया गया।

9.7.8 मेरठ में नौचंदी मेले के अवसर पर निदेशालय ने

विभिन्न सामाजिक विषयों पर 200 कियोस्क, 20 होर्डिंग और 50 बस पैनलों का प्रचार के लिए उपयोग किया।

9.7.9 उपभोक्ता अधिकार दिवस के सिलसिले में निदेशालय ने 925 बस पैनलों, 30 होर्डिंग, 100 कियोस्क और 50 बस क्यू शेल्टरों का प्रचार के लिए इस्तेमाल किया।

9.7.10 अप्रैल 1995 से मार्च 1996 तक विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने कुल 584 होर्डिंग; 8,180 कियोस्क; 540 बैनर; 1,30,120 सिनेमा स्लाइड; 2,335 वॉल पेंटिंग; 8,607 बस पैनल और 390 बस क्यू शेल्टर विज्ञापनों का निर्माण कर उनका प्रदर्शन किया।

निदेशालय के श्रव्य और दृश्य प्रचार

9.8.1 श्रव्य और दृश्य प्रकोष्ठ ने ऊपर बताए गए विभिन्न सामाजिक–आर्थिक विषयों का व्यापक प्रचार किया। इनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं :

- पल्स पोलियो योजना
- जवाहर रोजगार योजना
- इन्दिरा आवास योजना
- राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम
- राजीव गांधी पेयजल मिशन
- पंचायती राज
- सुनिश्चित रोजगार योजना
- विकलांग कल्याण
- आयकर कार्यक्रम
- महिलाओं को एकसमान मताधिकार
- कलम लिखते नहीं इतिहास
- ड्रग्स को देखे नहीं, ड्रग्स को चखें नहीं, ड्रग्स की बात सुने नहीं।

9.8.2 आई.एस.आई. चिह्न के उपयोग और दुरुपयोग के बारे में बारह मिनट की डॉक्यूमेण्टरी फिल्म बनाई गई। 'भ्रामक विज्ञापनों' पर भी बीस मिनट की एक फिल्म का निर्माण किया गया। इनका क्षेत्रीय भाषाओं में रूपांतरण भी किया गया।

9.8.3 छोटा परिवार–सुखी परिवार, जीवन साथी के प्रति उत्तरदायित्व, गर्भवती महिलाओं का आहार, नवजात शिशुओं की देखभाल आदि विषयों पर आडियो स्पॉट/जिंगल बनाए गए।

9.8.4 निदेशालय ने सात साप्ताहिक रेडियो कार्यक्रम भी तैयार किए। इनके नाम हैं। : समाज–कल्याण विषय पर 'आओ हाथ बढ़ाएं', गैर–पारम्परिक ऊर्जा स्रोतों पर 'नई राह अपनाओ', महिला और बाल विकास पर 'नया सवेरा', परिवार कल्याण पर 'हसीन लम्हे' और 'यह भी खूब रही' उपभोक्ता संरक्षण पर 'अपने अधिकार' और खाद्य पदार्थ तथा पोषाहार पर 'खूब बने तस्वीर'। देशभर में आकाशवाणी के 30 विज्ञापन प्रसारण सेवा केंद्रों से हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में हर सप्ताह इनका प्रसारण किया गया।

9.8.5 इसके अलावा निदेशालय ने जनवरी 1996 से ग्रामीण विकास पर तीन साप्ताहिक प्रायोजित कार्यक्रमों का प्रसारण आरंभ किया है। इनके नाम हैं : 'चलो गांव की ओर', 'गांव विकास की ओर', और 'कल हमारा होगा'। श्रव्य–दृश्य प्रकोष्ठ ने परिवार कल्याण पर चार टेली फिल्मों का निर्माण किया है।

9.8.6 अप्रैल 1995 से मार्च 1996 तक विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने 4,484 आडियो कार्यक्रम बनाए हैं। इसके अलावा 114 वीडियो कार्यक्रमों, स्पॉट क्विकी, लघु फिल्मों का भी निर्माण किया गया है। आडियो और वीडियो कार्यक्रमों का रेडियो से 19,220 बार और टेलीविजन से 140 बार प्रसारण किया गया। आकाशवाणी और दूरदर्शन ने कई आडियो और वीडियो कार्यक्रमों का मुफ्त प्रसारण भी किया।

10

फोटो प्रचार

फोटो प्रभाग

10.1.1 फोटोग्राफी के क्षेत्र में फोटो प्रभाग, देश में फोटो बनाने वाली अपनी किस्म की सबसे बड़ी इकाई है। यह प्रभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय की प्रचार इकाइयों, केंद्रीय और राज्य सरकारों के मंत्रालयों/विभागों, राष्ट्रपति सचिवालय, उप-राष्ट्रपति सचिवालय, प्रधानमंत्री कार्यालय, लोकसभा/राज्यसभा सचिवालय और विदेश मंत्रालय के विदेश प्रचार विभाग के जरिये विदेशों में भारतीय दूतावासों को फोटोग्राफ देता है। यह प्रभाग प्रचार संगठनों के अलावा आम लोगों को भी श्वेत-श्याम और रंगीन फोटो तथा रंगीन पारदर्शियां/ट्रांसपेरेन्सी उपलब्ध कराता है। अप्रैल 1995 से मार्च 1996 के दौरान प्रभाग ने 6.67 लाख रुपये राजस्व अर्जित किया।

10.1.2 प्रभाग के मुख्यालय में विभिन्न प्रकार के फोटोग्राफिक कार्यों के लिए सुसज्जित प्रयोगशालाएं और उपकरण हैं। मुख्य कार्यालय में फोटो डेटा बैंक भी स्थापित

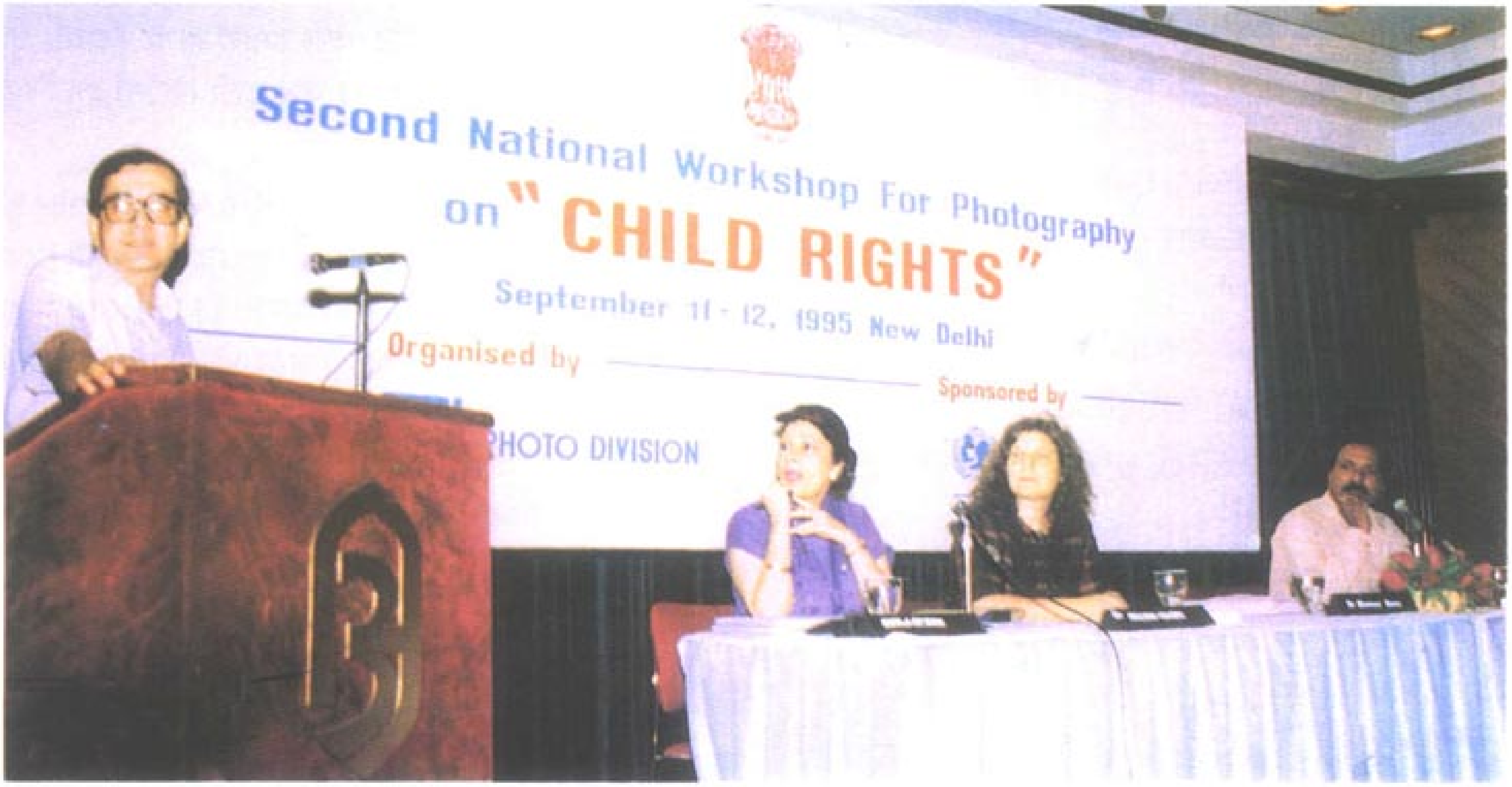

फोटो प्रभाग द्वारा आयोजित एक कार्यशाला

किया गया है और इस बैंक को सभी क्षेत्रीय कार्यालयों से जोड़ने के नेटवर्क पर काम चल रहा है। फोटो डेटा बैंक में फोटोग्राफ रिकार्ड करने का भी काम चल रहा है। प्रभाग के चार क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई, कलकत्ता, मद्रास तथा गुवाहाटी में हैं।

फोटोग्राफों (रंगीन तथा श्वेत–श्याम वर्गों में 13-13) को चुना। निर्णायकों ने प्रदर्शनी में लगाने के लिए भी 76 फोटोग्राफ चुने। निर्णायक मंडल के सदस्य थे – सर्वश्री पद्मश्री वीरेन्द्र प्रभाकर, श्री मदन माहटा और श्री ओ.पी. जोरा। पुरस्कार

वर्ष 1995-96 के दौरान फोटो प्रभाग ने निम्नलिखित कार्यों को पूरा किया		
i)	समाचार और फीचर कार्यों के लिए गए फोटो (श्वेत–श्याम और रंगीन)	3,598
ii)	नेगेटिवों से काम लिया गया (श्वेत–श्याम और रंगीन दोनों)	88,102
iii)	रंगीन स्लाइड्स/पारदर्शियां तैयार की गईं	49
iv)	श्वेत–श्याम फोटो तैयार किए गए	3,55,373
v)	रंगीन फोटो तैयार किए गए	53,693
vi)	श्वेत–श्याम और रंगीन (कुल फोटो तैयार किए गए)	4,09,066
vii)	कुल फोटो एलबम/वैलेट्स तैयार किए गए	112

प्रमुख कवरेज

10.2.1 प्रभाग ने देश के विभिन्न भागों में राष्ट्रपति, उप–राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की यात्राओं के बड़ी संख्या में फोटो लिए। प्रधानमंत्री की मलेशिया, मिस्र, कोलम्बिया, अमेरिका, बुर्किनाफासो, अर्जेण्टीना और घाना के दौरों की भी फोटो कवरेज की गई। विभाग ने नई दिल्ली में हुए आठवें दक्षेस (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन–सार्क) शिखर सम्मेलन की भी व्यापक कवरेज की। ये फोटोग्राफ पत्र सूचना कर्यालय के जरिए देशभर में जारी किए गए और विदेश मंत्रालय के विदेश प्रचार प्रभाग के जरिए विदेशों में भारतीय मिशनों में जारी किए गए।

10.2.2 फोटो प्रभाग ने विदेशों के गणमान्य व्यक्तियों और राज्याध्यक्षों/शासनाध्यक्षों की भारत यात्राओं की भी फोटो कवरेज की।

10.2.3 फोटो प्रभाग ने आठवीं राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता आयोजित की। इसमें देशभर के शौकिया फोटोग्राफरों को रंगीन और श्वेत–श्याम–दो वर्गों में अधिकतम चार फोटोग्राफ भेज कर शामिल होने को आमंत्रित किया गया। विषय था– 'पर्यावरण और जीवन' 595 शौकिया फोटोग्राफरों ने 611 श्वेत–श्याम और 1132 रंगीन फोटोग्राफ भेजे। निर्णायकों ने सभी फोटोग्राफों को परखा और पुरस्कार के लिए 26 पाने वाले/चुने गए फोटोग्राफों की प्रदर्शनी 12 जनवरी, 1996 को नई दिल्ली में लगाई गई जिसका उद्घाटन तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री पी.ए. संगमा ने किया। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए।

10.2.4 फोटो प्रभाग ने 11 और 12 सितंबर 1995 को 'बाल अधिकार' विषय पर संयुक्त राष्ट्र बाल कोष–यूनीसेफ के साथ मिलकर दूसरी राष्ट्रीय फोटोग्राफी कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला में विभिन्न समाचार एजेंसियों और सरकारी संस्थानों के 87 प्रोफेशनल फोटोग्राफरों ने हिस्सा लिया।

फोटो प्रभाग का आधुनिकीकरण

10.3.1 फोटो प्रभाग ने आठवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत आधुनिकीकरण और फोटोग्राफी में तेजी से उन्नत हुई तकनीक से सामन्जस्य लाने के लिए तीन योजनाएं चालू की हैं–

(1) फोटो प्रभाग का आधुनिकीकरण
(2) फोटो समाचार के तंत्र का गठन
(3) कम्प्यूटरीकृत फोटो डेटा बैंक का गठन

10.3.2 उपरलिखित तीसरी योजना का कार्यान्वयन हो

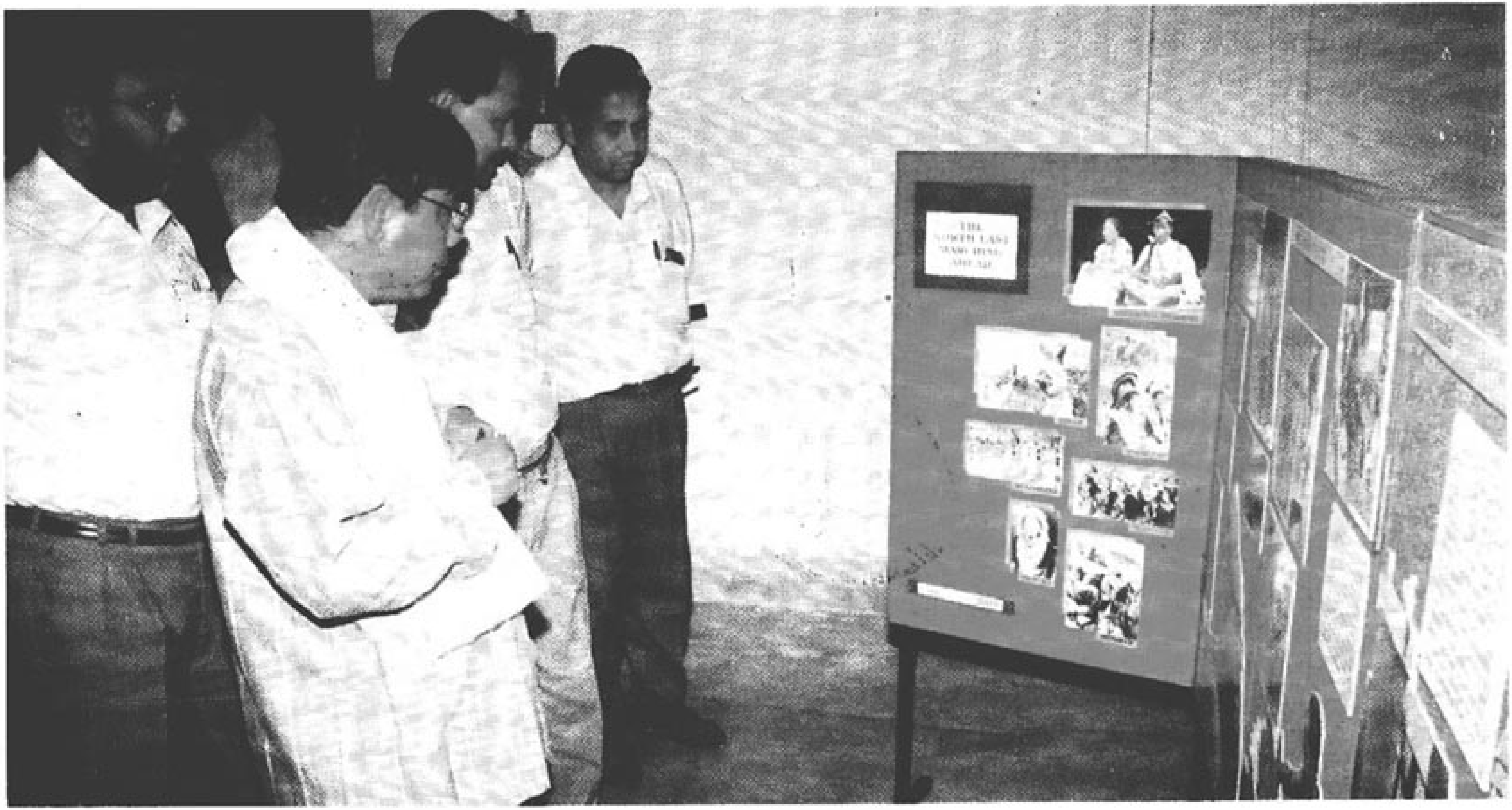

सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री पी. ए. संगमा पूर्वोत्तर क्षेत्र में लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए

चुका है और कम्प्यूटरीकृत फोटो डेटा बैंक की स्थापना फोटो प्रभाग मुख्यालय में की जा चुकी है। विभाग के क्षेत्रीय कार्यालयों को मुख्यालय से जोड़ने की प्रक्रिया जारी है। दूसरी दो योजनाएं के कार्यान्वयन की प्रक्रिया जारी है। नवीनतम फोटोग्राफी और उससे जुड़े तकनीकी उपकरणों की खरीद–फरोख्त इन योजनाओं के तहत जारी है।

11

गीत और नाटक

गीत और नाटक प्रभाग

11.1.1 गीत और नाटक प्रभाग सामाजिक, आर्थिक महत्व के विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों के प्रति लोगों में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए नृत्य–नाटक, कठपुतली शो, लोकगीतों, लोक नाटकों, परंपरागत नाटकों तथा ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रमों जैसी मंच कलाओं का व्यापक उपयोग करता है। यह प्रभाग सीमावर्ती क्षेत्रों में सशस्त्र सैनिकों का मनोरंजन भी करता है।

11.1.2 बड़े त्यौहारों के अवसरों पर एकत्र विशाल जन समुदाय को राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, छुआछुत की समाप्ति, मद्यनिषेध, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, नई आर्थिक नीति, पुनर्गठित, सार्वजनिक वितरण प्रणाली इत्यादि से परिचित कराने के लिए यह प्रभाग सम्प्रेषण के इन साधनों का उपयोग करता है। प्रभाग अपने कार्यक्रमों के माध्यम से जवाहर रोजगार योजना, समन्वित ग्रामीण विकास योजना, रोजगार आश्वासन योजना, महिला समृद्धि योजना

ग्रामीण विकास विषय पर कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए गीत और नाटक प्रभाग के कलाकार

गीत और नाटक प्रभाग

संगठन

मुख्यालय	:	दिल्ली
क्षेत्रीय कार्यालय	:	भोपाल, कलकत्ता, चंडीगढ़, दिल्ली, गुवाहाटी, लखनऊ, मद्रास, पुणे
सीमा प्रचार केन्द्र	:	दरभंगा, शिमला, जोधपुर, गुवाहाटी, इम्फाल, नैनीताल, श्रीनगर (जम्मू)
विभागीय नाटक मंडलियां	:	हैदराबाद, पटना, पुणे, श्रीनगर, भुवनेश्वर, दिल्ली
सशस्त्र बलों के मनोरंजन मंडलियां	:	मद्रास, दिल्ली
जनजातीय मनोरंजन मंडलियां	:	रांची
ध्वनि और प्रकाश इकाइयां	:	दिल्ली, बंगलौर

आदि सरकारी योजनाओं के बारे में भी जानकारी देता है।

संगठन

11.2.1 यह प्रभाग एक निदेशक के अधीन विभिन्न स्तरों पर काम करता है, जैसे (1) दिल्ली में मुख्यालय; (2) भोपाल, कलकत्ता, चंडीगढ़, दिल्ली, गुवाहाटी, लखनऊ, मद्रास और पुणे में आठ क्षेत्रीय केंद्र; (3) दरभंगा, शिमला, जोधपुर, गुवाहाटी, इंफाल, नैनीताल और श्रीनगर (जम्मू–कश्मीर) में सात सीमावर्ती प्रचार केंद्र; (4) हैदराबाद, पटना, पुणे, श्रीनगर, भुवनेश्वर और दिल्ली कुल छः विभागीय नाटक मंडलियां; इनके अलावा,मद्रास और दिल्ली में सशस्त्र सेना मनोरंजन मंडली; नई दिल्ली और बंगलूर में दो ध्वनि और प्रकाश इकाइयां तथा रांची में जनजातीय केन्द्र भी कार्यरत है। ये सभी केन्द्र प्रचार की दृष्टि से उपयोगी कार्यक्रमों की तैयारी और उनका प्रदर्शन करते हैं।

विभागीय नाटक मंडलियां

11.3.1 इस वर्ष विभागीय नाटक मंडलियों ने विभिन्न भाषाओं में कार्यक्रम प्रस्तुत किए। पुणे केन्द्र ने पुणे में आयोजित मराठवाडा उत्सव–95 में हिस्सा लिया और भुवनेश्वर मंडली पुरी (उड़ीसा) के प्रसिद्ध 'रथयात्रा महोत्सव' में शामिल हुई। उड़ीसा मंडली ने राष्ट्रीय एकता और सद्भाव के बारे में राज्यभर में कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

सीमा प्रचार मंडलियां

11.4.1 अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के पास वाले इलाकों में प्रभावशाली और गहन प्रचार करने के लिए सीमा प्रचार मंडलियों ने सीमावर्ती गांवों में वहां की बोलियों में कार्यक्रम प्रस्तुत कर इन लोगों का मनोरंजन करने के साथ–साथ इन्हें विभिन्न बातों की जानकारी दी। इन कार्यक्रमों के द्वारा राष्ट्र विरोधी प्रचार का जवाब दिया गया, देश की रक्षा करने की तैयारियों के बारे में लोगों को जानकारी दी गई, राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़ाई गई और सीमावर्ती लोगों को राष्ट्र निर्माण के कार्यों में शामिल होने के लिए प्रेरित किया गया। इन मंडलियों ने क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, एस.एस.बी., राज्य सरकार के संगठनों तथा अन्य सम्बद्ध संगठनों के सहयोग से गहन प्रचार अभियान चलाए। इस वर्ष गुवाहाटी के प्रादेशिक केन्द्र ने उत्तर–पूर्व क्षेत्र में भावात्मक एकता से सम्बद्ध कार्यक्रम प्रस्तुत किए। प्रभाग ने पंजाब, जम्मू–कश्मीर में लद्दाख सहित अनेक क्षेत्रों में तथा आंध्र प्रदेश में '–सद्भावना समारोह' आयोजित किए। शिमला केन्द्र ने हिमाचल प्रदेश में कुल्लू दशहरा महोत्सव में भाग लिया। प्रभाग ने देश के सीमावर्ती गांवों में भी विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिनके माध्यम से, नई आर्थिक नीति, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, ग्रामीण विकास योजना, पंचायती राज, महिला समृद्धि योजना तथा अन्य महत्वपूर्ण मामलों पर जानकारी दी गई। सभी सीमा प्रचार मंडलियों ने सद्भावना समारोहों में भाग लिया।

सशस्त्र सेना मनोरंजन मंडलियां

11.5.1 अग्रिम इलाकों में तैनात जवानों के मनोरंजन

के लिए 1967 में सशस्त्र सेना मनोरंजन स्कंध स्थापित किया गया। इस वर्ष इसकी मंडलियां जवानों का मनोरंजन करने के लिए दुर्गम और सुविधारहित अग्रिम इलाकों में गईं। इन मंडलियों ने साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता और इसी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इन मंडलियों ने विदेशी मान्य अतिथियों, संसद सदस्यों के लिए तथा विशेष अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इन मंडलियों ने पल्स पोलियो टीकरण के विशेष अभियानों के दौरान आयोजित कार्यक्रमों, सद्भावना समारोहों तथा ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। इन मंडलियों ने मार्च, 1996 तक 400 प्रदर्शन किए।

ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम

11.6.1 प्रभाग की दिल्ली और बंगलूर में 'ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम की एक–एक इकाई कार्य कर रही है। इनका उद्देश्य आम जनता को, विशेष रूप से युवाओं को, अपने इतिहास, संस्कृति तथा परम्पराओं की जानकारी देकर देशप्रेम, राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भावना को मजबूत करना है। प्रभाग ने वैदिककाल से स्वतंत्र भारत तक के इतिहास पर आधारित 'मंजिलें और भी हैं' (रानी खेत में), विजयनगर के गौरवशाली शासन से संबंधित 'कृष्णदेव राय' (खम्मम में) तथा 'अकबर' (नई दिल्ली में) शीर्षक से ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम प्रस्तुत किए। महात्मा गांधी के 125वीं जयंती के सिलसिले में प्रभाग ने गुजरात में पोरबंदर में 'युग पुरुष' नाम से एक नया ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

11.6.2 ध्वनि एवं प्रकाश नए साउंड ट्रैक तैयार करने के लिए मुख्यालय दिल्ली में साउंड रिकार्डिंग स्टूडियो शुरू किया गया।

व्यावसायिक और विशेष सेवाएं

11.7.1 राष्ट्रीय एकता और अनेक क्षेत्रों में किए जा रहे विकास कार्यों की जानकारी देने के लिए प्रभाग मंच कलाओं के क्षेत्र में पंजीकृत निजी मंडलियों का भी उपयोग करता है। इन दिनों प्रभाग में 640 निजी मंडलियां पंजी कृत हैं जो राष्ट्रीय महत्व के निर्दिष्ट विषयों पर कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं। इस वर्ष मार्च 1996 तक इन मंडलियों ने 30,000 से अधिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इन मंडलियों का उपयोग प्रभाग की नियमित गतिविधियों में तो किया ही जाता है साथ ही, सद्भावना समारोहों तथा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, पल्स पोलियो टीकाकरण, एड्स ग्रामीण विकास के विशेष अभियानों में भी इन मंडलियों को शामिल किया जाता है। उड़ीसा के ढेंकनाल जिले के चुने हुए 15 जिलों में सूखी जमीन पर चावल की अधिक उत्पादकता के बारे में एक विशेष बहु– विध प्रचार अभियान आयोजित किया गया। इन मंडलियों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों का उद्देश्य प्रभाग के प्रचार–कार्यों का विस्तार करना है।

जनजातीय और लोक कलाकारों का उपयोग

11.8.1 रांची का जनजातीय केन्द्र, जनजातीय परियोजना के अधीन मध्य प्रदेश, बिहार और उड़ीसा के जनजातीय कलाकारों की लोककलाओं का उपयोग करता है। इस परियोजना का आधारभूत उद्देश्य जनजातियों के परिवेश और बोलियों में उपयोगी कार्यक्रमों के विकास को प्रोत्साहन देना है। मार्च 1996 तक रांची केन्द्र ने 601 कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण

11.9.1 विभिन्न चुनिंदा क्षेत्रों में परम्परागत तथा लोक शैलियों और क्षमताओं का उपयोग करके वर्ष के दौरान तरह–तरह की कार्यशालाएं आयोजित की गईं। विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर प्रभाग ने प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें विभागीय तथा प्रभाग द्वारा पंजीकृत निजी मंडलियों ने भाग लिया। विजेताओं को पुरस्कार बांटे गए। प्रतियोगिता के बाद क्षेत्रीय अधिकारियों ने देशभर में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण पर एक व्यापक अभियान आयोजित किया। प्रभाग ने प्रगति मैदान में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भी स्वास्थ्य और परिवार कल्याण पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिन्हें सराहा गया। प्रादेशिक केन्द्रों ने पल्स पोलियो टीकाकरण, एड्स, सफाई व्यवस्था तथा सूचनाप्रद शैक्षिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के बारे में लगभग 7600 कार्यक्रम निर्धारित क्षेत्रों में प्रस्तुत किए।

मेले और उत्सव

11.10.1 प्रभाग ने देश के सभी प्रमुख मेलों और उत्सवों में भाग लिया। इनमें प्रमुख थे– पश्चिम बंगाल, उड़ीसा,

प्रभाग के कलाकार रास लीला प्रस्तुत करते हुए

हिमाचल प्रदेश और दिल्ली में दशहरा और दुर्गा पूजा, असम में बीहू, तथा देश के विभिन्न क्षेत्रों में कार्तिक पूर्णिमा, उर्स तथा क्रिस्मस।

गहन अभियान

11.11.1 इस वर्ष प्रभाग ने केन्द्र तथा राज्य सरकारों के विभिन्न संगठनों, नेहरू युवक केन्द्र, संयुक्त राष्ट्र बाल कोष और राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन के सहयोग से विभिन्न विषयों पर बहु–विध प्रचार माध्यमों से अभियान आयोजित किए। इनमें प्रमुख थे–ग्रामीण क्षेत्र और रोजगार योजना, पोलियो की रोकथाम, नई आर्थिक नीति, पुनर्गठित सार्वजनिक वितरण प्रणाली और एड्स के बारे में जागरूकता।

11.11.2 समाज में बढ़ते हुए साम्प्रदायिक तनाव को देखते हुए प्रभाग ने कुछ राज्यों में सद्भावना समारोहों की श्रृंखला के माध्यम से साम्प्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता की मजबूती के अभियान शुरू किए। वर्ष के दौरान सद्भावना समारोहों के अंतर्गत पंजाब में 60, जम्मू कश्मीर में 55, आंध्र प्रदेश में 260 तथा लेह लद्दाख क्षेत्र में 30 प्रस्तुतियां आयोजित की गईं ।

11.11.3 देशभर में अपनी जानकारी पूर्ण, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों की कारगार निगरानी के लिए प्रभाग ने आठवीं योजना के दौरान मुख्यालय में निगरानी तथा फीडबैक कक्ष का गठन किया। इस कार्य के लिए मुख्यालय में 5 टर्मिनलों के साथ एक कम्प्यूटर लगाया गया।

12

गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण

गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग

12.1.1 गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, तथा सम्बद्ध प्रचार इकाइयों और क्षेत्रीय कार्यालयों को प्रमाणिक सूचनाएं प्रदान करता है। यह प्रभाग जनसंचार के माध्यमों की प्रवृत्तियों का भी अध्ययन करता है और संबंधित विषयों पर संदर्भ और प्रलेखन सेवा भी उपलब्ध कराता है। राष्ट्रीय जनसंचार प्रलेखन केंद्र इस प्रभाग का अनिवार्य अंग है। इसके माध्यम से यह प्रभाग जनसंचार के बारे में अद्यतन प्रलेखन सेवा उपलब्ध कराता है। प्रभाग द्वारा जारी की जाने वाली सामग्री विभिन्न रूपों में तैयार की जाती हैं, जैसे समाचारों के लिए पृष्ठभूमि सामग्री, संदर्भ पत्र, घटनाओं और सार्वजनिक महत्व के मसलों के बारे में तथ्य सामग्री तथा राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे विशिष्ट व्यक्तियों का जीवन- परिचय आदि।

12.1.2 प्रभाग द्वारा दो वार्षिक संदर्भ ग्रंथ संकलित करने का कार्य किया जाता है। 'भारत—वार्षिक संदर्भ ग्रंथ' भारत के बारे में एक प्रामाणिक संदर्भ कार्य है जबकि 'मास मीडिया इन इंडिया' ग्रंथ में देश के जनसंचार माध्यमों के बारे में सामग्री प्रकाशित की जाती है।

संदर्भ पुस्तकालय

12.2.1 प्रभाग का अपना सुसज्जित पुस्तकालय है जिसमें विभिन्न विषयों पर बड़ी संख्या में दस्तावेज, कुछ चुनी हुई पत्रिकाओं के जिल्दबंद अंक तथा विभिन्न मंत्रालयों, समितियों और आयोगों की रिपोर्टें उपलब्ध हैं। इसके अलावा पुस्तकालय में पत्रकारिता, जन संपर्क, विज्ञापन और दृश्य—श्रव्य माध्यमों जैसे विषयों पर विशिष्ट पुस्तकों के साथ—साथ सभी प्रमुख विश्वकोश, वार्षिक संदर्भ ग्रंथ और समसामयिक विषयों पर लेख उपलब्ध हैं। भारतीय तथा विदेशी जनसंचार माध्यमों के मान्यता प्राप्त संवाददाता, तथा सरकारी अधिकारी इस पुस्तकालय की सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। पुस्तकालय में देश—विदेश की अनेक पत्रिकाएं आती हैं।

जनसंचार के बारे में राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र

12.3.1 सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा गठित एक समिति की सिफारिशों के आधार पर 1976 में प्रभाग के अंतर्गत जनसंचार, के बारे में राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र बनाया गया। इसका उद्देश्य जनसंचार के क्षेत्र में होने वाली घटनाओं और प्रवृत्तियों के बारे में सूचनाओं का संकलन, विश्लेषण और प्रचार—प्रसार करना है। यह केन्द्र जनसंचार से संबंधित विषयों पर सभी समाचारों, लेखों और अन्य उपलब्ध सूचना सामग्री का प्रलेखन करता है तथा संदर्भ सूचियां बनाता है।

12.3.2 इस केन्द्र द्वारा संकलित सामग्री आठ नियमित सेवाओं के रूप में प्रसारित—प्रचारित की जाती है। ये हैं: 'सामयिक जानकारी सेवा', 'संदर्भ सूचना सेवा', 'सामयिक जानकारी सेवा', 'संदर्भ सूचना सेवा', 'ग्रंथसूची सेवा', 'जनसंचार माध्यमों में कौन क्या है', 'जनसंचारकर्मियों को प्राप्त सम्मान', 'मीडिया मेमोरी', 'वर्ल्ड मीडिया सर्विस' और 'बुलेटिन ऑन फिल्म'। 31 मार्च 1996 तक प्रलेखन केन्द्र 37 पेपर्स प्रकाशित कर चुका था।

भारतीय जनसंचार संस्थान

12.4.1 भारतीय जनसंचार संस्थान की स्थापना 17 अगस्त, 1965 को जनसंचार के विभिन्न क्षेत्रों में उच्च अध्ययन, अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र के रूप में की गई। यह एक स्वायत्त संस्था है जिसे मूल रूप से भारत सरकार से सूचना और प्रसारण मंत्रालय के माध्यम से वित्तीय सहायता प्राप्त होती है। यह संस्थान शिक्षा और प्रशिक्षण के कार्यक्रम आयोजित करता है, विचार–गोष्ठियां करता है तथा भारत और अन्य विकासशील देशों के लिए उपयोगी सूचना से संबद्ध आधारभूत ढांचा तैयार करने में योगदान देता है।

12.4.2 1995-96 में संस्थान द्वारा दो प्रशिक्षण कार्यक्रम और चार डिप्लोमा पाठ्यक्रम आयोजित किए हैं। इनका विवरण इस प्रकार है:

(1) भारतीय सूचना सेवा के ग्रुप–ए के अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

(2) आकाशवाणी और दूरदर्शन कर्मचारियों के लिए प्रसारण, पत्रकारिता पाठ्यक्रम,

(3) पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, पाठ्यक्रम (अंग्रेजी),

(4) विज्ञापन और जनसंपर्क में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम डिप्लोमा,

(5) पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम (हिन्दी),

(6) गुट–निरपेक्ष देशों के लिए समाचार एजेंसी पत्रकारिता में डिप्लोमा पाठ्यक्रम।

12.4.3 संस्थान सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों में काम करने वाले कर्मचारियों के लिए रिफ्रैशर कोर्स (पुनश्चर्या पाठ्यक्रम) भी आयोजित करता है। अपनी स्थापना के बाद से संस्थान विभिन्न अवधि के 292 अल्पकालीन पाठ्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित कर चुका है। इनमें देश–विदेश के करीब 6,629 प्रतिभागियों को लाभ हुआ है।

दीक्षांत समारोह

12.5.1 शैक्षिक सत्र 1994–95 का दीक्षांत समारोह 24 अप्रैल 1995 को आयोजित किया गया जिसमें विभिन्न

गुट–निरपेक्ष देशों के लिए समाचार एजेंसी पत्रकारिता डिप्लोमा पाठ्यक्रम में भाग ले रहे मारिशस के विद्यार्थी

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के 147 प्रतिभागियों को डिप्लोमा प्रदान किए गए। प्रतिभाशाली छात्रों को समारोह में पुरस्कार भी दिए गए।

12.5.2 ढेंकनाल में संस्थान की शाखा का दीक्षांत समारोह 6 मई, 1995 को आयोजित किया गया। इसमें पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम के 34 छात्रों को डिप्लोमा के साथ–साथ प्रतिभाशाली छात्रों को पुरस्कार दिए गए।

अनुसंधान और मूल्यांकन अध्ययन 1995-96

- आंध्र प्रदेश में सद्भावना समारोह।
- दूरदर्शन के क्षेत्रीय चैनल के कार्यक्रमों का मूल्यांकन अध्ययन।
- टेलीविजन संदेश विश्लेषण – दूरदर्शन के पहले और दूसरे चैनल पर प्रसारित संदेशों के सांस्कृतिक संकेतकों के संदर्भ में अंतर्वस्तु विश्लेषण रिपोर्ट।
- महिला स्वास्थ्य संगठन का मूल्यांकन अध्ययन।
- ग्रामीण विकास के बारे में बहुमाध्यम प्रचार अभियान।

12.5.3 मध्य प्रदेश सरकार के लिए संस्थान द्वारा संचालित वीडियो कैमरामैन पाठ्यक्रम का समापन समारोह 7 मई 1995 को भोपाल में आयोजित किया गया। इसमें 45 छात्रों को डिप्लोमा प्रदान किए गए।

शैक्षिक सत्र 1995-96

12.6.1 स्नातकोत्तर पत्रकारिता डिप्लोमा पाठ्यक्रम (अंग्रेजी) और स्नातकोत्तर पत्रकारिता डिप्लोमा पाठ्यक्रम (हिन्दी) में प्रत्येक 44-44 छात्रों को प्रवेश दिया गया। विज्ञापन और जनसंचार के डिप्लोमा पाठ्यक्रम में 50 छात्र लिए गए। गुट–निरपेक्ष देशों के लिए समाचार एजेंसी पत्रकारिता का 26वां पाठ्यक्रम दिसंबर 1995 में प्रारंभ हुआ। भारतीय जनसंचार संस्थान ढेंकनाल (उड़ीसा) में तीसरे स्नातकोत्तर पत्रकारिता डिप्लोमा पाठ्यक्रम (अंग्रेजी) में 44 छात्रों को दाखिला दिया गया। इसके अलावा इस संस्थान ने वर्ष के दौरान 22 अल्पावधि पाठ्यक्रमों, कार्यशालाओं और विचार–गोष्ठियों का भी आयोजन किया।

प्रकाशन

12.7.1 संस्थान ने त्रैमासिक पत्रिकाओं 'कम्युनिकेटर' (अंग्रेजी) और 'संचार माध्यम' (हिन्दी) का प्रकाशन किया। स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के छात्रों और समाचार एजेंसी पत्रकारिता डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों ने अपने शैक्षिक कार्यकलापों के अंग के रूप में प्रशिक्षण पत्रिका (लेबोरेटरी जर्नल) का प्रकाशन किया।

देश में भारतीय जनसंचार संस्थान की शाखाओं की स्थापना

12.8.1 देश में जनसंचार संबंधी आधारभूत ढांचे की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भारतीय जनसंचार संस्थान ने क्षेत्रीय आधार पर ढेंकनाल (उड़ीसा), कोट्टायम (केरल), झाबुआ (मध्य प्रदेश), और दीमापुर (नगालैंड) में शाखाएं खोलने का फैसला किया। इसी फैसले के तहत पूर्वी क्षेत्र के लिए संस्थान की पहली शाखा 14 अगस्त 1993 को ढेंकनाल (उड़ीसा) में स्थापित की गई। केरल सरकार ने संस्थान की शाखा खोलने के लिए 9.74 एकड़ जमीन के आबंटन की व्यवस्था कर दी है। भारतीय जनसंचार संस्थान की दूसरी शाखा में केरल में कोट्टयम में 1995–96 से काम करना शुरू कर दिया है। 28 से 30 दिसंबर 1995 तक इस शाखा में कालेज छात्रों के लिए 'वित्तीय मामलों के पत्रकारों का व्यवसाय' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें 48 छात्रों ने भाग लिया।

12.8.2 योजना आयोग ने दीमापुर और झाबुआ में भारतीय जनसंचार संस्थान की शाखाएं खोलने की मंजूरी दे दी है। इनमें क्षेत्रों की स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विकासात्मक जनसंचार पर मुख्य रूप से जोर दिया जाएगा।

12.8.3 नगालैंड सरकार ने दीमापुर में भारतीय जनसंचार संस्थान की शाखा खोलने के लिए 34 एकड़ जमीन की व्यवस्था कर दी है। शाखा की आधारशिला 4 फरवरी 1996 को सूचना और प्रसारण मंत्री श्री पी.ए. संगमा ने रखी। इसके लिए आयोजित समारोह में राज्य के मुख्यमंत्री श्री एस. सी. जामिर मुख्य अतिथि थे। संस्थान में शैक्षिक गतिविधियां शीघ्र प्रारंभ करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

13

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

आकाशवाणी को संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू. एन. डी. पी.) की सहायता

13.1.1 आकाशवाणी की महत्वपूर्ण सामग्री को संरक्षित करने तथा संस्था में मानव संसाधन विकास के लिए तकनीकी प्रशिक्षण की सुविधाओं में सुधार के लिए यू. एन. डी. पी. की सहायता से कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के बारे में इस रिपोर्ट में अन्यत्र चर्चा हो चुकी है।

भारत-मलेशिया संयुक्त परियोजना

13.2.1 भारत के प्रधानमंत्री की मलेशिया यात्रा (3 अगस्त, 1995) के दौरान दोनों संगठनों के बीच एक समझौता हुआ। इसका उद्देश्य भारत में 'डाइरेक्ट टू होम' (डी.टी. एच.) सेवा शुरू करना है। इस सेवा का संचालन एक संयुक्त कंपनी करेगी जिसमें दूरदर्शन का अधिकांश शेयर (51 प्रतिशत) होगा।

प्रधानमंत्री श्री नरसिम्ह राव मलेशिया के प्रधानमंत्री डॉ. महातिर मोहम्मद को क्वालालमपुर में इनसैट–2 का मॉडल भेंट करते हुए।

13.2.2 'डाइरेक्ट टू होम' सेवा में उपभोक्ता अपने परिसर में एक छोटा डिश (एक मीटर से कम) और एक आई. आर.डी. (इंटेग्रेटेड रिसीवर डिकोडर) लगाकर उपग्रह टेलीविजन चैनल देख सकेंगे। इसमें डिजिटल इंक्रिप्टेड चैनल, पे प्रिव्यू सेवा आदि सहित अनेक सुविधाएं उपलब्ध होंगी। साथ ही तस्वीर की गुणवत्ता काफी अच्छी रहेगी।

13.2.3 इस योजना में व्यापक सब्सक्राइबर मैनेजमेण्ट सिस्टम' (एस.एम. एस.) की व्यवस्था है।

13.2.4 मंत्रालय ने एक इंट्रीम ओपेरेटीव एग्रीमेंट' (आई. अरे.ए.) को मंजूरी दे दी है। यह समझौते का संपूरक होगा और देश में सयुंक्त कंपनी के गठन से संबंधित सभी मामले को देखेगा।

13.2.5 आई.ओ.ए. पर विधिवत हस्ताक्षर आवृति समन्वय मुद्दे के समाधान के बाद किया जाएगा।

13.2.6 भारत और मलेशिया के प्रशासनों के आवृति समन्वय की बैठक 20 मई से 24 मई 1996 तक नई दिल्ली में हुई।

13.2.7 संयुक्त कंपनी के गठन की रूपरेखा तैयार करने के लिए एक संयुक्त संचालन समिति गठित की गई। इस समिति में दूरदर्शन के तीन और एम.बी.एन.एस. के तीन सदस्य हैं। इसकी पहली बैठक 22-23 अप्रैल, 1996 को नई दिल्ली में हुई।

13.2.8 संयुक्त कंपनी में, नई दिल्ली में प्रसारण और अप–लिंक सुविधाओं की स्थापना का प्रावधान है ताकि मीसात–1 पर उपलब्ध दो केयू बैंड ट्रांसपोंडर के 16 चैनल और 1997 के अंत तक क्वालालम्मपुर में उपलब्ध सुविधाओं के संयोजन से मीसात–3 के चालू हो जाने पर 32 और चैनल देखे जा सकें।

13.2.9 एम.बी.एन.एस. ने डाइरेक्ट टू होम सेवा जुलाई/अगस्त 1996 में परीक्षण आधार पर चालू करने और अक्तूबर 1996 तक इस सेवा के पूरी तरह चालू करने का प्रस्ताव रखा है।

भारत-रूसी संघ सहयोग

13.3.1 अगस्त 1995 के दौरान भारत और रूसी संघ के बीच सूचनाओं के आदान– प्रदान के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए पत्र सूचना कार्यालय तथा आर. आई. ए. नोवोस्ती के बीच एक समझौता हुआ है। उपरोक्त समझौते के अंतर्गत समय–समय पर प्रिंट तथा इलैक्ट्रानिक मीडिया के कर्मचारियों तथा सूचनाओं के आदान– प्रदान की भी व्यवस्था है। रूसी संघ की तरफ से मीडिया से जुड़े लोगों की भारत यात्रा का प्रस्ताव है। यह यात्रा इसी वित्तीय वर्ष में होने की आशा है।

भारत और यूनेस्को

13.4.1 पेरिस में नवंबर 1995 में आयोजित यूनेस्को की 28वीं आम बैठक में भेजे गए शिष्टमंडल में मंत्रालय ने भी भाग लिया। भारत ने 1981 में स्थापित अंतर्राष्ट्रीय संचार विकास कार्यक्रमके अंतर्गत सूचनाओं के संतुलित आदान –प्रदान का समर्थन किया। इस सम्मेलन में भारत ने जिन अन्य विषयों पर विचार प्रकट किये वे हैं :

- विकासशील देशों को नयी और समान तकनीकी सुविधाओं से सुसज्जित किया जाए ताकि उन्हें सूचनाएं निष्पक्ष रूप से प्राप्त हो सकें।
- संचार के क्षेत्र में स्त्री– पुरुष के भेदभाव की समस्याओं को दूर करना।
- प्रसारण कर्ताओं द्वारा स्वैच्छिक रूप से अपनाए जाने के लिए आदर्श आचार– संहिता का विकास, ताकि टेलीविजन पर हिंसा न दिखाई जा सके।
- आधुनिक संचार टैक्नोलॉजी में कर्मचारियों का प्रशिक्षण।
- यूनेस्को के सामान्य सूचना कार्यक्रम (जी. आई. पी.) के लिए विज्ञान और शिक्षा आदि के क्षेत्रों में क्षेत्रीय सूचना गतिविधियों के प्रबंध का सौंपा जाना ताकि व्यवसायिक अवधि और बजट के उपयोग की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया जा सके।
- यूनेस्को के अंतर सरकारी सूचना कार्यक्रम के अंतर्गत क्षेत्रीय सूचना नेटवर्क कार्यक्रम में राष्ट्रीय सूचना केंद्र के जरिए और अधिक व्यापक आधार पर भारत की सहभागिता।

14

मीडिया नीति

14.1.1. सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए सभी क्षेत्रों, चाहे वह शिक्षा हो, संस्कृति, कृषि, विज्ञान और टैक्नोलॉजी हो या फिर उद्योग, श्रम प्रबंधन, आर्थिक प्रबन्धन या अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का मामला हो, 'मीडिया' एक अहम जरूरत है। मीडिया नीति की जरूरत के बारे में समय–समय पर संसद सहित विभिन्न मंचों पर विचार–विमर्श किया गया है। मार्च 1994 में सूचना और प्रसारण मंत्रालय के संसदीय सलाहकार समिति की एक उप–समिति गठित की गई। इस उप–समिति ने, लोकसभा सदस्य श्री रामविलास पासवान की अध्यक्षता में एक रिपोर्ट 29 मार्च 1996 को मंत्रालय को सौंपी थी।

श्री राम विलास पासवान सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री पी.ए. संगमा को राष्ट्रीय मीडिया नीति पर रिपोर्ट सौंपते हुए

राष्ट्रीय मीडिया नीति पर पासवान कमेटी की सिफारिशें

- सार्वजनिक और निजी दोनों तरह के प्रसारणों पर नजर रखने के लिए एक विनियामक निकाय होना चाहिए। इस संबंध में उप–समिति ने यह नोट किया है कि विनियमन का ढांचा तैयार करते समय, जो कि एक स्वतंत्र स्वायत्तशासी प्राधिकरण के रूप में हो, संसद द्वारा 1990 में सर्वसम्मति से पारित प्रसार भारती अधिनियम के प्रावधानों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। उप–समिति की यह स्पष्ट राय है कि सरकार को ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहिए जिससे प्रसार भारती अधिनियम, 1990 के प्रावधानों को कमजोर किया जा सके। कार्यक्रम/विज्ञापन संहिता और अन्य अनुबंधों का पालन सुनिश्चित करने के लिए इस विनियमन निकाय की स्थापना की जा सकती है। यह निकाय अथवा किसी प्रकार का कोई अन्य स्वतंत्र निकाय सार्वजनिक शिकायतों की सुनवाई के साथ–साथ इस प्रकार की शिकायतों के संदर्भ में प्राप्त सिफारिशों को लागू करने के लिए भी कोई कारगर तरीका ढूंढ़ सकता है।

- विश्वविद्यालय, शैक्षिक संस्थानों/पंचायतों/स्थानीय निकायों और राज्य सरकारों आदि द्वारा चलाए जाने वाले गैर–व्यावसायिक प्रसारण केन्द्रों की स्थापना को सक्षम बनाने के लिए पर्याप्त सावधानी बरती जानी चाहिए।

- उप–समिति यह मानती है कि सार्वजनिक प्रसारण के लिए सरकारी समर्थन के रूप में पर्याप्त आर्थिक सहायता आवश्यक है। कार्यक्रमों अथवा सॉफ्टवेयर की विषयवस्तु कई बार आर्थिक सहायता द्वारा निर्देशित होती है। इसलिए उप–समिति सशक्त रूप से यह सिफारिश करती है कि इस पहलू के प्रति सरकार को ध्यान देना चाहिए तथा एक संस्थागत प्रणाली तैयार की जानी चाहिए।

- राष्ट्रीय प्रसारकों–आकाशवाणी और दूरदर्शन–को ऐसी उच्च गुणवत्ता प्राप्त सार्वजनिक सेवाप्रसारण की जिम्मेदारी लेनी चाहिए जो लोगों को सूचना, शिक्षा और मनोरंजन प्रदान करता हो तथा गणतंत्र दिवस परेड जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों के लिए कवरेज भी उपलब्ध कराता हो। राष्ट्रीय प्रसारकों की पहुंच को ध्यान में रखते हुए गणतंत्र दिवस की परेड, स्वतंत्रता दिवस, संसद के दोनों सदनों को राष्ट्रपति का संबोधन जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों की कवरेज के मामले में महत्व और विशिष्ट दायित्व प्रदान किया जाना चाहिए।

- राष्ट्रीय प्रसारकों के अधिकारों/दायित्वों और विशिष्टताओं को कानून के जरिए संहिताबद्ध किया जाना चाहिए।

- यद्यपि रेडियो और टेलीविजन के लिए विस्तृत नीतिगत प्रस्ताव समान होना चाहिए, परंतु दोनों में मीडिया की पहुंच और प्रभाव में अंतर को ध्यान में रखते हुए थोड़ी–बहुत भिन्नता/अंतर रखा जा सकता है। कार्यक्रम/विज्ञापन संहिता यदि एक नहीं तो समान होनी चाहिए। विज्ञापन देते समय दर्शक/श्रोता की रुचि को ध्यान में रखा जाना चाहिए। जनता के अनुकूल एक नई निर्माण विधि का विकास किया जाना चाहिए।

- यहां सुझाए गए नीति ढांचे की तर्ज पर भारतीय निजी क्षेत्र/राज्य सरकार/गैर सरकारी संस्थान/स्थानीय स्वशासन को प्रसारण के क्षेत्र में प्रवेश की अनुमति मिलनी चाहिए।

- यह सुनिश्चित करने के लिए समुचित प्रावधान रखे जाने चाहिए कि निजी प्रसारण का नियंत्रण मुद्रण माध्यम (प्रिंट मीडिया) अथवा अन्य माध्यमों में प्रमुख साझेदारी रखने वाली कंपनियों के हाथ में न हो। अतः बहु–माध्यम स्वामित्व जैसे प्रतिबंधों की आवश्यकता पर विचार किया जाना चाहिए।

- निजी प्रसारण के क्षेत्र में प्रवेश करने वाली कंपनियों में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष विदेशी पूंजी की भागीदारी की अनुमति प्रदान नहीं की जानी चाहिए।

- कानून में समुचित प्रावधानों के जरिए निजी चैनल तक जन–साधारण की पहुंच सुलभ कराई जानी चाहिए।

- आकाशीय तरंगों के बारे में उच्चतम न्यायालय के निर्णय को दृष्टि में रखते हुए इसके उपयोग को नियंत्रित एवं विनियमित करने के लिए एक स्वतंत्र प्राधिकरण स्थापित किया जाना चाहिए। उप–समिति ने महसूस किया है कि भारतीय आकाश की अखंडता क्षेत्रीय अखंडता की तरह महत्वपूर्ण है। यह विनियामक प्राधिकरण संसद द्वारा पारित एक कानून के जरिए जल्द से जल्द स्थापित किया जाना चाहिए। यह निकाय अनुच्छेद 6.4.1.2 में उल्लिखित विनियामक निकाय (रेगुलेटरी बॉडी) के कार्यों को शामिल कर सकता है अथवा अनुच्छेद 6.4.1.2 में उल्लिखित विनियामक निकाय के अंतर्गत आकाशीय तरंगों को नियंत्रित करने के लिए विशेष रूप से एक अलग निकाय हो सकता है।

- शीर्ष विनियामक निकाय (अपेक्स रेगुलेटरी बॉडी) को समाज के सभी वर्गों एवं अभिरुचियों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक स्वतंत्र स्वायत्तशासी सार्वजनिक प्राधिकरण होना चाहिए और लोक हित में आकाशीय तरंगों के उपयोग को नियंत्रित एवं विनियमति करना चाहिए तथा उनके अधिकारों के हस्तक्षेप को रोकना चाहिए।

- विदेशी उपग्रह चैनलों को भारतीय कानून के दायरे में लाने के उद्देश्य से इनको उक्त विनियामक निकाय की परिधि में भी लाया जाना चाहिए।

- उप–समिति ने यह अनुभव किया कि आकाशीय तरंगों के विषय में अन्य देशों के साथ बहुपक्षीय/क्षेत्रीय समझौते बढ़ाने के लिए विशेषकर सॉफ्टवेयर के मामले में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयत्न करने चाहिए।

- उप–समिति ने यह माना कि टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले

कार्यक्रमों को पहले से सेंसर करना मुश्किल है क्योंकि इनके लिए व्यापक व्यवस्था की जरूरत पड़ेगी। फिर भी, निजी प्रसारण/विदेशी चैनलों को भारतीय कानून की सीमा में लाकर अहस्तक्षेप की नीति पर अंकुश लगाया जा सकता है।

● उप–समिति ने यह महसूस किया कि प्रदेश/क्षेत्र–विशेष के लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए इलैक्ट्रॉनिक माध्यम, विशेषकर टेलीविजन के कार्यक्रमों के और विकेन्द्रीकरण की आवश्यकता है। इस संबंध में सरकार को कार्यक्रमों के विकेन्द्रीकरण, कार्यक्रम में स्वायत्तता और इसके लिए पांच क्षेत्रों (दक्षिण, पश्चिमी, मध्य, पूर्वी और उत्तरी) के गठन के संबंध में वर्गीज समिति की रिपोर्ट में दिए गए सुझावों पर विचार करना चाहिए।

● इस बात का ध्यान रखा जाए कि गैर–सरकारी प्रसारणकर्त्ता चैनलों में परिवर्तन कर, खासकर उन चैनलों में जो ज्यादा लाभ देने वाले हों, एकाधिकार प्राप्त न कर लें।

● राष्ट्रीय फिल्म नीति के लिए गठित कार्य दल द्वारा निर्धारित राष्ट्रीय फिल्म नीति के मुख्य उद्देश्य का उप–समिति अनुमोदन करती है, (देखिए 7.6.2) और उन्हें यहां फिर दोहराती है। क्योंकि राष्ट्रीय फिल्म नीति की औपचारिक घोषणा से लाभ पहुंचेगा, इसलिए उप–समिति चाहती है कि सरकार इस संबंध में तत्काल कदम उठाए।

● जबकि प्राक्कलन समिति और स्थायी समिति ने केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड की कार्य प्रणाली की पूरी तरह जांच कर ली है, हम उनके सुझावों में कुछ और वृद्धि न कर केवल उन्हें ही मानने की सिफारिश करते हैं। इन सुझावों की चर्चा अन्यत्र हुई है। उप–समिति चाहती है कि फिल्मों में विशिष्ट नेताओं की छवि बिगाड़ने की प्रवृत्ति को रोकने के लिए सरकार फिल्मों को प्रमाण पत्र देने से संबंधित निर्देशों में परिवर्तन करे।

● फिल्म प्रभाग और निजी निर्माताओं द्वारा अच्छे लघु चित्रों के निर्माण को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। फिल्म प्रभाग को अपने वृत्तचित्रों की गुणवत्ता बढ़ाकर उन्हें और रोचक बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। उप–समिति का सुझाव है कि सरकार को भारतीय वृत्तचित्रों आंदोलन के विकास को प्रोत्साहन देना चाहिए। इस संबंध में उप–समिति यह मानती है कि फिल्म प्रभाग को ज्यादा से ज्यादा फिल्में बनाने का काम अपने पैनल पर रखे स्वतंत्र निर्माताओं को सौंपना चाहिए। दूसरे, दूरदर्शन को वृत्तचित्रों के निर्माण का कार्य फिल्म प्रभाग और दूसरी एजेंसियों से करवाना चाहिए।

● ऐसा कहा जाता है कि दूरदर्शन पर वृत्तचित्र दिखाने के लिए प्रायोजकों के मिलने में बहुत कठिनाई होगी। उप–समिति की सिफारिश है कि यदि प्रायोजक न भी मिलें तो भी दूरदर्शन 'प्राइम टाइम' में रोज कम से कम आधा घंटा का समय वृत्तचित्र दिखाने के लिए नियत कर दे।

● उप–समिति का यह भी सुझाव है कि विभिन्न शिक्षण संस्थाओं, स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों में वृतचित्रों के प्रदर्शन की संभावना का पता लगाया जाना चाहिए। मानव संसाधन विकास मंत्रालय इस उद्देश्य के लिए धन के आवंटन पर विचार करे।

● बाल फिल्मों के निर्माण को बढ़ावा देने के लिए उप–समिति का सुझाव है कि एनिमेशन फिल्मों के निर्माण के लिए ज्यादा से ज्यादा ढांचागत सुविधाएं विकसित की जाएं।

● उप–समिति यह भी सिफारिश करती है कि देश के प्रत्येक जिले में बाल फिल्मों के प्रदर्शन के अधिक–से–अधिक अवसर तलाश किए जाएं।

● बैठकों के दौरान फिल्म उद्योग के प्रतिनिधियों ने यह बताया कि हालांकि दादा साहब फाल्के अवार्ड के लिए सरकार ने भारतीय फिल्म परिसंघ से सिफारिशें मांगी थी, लेकिन उन्हें माना नहीं गया। उप–समिति को यह बताया गया है कि इस संबंध में सरकार के प्राप्त फिल्म उद्योग सहित हर तरफ से सिफारिशें आती हैं और अवार्ड के लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति का चुनाव मंत्रालय में उच्च स्तर पर होता है। सरकार के निर्णय को और प्रामाणिक बनाने के लिए उप–समिति यह सुझाव देती है कि सरकार एक लघु समिति का गठन करे जिसमें फिल्मी दुनिया के साथ ही अनेक विशिष्ट व्यक्ति भी शामिल हों, और यह लघु समिति पुरस्कार के लिए प्राप्त सभी नामों पर विचार करके किसी एक व्यक्ति का नाम दादा साहब फाल्के अवार्ड के लिए सिफारिश करे।

● राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड की की शुरुआत 1953 में क्षेत्रीय सिनेमा को बढ़ावा देने और सुरुचिपूर्ण तथा सामाजिक चेतना जागृत करने में उत्कृष्ट फिल्मों के निर्माण को प्रोत्साहन देने के लिए की गई थी। उप–समिति यह समझती है कि जिन फिल्मों को अवार्ड मिले उन्हें देश के सभी राज्यों और बड़े–बड़े शहरों में दिखाया जाना चाहिए जिससे उस क्षेत्र–विशेष की जनता को उन्हें देखने का अवसर प्राप्त हो। केन्द्र सरकार को अवार्ड प्राप्त फिल्मों के समारोह के लिए राज्य सरकारों को फंड देने का भी प्रबंध करना चाहिए।

● उच्च स्तरीय समिति (1990) की सिफारिशों को पूरी तरह अमल करवाने के लिए उप–समिति के सामने बहुत–सी गवाहियां पेश की गईं। इस संबंध में उप–समिति की यह राय है कि इस विषय पर राज्य सरकारों/केन्द्र शासित प्रदेश के प्रशासन को कार्रवाई करनी चाहिए।

● उप–समिति का सुझाव है कि राज्य सरकारों/केन्द्र शासित प्रदेश के प्रशासन को चाहिए कि वे फिल्म उद्योग की सहायता के लिए मनोरंजन कर में कुछ सुधार करें।

● बातचीत के दौरान उप–समिति के समक्ष फिल्म उद्योग के कुछ प्रतिनिधियों ने यह निवेदन किया कि कच्चे माल के आयात पर उच्च

लागत को देखते हुए सीमा शुल्क को अगर खत्म नहीं किया जा सकता हो तो इसे घटा दिया जाना चाहिए। उप–समिति सिफारिश करती है कि कच्चे माल पर लगने वाला शुल्क इस वास्तविकता को देखते हुए खत्म कर दिया जाना चाहिए कि देश में कच्चे माल के निर्माण की कोई सुविधा नहीं है।

- उप–समिति के समक्ष कुछ गवाहों ने टेलीविजन और वीडियो के आने के बाद थिएटरों की कमी और सिनेमाघरों के बंद होने पर चिंता व्यक्त की। प्रदर्शन सुविधाओं की कमी से निबटने के लिए उप–समिति का सुझाव है कि जहां सिनेमा थिएटरों को व्यावसायिक परिसरों में परिवर्तित किया जा रहा हो, वहां स्थानीय अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि उस स्थान पर जो परिसर बन रहा है उसमें कम से कम एक लघु–थिएटर जरूर हो। उप–समिति यह भी सिफारिश करती है कि अधिक से अधिक बहुविध थिएटर परिसरों को प्रोत्साहित किया जाए।

- उप–समिति सिफारिश करती है कि राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और अन्य एजेंसियां बड़े–बड़े थिएटरों की बजाय 400-500 लोगों की क्षमता वाले थिएटरों के निर्माण को प्रोत्साहित करें।

- बैठकों के दौरान सिनेकर्मियों के प्रतिनिधियों ने फिल्म उद्योग को 'उद्योग' घोषित करने का निवेदन किया, ताकि उद्योग के कर्मचारी निर्माताओं द्वारा शोषित न हो सकें। उप–समिति का विचार है कि फिल्म उद्योग के कर्मचारियों के लिए श्रमिक कल्याण उपाय शुरू किए जाने से उनकी स्थिति में काफी सुधार होगा। इसीलिए उप समिति सिफारिश करती है कि सिर्फ संस्थागत वित्त प्रबंध के उद्देश्य से ही नहीं, बल्कि श्रमिकों के कल्याण से संबंधित श्रमिक कानूनों को लागू करने के लिए भी फिल्म उद्योग को एक उद्योग घोषित किया जाए।

- सिनेमा के संरक्षण की जिम्मेदारी राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार की है। कुछ समाचार–पत्रों में महत्वपूर्ण फिल्मों की क्षति और उनके गुम होने की रिपोर्ट छपी है। उप–समिति का सुझाव है कि अभिलेखागार सभी उत्कृष्ट फिल्में हासिल करने और उन्हें भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखने के वास्ते तुरंत कदम उठाए।

- उप–समिति यह भी सुझाव देती है कि राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार फिल्म प्रभाग से पुराने वृत्तचित्र जीर्णोद्धार और संरक्षण के लिए ले लें।

- आजकल विभिन्न विश्वविद्यालयों ने फिल्म बोध पाठ्यक्रम शुरू किए हैं तथा नई फिल्म समितियां बन रही हैं। लेकिन सरकार भारतीय फिल्म समिति परिसंघ को अपनी गतिविधियों के लिए प्रतिवर्ष सिर्फ 3 लाख रुपये देती है। यह बिलकुल अपर्याप्त है। उप–समिति सिफारिश करती है कि सरकार वित्त सहित सभी सुविधाएं देकर फिल्म समिति आंदोलन को प्रोत्साहन दे। भारतीय फिल्म समिति परिसंघ को दी जाने वाली सहायता अनुदान की राशि पर्याप्त बढ़ायी जानी चाहिए।

- कुछ गवाहों ने उप–समिति को बताया कि आकाशवाणी से प्रसारित होने वाली फिल्मी गानों की रायल्टी दर 2 रुपये प्रति गीत है, जोकि काफी समय पहले निर्धारित की गई थी। समय अंतराल और फिल्मी गीतों के फिल्मांकन में बढ़ती हुई लागत को देखते हुए उप–समिति सिफारिश करती है कि आकाशवाणी द्वारा इसे संशोधित कर बढ़ाया जाना चाहिए।

- पत्रकारों के लिए आचार–संहिता बनाने और भारतीय प्रेस परिषद को और अधिक अधिकार देने से संबंधित सुझावों के बारे में उप–समिति का विचार है कि उचित निर्णय के लिए यह मामला प्रेस परिषद पर छोड़ दिया जाना चाहिए। लेकिन प्रेस परिषद को पर्याप्त अधिकारों से अपने आपको लैस करना चाहिए ताकि वह सांप्रदायिकता फैलाने वालों, राष्ट्रीय सुरक्षा की अवहेलना करने वालों और अन्य अवांछित गतिविधियों में संलग्न लोगों से निबट सके।

- भारतीय भाषा प्रेस तथा लघु एवं मझौले समाचार–पत्रों को बढ़ना चाहिए। इसलिए उप–समिति सिफारिश करती है कि सरकार इन वर्गों के प्रेस के आधुनिकीकरण में सहायता करके उपयुक्त वातावरण बनाने का प्रयास करे।

- किसी भी समाचार–पत्र की वित्तीय व्यवहार्यता बड़ी हद तक उसको प्राप्त विज्ञापन–राजस्व पर निर्भर करता है। सरकार की विज्ञापन नीति और दर तार्किक और एकसमान होनी चाहिए, ताकि समाचार–' त्रों को प्रभावित करने के यंत्र के रूप में विज्ञापन के संभावित प्रयोग के खतरे को समाप्त कर दिया जाए, क्योंकि इससे प्रेस की आजादी प्रभावित होगी।

- हालांकि अखबारी कागज के आयात को सामान्य खुले लाइसेंस (ओ.जी.एल.) के तहत रखा गया है। फिर भी इस बात की जरूरत महसूस की जाती है कि लघु और मझौले समाचार–पत्रों की ओर से अखबारी कागज के आयात के लिए एक 'नोडल' एजेंसी हो, क्योंकि इन समाचार–पत्रों के पास आवश्यक ढांचा और इस तरह के आयात के लिए मोल–भाव करने की शक्ति नहीं है।

- पत्रकारों के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता एक और पहलू है जिस पर तुरंत ध्यान देने की जरूरत है। प्रेस अब अपने स्वभाव में अधिक व्यावसायिक हो गया है। यह सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न घटनाओं को रिपोर्ट करने और वास्तविक परिप्रेक्ष्य में उनकी व्याख्या करने में प्रेस सक्षम हो सके, यह अत्यावश्यक है कि अतिरिक्त सुविधाएं दी जाएं, ताकि पत्रकार व्यापक शैक्षिक तैयारी और पत्रकारिता में विशेष प्रशिक्षण ले सके।

- भारतीय संवाद समितियां राष्ट्रीय समाचारों को विदेशों में फैलाने और भारत में फैलाने के लिए विदेशी समाचारों को एकत्र करने जैसे कार्यों को प्रभावशाली तरीके से करने में सक्षम नहीं है। आज भी अग्रणी समाचार पत्रों के अंतर्राष्ट्रीय समाचार खंड में विदेशी संवाद समितियों का वर्चस्व कायम है। सरकार की यह कोशिश होनी चाहिए कि वह अनुमति दे कि संवाद समितियां इन क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बन सकें। इस सिलसिले में

गुट–निरपेक्ष, 1976 के अवसर पर जो प्रयास किए गए थे, वैसे ही प्रयास फिर से किए जाने चाहिए। इन प्रयासों के नतीजे में तीसरी दुनिया के देशों के बीच समाचारों के आदान–प्रदान के लिए 'न्यूज पूल' की स्थापना हुई थी।

- भारतीय संवाद समितियों को मजबूत करने के लिए उप–समिति सिफारिश करती है कि पर्याप्त इक्विटी आधार के साथ संवाद समितियों के निगम बनाने के पहले प्रेस आयोग के सुझावों पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जाए।

- मालिकों के व्यापारिक और अन्य हित से अलग करके संपादकों और संपादकीय विषयों की आजादी प्रेस द्वारा खुद या भारतीय प्रेस द्वारा उपयुक्त संस्थागत तरीके या दिशा–निर्देश बनाकर सुनिश्चित किया जाना चाहिए। समाचारपत्र उद्योग से अन्य उद्योग को धन हस्तांतरित करने के मुद्दे की जांच होनी चाहिए।

- उप–समिति का विचार है कि प्रिंट मीडिया (मुद्रण माध्यम) को व्यावसायिक बनाने की दिशा में पत्रकारों को सहकारिता के द्वारा आसान शर्तों पर पर्याप्त संस्थागत वित्तीय उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

प्रसार भारती अधिनियम, 1990
(कालक्रम)

1990	इस अधिनियम को राष्ट्रपति ने स्वीकृति प्रदान कर दी है और आवश्यक अधिसूचना जारी होने के बाद यह लागू हो जाएगा।
	अधिनियम में आकाशवाणी/दूरदर्शन को एक निगम के दो अंग माने गए हैं जिसकी कार्य प्रणाली पर सरकार का नियंत्रण नहीं है।
1991	मंत्रालय में अधिनियम की समीक्षा की गई। समीक्षा में संशोधन सुझाए गए, खासतौर से प्रशासनिक प्रकृति के।
1992-93	मंत्रालय द्वारा सुझाए गए संशोधनों पर विभिन्न राजनीतिक दलों से विचार–विमर्श किया गया।
1994	राजनीतिक दलों से विचार–विमर्श के बाद अधिनियम की समीक्षा के लिए मंत्रिमंडल के लिए एक नोट तैयार किया गया और 1994 में इसमें संशोधन किए गए।
1995	जनवरी, 1995 में यह अधिनियम प्रधानमंत्री को पेश किया गया।
	प्रधानमंत्री को यह पेश किए जाने के बाद यह फैसला किया गया कि अंतर्राष्ट्रीय उपग्रह प्रसारण के कारण एशिया में प्रसारण के बदलते परिदृश्य को देखते हुए इसकी फिर समीक्षा की जाए।
	तरंग मार्गों के प्रयोग के नियमन के लिए एक स्वतंत्र स्वायत्त सार्वजनिक प्राधिकरण की स्थापना के बारे में उच्चतम न्यायालय के ऐतिहासिक फैसले के बाद प्रसार भारती के नियामक प्रावधानों को हटाने की आवश्यकता है, क्योंकि प्रसार भारती अब तरंग मार्गों का एकमात्र प्रयोगकर्ता होगा, जिसे सार्वजनिक सम्पत्ति घोषित किया गया है।
	कलकत्ता उच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया कि वह प्रसार भारती अधिनियम के उद्देश्यों और आदर्शों को अंतिम रूप देने के लए उपयुक्त कदम उठाएं और यदि आवश्यक हो तो 31 दिसंबर, 1995 से पहले नया कानून लाए। चूंकि इस निर्धारित समय के अंदर यह काम संभव नहीं था इसलिए समय सीमा बढ़ाने की मांग की गई और 30 जून, 1996 तक का समय मिल गया।
	प्रसार भारती अधिनियम के प्रावधानों की समीक्षा और वित्त प्रबंध जैसे कुछ आधारभूत प्रश्नों के हल के लिए श्री नीतिश सेन गुप्त की अध्यक्षता में विशेषज्ञ दल का गठन किया गया। विशेषज्ञ दल की अधिसूचना 28 दिसंबर, 1995 को जारी की गई और 31 जुलाई, 1996 तक इसकी रिपोर्ट मिल जाने की आशा है।

15

योजना और गैर-योजना कार्यक्रम

आठवीं पंचवर्षीय योजना का परिव्यय

15.1.1 योजना आयोग ने आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992-97) के लिए 3,634 करोड़ रुपये का परिव्यय स्वीकृत किया है। आठवीं पंचवर्षीय योजना के परिव्यय का क्षेत्रवार ब्यौरा इस प्रकार है :

क्षेत्र	परिव्यय (लाख रुपयों में)
आकाशवाणी	113495
दूरदर्शन	230000
फिल्म माध्यम	12365
सूचना माध्यम	7540
कुल	363400

वार्षिक योजना आबंटन तथा व्यय

15.1.2 वार्षिक योजना 1992-93, 93-94, 94-95 के दौरान योजना परिव्यय तथा उपयोग :

क्षेत्र	1992-93		93-94		94-95	
	स्वीकृत परिव्यय	वास्तविक व्यय	स्वीकृत परिव्यय	वास्तविक व्यय	स्वीकृत परिव्यय	वास्तविक व्यय
1. प्रसारण माध्यम						
आकाशवाणी	22500	11460	20300 (10806)*	14543	13232	13123
दूरदर्शन	26516	17625	17000 (17534)*	16822	25600	25693
II. सूचना माध्यम	1300	432	1036	394	1145	1155
III. फिल्म माध्यम	2984 (284)*	1495	2164 (250)*	1135	2553 (380)*	2461 (600)*
कुल	53300	31012	40500	32894	42530	42432

* आंतरिक और अतिरिक्त बजट संसाधन

योजना आयोग द्वारा वार्षिक योजना 1995-96 के लिए स्वीकृत परिव्यय इस प्रकार है :

	क्षेत्र	1995-96 के लिए स्वीकृत परिव्यय	संशोधित अनुमान
I.	प्रसारण माध्यम		
	आकाशवाणी	13500 (11000)*	31538
	दूरदर्शन	31378 (28040)*	13200
II	सूचना माध्यम	1779	1769
III	फिल्म माध्यम	2893 (410)*	2459
	कुल	49550	48966

* आंतरिक और अतिरिक्त बजट संसाधन

1995-96 और 1996-97 के लिए योजना और गैर-योजना बजट:

15.3.1 सूचना और प्रसारण मंत्रालय और इसके समस्त माध्यम एककों के वर्ष 1995-96 तथा 1996-97 के योजना और गैर–योजना बजट के ब्यौरे के लिए परिशिष्ट - 2 देखें।

16
प्रशासन

16.1.1 सूचना और प्रसारण मंत्रालय के पास सूचना, शिक्षा तथा मनोरंजन के संदर्भ में फिल्म सहित प्रिन्ट तथा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया से संबंधित कार्यों को लागू करने के लिए पर्याप्त अधिकार हैं।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय के कार्य

- विदेशों में बसे भारतीयों सहित आम जनता के लिए आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के जरिए समाचार सेवाएं प्रदान करना।
- प्रसारण तथा टेलीविजन का विकास।
- फिल्मों का आयात और निर्यात।
- फिल्मोत्सवों का आयोजन और इस उद्देश्य के लिए सांस्कृतिक आदान–प्रदान।
- भारत सरकार की तरफ से विज्ञापन तथा दृश्य प्रचार।
- भारत सरकार की नीतियों को प्रस्तुत करने के लिए प्रेस सम्पर्क की व्यवस्था करना तथा इसके बारे में जनता के विचारों को जानना।
- समाचार पत्रों के संदर्भ में प्रेस तथा पुस्तक पंजीकरण अधिनियम, 1867 का क्रियान्वयन।
- राष्ट्रीय महत्व के मामलों पर प्रकाशनों के जरिए देश के भीतर तथा बाहर सरकार के बारे में जानकारी प्रदान करना।
- मंत्रालय की मीडिया इकाईयों की सहायता के लिए गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण देना।
- मंत्रालय की संस्थाओं के लिए उल्लेखनीय योगदान करने वाले प्रख्यात कलाकारों, संगीतज्ञों, नर्तकों, नाटककारों आदि को वित्तीय सहायता प्रदान करना।
- प्रसारण तथा समाचार सेवाओं के संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय संबंध बनाना।

मंत्रालय 13 संलग्न तथा अधीनस्थ कार्यालयों, 5 स्वायत्त संस्थाओं तथा एक सार्वजनिक उपक्रम के जरिए अपना कार्य करता है।

सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय का गठन

संलग्न तथा अधीनस्थ संस्थाएं	स्वायत्त/वैधानिक संस्थाएं तथा सार्वजनिक उपक्रम
1. आकाशवाणी	1. भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान
2. दूरदर्शन	2. भारतीय जनसंचार संस्थान
3. फिल्म प्रभाग	3. भारतीय बाल फिल्म सोसायटी
4. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय	4. राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केंद्र
5. विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय	5. भारतीय प्रेस परिषद
6. पत्र सूचना कार्यालय	6. सत्यजित राय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान
7. प्रकाशन विभाग	7. केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड
8. गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग	8. फिल्म समारोह निदेशालय
9. भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक का कार्यालय	9. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम)
10. फोटो प्रभाग	
11. गीत और नाटक प्रभाग	
12. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार	
13. मुख्य लेखा नियंत्रक	

मुख्य सचिवालय

16.2.1 इस मंत्रालय के मुख्य सचिवालय का प्रमुख सचिव होता है। मुख्य सचिव एक अतिरिक्त सचिव, वित्त सलाहकार - सह अतिरिक्त सचिव, तीन संयुक्त सचिवों और एक मुख्य लेखा नियंत्रक के सहयोग से काम करता है। मंत्रालय के विभिन्न विभागों में निदेशक/उप सचिव स्तर के 11 अधिकारी, अवर सचिव स्तर के 15 अधिकारी, 43 अन्य राजपत्रित अधिकारी और 285 अराजपत्रित अधिकारी हैं।

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्ग

16.3.1 सरकार की घोषित नीति के अनुसार यह मंत्रालय अपनी अधीनस्थ सेवाओं और पदों में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़े वर्गों के लोगों को उचित प्रतिनिधित्व देने के बारे में सरकार द्वारा जारी किये गये आदेशों का पूरी तरह पालन करने का प्रयत्न कर रहा है। आरक्षण से सम्बद्ध आदेशों पर अमल करने के बारे में मंत्रालय में एक सेल है। इसमें नियुक्त सम्पर्क अधिकारी इन आदेशों पर अमल करने से सम्बद्ध गतिविधियों में समन्वय बनाये रखता है और इन आदेशों के परिपालन पर नजर रखता है। मंत्रालय में नियुक्त अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़े वर्गों के अधिकारियों को भारत में और विदेशों में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रशिक्षित करने पर उचित ध्यान दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालयों में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़े वर्गों के लोगों को सेवाओं/पदों पर आरक्षण देने की नीति पर भी पूरी तरह अमल किया जा रहा है। मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में जो स्वायत्तशासी संस्थाएं और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम हैं, उनमें भी आरक्षण नीति पर पूरी तरह अमल किया जा

रहा है। इन संस्थाओं/उपक्रमों में भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड, भारतीय जनसंचार संस्थान, राष्ट्रीय बाल और युवा फिल्म केंद्र, भारतीय प्रेस परिषद और राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम शामिल है।

16.3.2 मंत्रालय और इससे सम्बद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों में 1 जनवरी 1995 तक नियुक्त हुए कुल कर्मचारियों में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों का प्रतिशत निम्नलिखित था –

	वर्ग 'अ'	वर्ग 'ब'	वर्ग 'स'	वर्ग 'द'
अनुसूचित जाति	9.86	14.39	16.73	32.75
अनुसूचित जनजाति	3.48	4.50	8.02	11.75

सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग

16.4.1 केंद्र सरकार की शासकीय भाषा नीति के अनुसार मंत्रालय हिंदी का प्रयोग बढ़ाने पर जोर दे रहा है। मंत्रालय की एक उच्चस्तरीय हिंदी सलाहकार समिति है। यह समिति प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित केंद्रीय हिंदी समिति के निर्णयों के अनुसार निर्देश देती है। यह सलाहकार समिति बनाई जा रही है। मंत्री इस समिति के अध्यक्ष हैं। सरकारी सदस्य, संसद सदस्य, गैर सरकारी सदस्य और हिंदी के विद्वान भी इस समिति से सम्बद्ध हैं। हिंदी सलाहकार समिति, सूचना और प्रसारण मंत्रालय तथा इसके कार्यालयों के सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग के बारे में समीक्षा करती है।

16.4.2 मंत्रालय के मुख्य सचिवालय और इसके सम्बद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा–कार्यान्वयन समितियां हैं। ये समितियां राजभाषा की नीति पर तथा हिंदी सलाहकार समिति के निर्णयों पर अमल करने के बारे में स्थिति की नियमित समीक्षा करती है। 1995-96 के दौरान (अक्तूबर 1995 तक) इस समिति की तीन बैठकें हुई। इसके अतिरिक्त मंत्रालय के मुख्य सचिवालय में पहली सितम्बर से पन्द्रह सितम्बर तक 'हिंदी पखवाड़ा' मनाया गया। इस अवसर पर हिन्दी में निबंध लेखन, आशुलिपि, टाइपिंग और वाद विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। मंत्रालय के अन्य कार्यालयों में भी हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस वर्ष सरकारी काम हिंदी में करने के बारे में मंत्रालय के अधीन तीन कार्यालयों का निरीक्षण किया गया। इसके अतिरिक्त संसदीय राजभाषा समिति की विभिन्न समितियों ने भी हिंदी के प्रयोग से सम्बद्ध उपलब्धियों/कमियों की समीक्षा करने के लिए मंत्रालय के छह अधीनस्थ कार्यालयों का निरीक्षण किया।

आन्तरिक कार्य अध्ययन इकाई

16.5.1 कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए आन्तरिक कार्य अध्ययन इकाई वर्ष भर कार्यरत रही। वर्ष के दौरान (31 दिसम्बर 1995 तक) जो महत्वपूर्ण कार्य किये गये उनमें ये गतिविधियां भी थीं : प्रशासनिक सुधारों के बारे में सुझाव देने के लिए कृतिक बल (टास्क फोर्स) बनाया गया। भारत के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार, पुणे के फिल्म पड़तालकर्ताओं द्वारा फिल्मों की पड़ताल करने के काम का अध्ययन पूरा कर लिया गया; तीन मूल्यांकन अध्ययन कार्य पूरे किए गए जिनके परिणामस्वरूप प्रतिवर्ष लगभग 38 लाख रुपये की परोक्ष/निवारण योग्य बचत हुई; रिकार्ड प्रबंध के बारे में विशेष कदम उठाए गए जिनके कारण 3,110 फाइलों के रिकार्ड तैयार किए गए, 2,434 फाइलों की समीक्षा की गई और 1,800 बेकार फाइलें रद्द की गईं।

विभागीकृत लेखा

16.6.1 विभागीकृत लेखा के अंतर्गत लेखा संगठन के प्रशासनिक अध्यक्ष मुख्य लेखा नियंत्रक, मंत्रालय के मासिक हिसाब–किताब के संचयन और मंत्रालय आदि की अनुदानों की मांगों के वार्षिक लेखा विनियोजन तैयार करने के बारे में महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व निभाते रहे। मुख्य लेखा नियंत्रक, देश भर में फैले 542 से अधिक आहरण और संवितरण अधिकारियों द्वारा किए जा रहे वित्तीय लेन–देन की देखरेख, लेखा रिपोर्टों की समीक्षा और समन्वय तथा इन रिपोर्टों के अनुसार की गई कार्रवाई और भारत के महालेखा नियंत्रक और लेखा परीक्षक से प्राप्त शंकाओं आदि का समाधान भी करते रहे।

16.6.2 वर्ष के दौरान (अक्तूबर 1995 तक) 2,85,418

बिलों का निपटान (वेतन और लेखा अधिकारी, इरला द्वारा राजपत्रित अधिकारियों के निपटाये गये 62,687 दावों सहित) सभी वेतन और लेखा अधिकारियों ने किया। इसके अलावा अक्तूबर 1995 तक अवकाश प्राप्त सरकारी कर्मचारियों के पेंशन/परिवार से सम्बद्ध 1,446 मामले तथा 808 भविष्य निधि के मामले निपटाये गये।

सतर्कता

16.7.1 मंत्रालय का सतर्कता तंत्र सचिव की देखरेख में काम करता है। उनके इस काम में संयुक्त सचिव स्तर का मुख्य सतर्कता अधिकारी, एक अनुभाग अधिकारी तथा अन्य अधीनस्थ कर्मचारी सहायता करते हैं। मंत्रालय के सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों की सतर्कता इकाइयों के अध्यक्ष सतर्कता अधिकारी हैं तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और पंजीकृत समितियों की सतर्कता इकाइयों के अध्यक्ष उनके मुख्य सतर्कता अधिकारी हैं। मंत्रालय के सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और पंजीकृत समितियों की सतर्कता से सम्बद्ध गतिविधियों के बीच मंत्रालय के मुख्य सतर्कता अधिकारी समन्वय बनाये रखते हैं। मंत्रालय में संयुक्त सचिव के अधीन, जिन्हें शिकायत निदेशक कहा जाता है—शिकायतें दूर करने की विशेष व्यवस्था है। प्रचार इकाइयों में भी कर्मचारी शिकायत अधिकारी नियुक्त किए गए हैं। शिकायतों के निपटान की नियमित समीक्षा की जाती है।

16.7.2 अप्रैल से नवम्बर 1995 तक मंत्रालय को तथा इसकी प्रचार इकाइयों आदि को विभिन्न स्रोतों से 178 नई शिकायतें मिलीं। इन शिकायतों पर विचार किया गया और 74 मामलों में प्रारंभिक जांच करने के आदेश दिये गये। इनमें ऐसे सात मामले भी शामिल हैं जो केंद्रीय जांच ब्यूरो को सौंपे गये। वर्ष में 60 मामलों के बारे में प्रारम्भिक जांच की रिपोर्ट मिली। 43 मामलों में सामान्य विभागीय कार्रवाई के अंतर्गत कड़ा दण्ड दिया गया और 10 मामलों में हल्का दण्ड दिया गया। साथ ही 11 मामलों में कड़ा दण्ड दिया गया और छह मामलों में हल्का दण्ड दिया गया। वर्ष के दौरान कुल मिलाकर जितने अधिकारी निलंबित किये गये उनमें से चार मुख्य सचिवालय के और दस प्रचार इकाइयों के थे। सात मामलों में कार्यवाही खत्म कर दी गई। एक व्यक्ति को एफ. आर. 56 (जे) के अधीन अनिवार्य रूप से सेवा से निवृत्त कर दिया गया और 25 मामलों में प्रशासनिक चेतावनियां आदि जारी की गई। इनके अतिरिक्त अपील के पांच मामले भी निपटाये गये। इनमें से एक मामले में अपील रद्द कर दी गई तथा चार अपीलों में से दो में सजा घटा दी गई और दो मामलों में नये सिरे से जांच फिर शुरू करने के आदेश दिये गये। इसके अलावा पुनर्विचार की एक याचिका पर भी निर्णय किया गया। छह और मामलों में कड़ा दण्ड देने के लिए नियमित विभागीय कार्यवाही करने का निर्णय किया गया। निर्णय के अनुसार कदम उठाये जा रहे हैं।

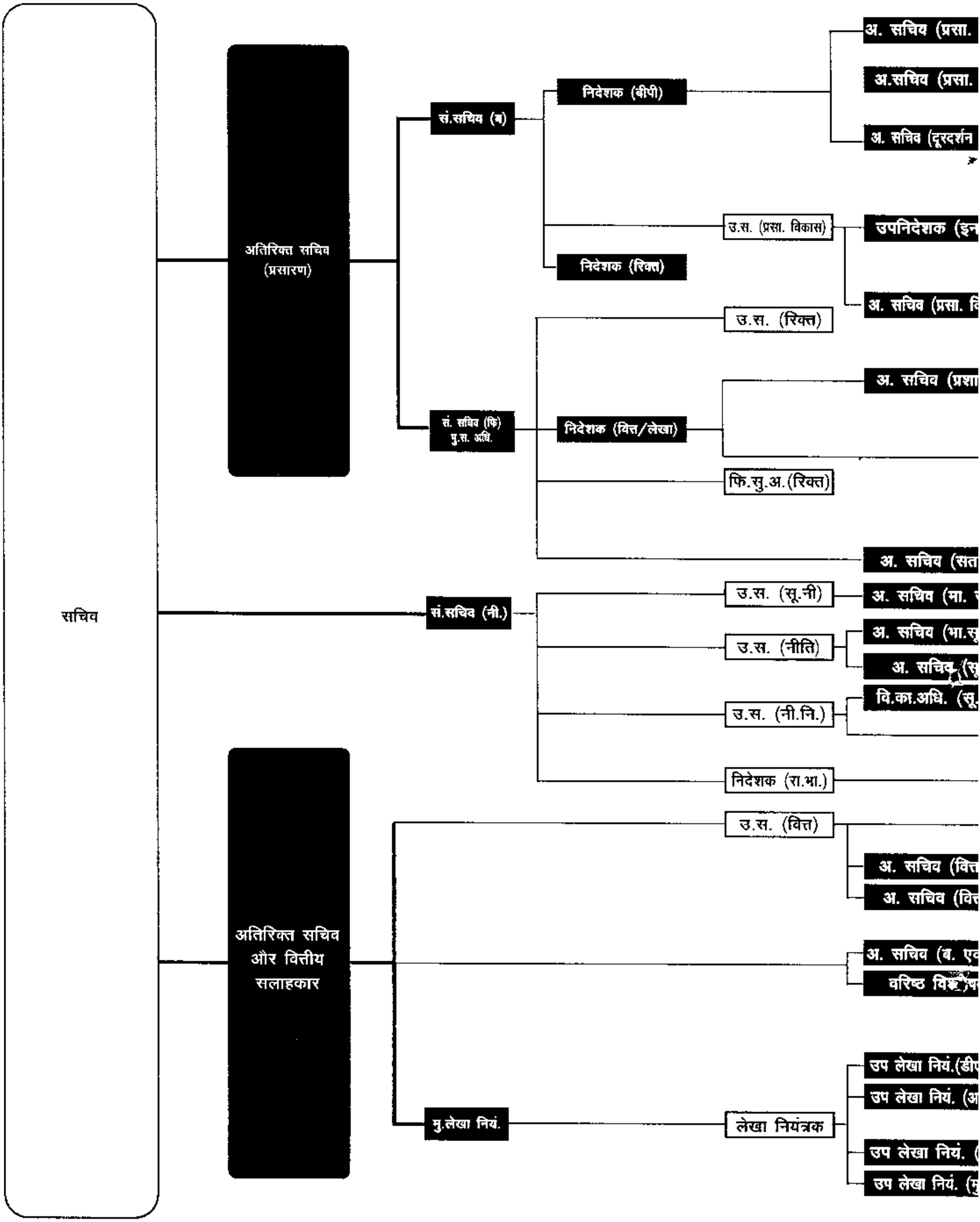
सचिव
अतिरिक्त सचिव (प्रसारण)
सं.सचिव (ब)
निदेशक (बीपी)
अ. सचिव (प्रसा.
अ.सचिव (प्रसा.
अ. सचिव (दूरदर्शन
उ.स. (प्रसा. विकास)
उपनिदेशक (इ
निदेशक (रिक्त)
अ. सचिव (प्रसा. वि
उ.स. (रिक्त)
अ. सचिव (प्रशा
सं. सचिव (फि) मु.स. अधि.
निदेशक (वित्त/लेखा)
फि.सु.अ.(रिक्त)
अ. सचिव (सत
सं.सचिव (नी.)
उ.स. (सू.नी)
अ. सचिव (मा.
उ.स. (नीति)
अ. सचिव (भा.सू
अ. सचिव (सू
उ.स. (नी.नि.)
वि.का.अधि. (सू.
निदेशक (रा.भा.)
अतिरिक्त सचिव और वित्तीय सलाहकार
उ.स. (वित्त)
अ. सचिव (वित्त
अ. सचिव (वित्त
अ. सचिव (ब. एव
वरिष्ठ वि
मु.लेखा नियं.
लेखा नियंत्रक
उप लेखा नियं.(डी
उप लेखा नियं. (
उप लेखा नियं. (
उप लेखा नियं. (म

- प्रसारण (प्रशा.)
- प्रसार भारती एकक
- प्रसारण (नीति)
- दूरदर्शन (कार्य. III)
- दूरदर्शन (कार्य. II)
- दूरदर्शन (कार्य. I)
- दूरदर्शन (इनसेट)
- दूरदर्शन (विकास II)
- दूरदर्शन (विकास I)
- प्रसारण (विकास)
- दूरदर्शन (प्रशा.)
- संसदीय एकक
- डेस्क अधि. (फि.उ.)
- रोकड़
- डेस्क अधि. (फि.फे.)
- प्रशासन IV
- डेस्क अधि. (फि.प्रशा.)
- प्रशासन III
- डेस्क अधि. (फि.प्र.)
- प्रशासन II
- डेस्क अधि. (फि.टे.सं.)
- प्रशासन I
- सतर्कता
- माध्यम इकाई एकक
- भा.सू. सेवा
- प्रेस
- नीति योजना एकक
- सू.नी. एवं मा.समं.
- डेस्क अधि. (फि. सो.)
- समाचार एकीकरण एकक
- हिंदी एकक
- योजना समन्वय एकक
- वित्त II
- वित्त III
- वित्त I
- बजट एवं लेखा
- आं. कार्य अध्ययन एकक

	मंत्रालय में पदनाम
ए एस एंड एफ ए	अतिरिक्त सचिव और वित्तीय सलाहकार
ए एस (बी)	अतिरिक्त सचिव (प्रसारण)
जे एस (पी)	संयुक्त सचिव (नीति)
जे एस (फि)मु.सतर्क.अधि.	संयुक्त सचिव (फिल्म) मुख्य सतर्कता अधिकारी
जे एस (बी)	संयुक्त सचिव (प्रसारण)
सी सी ए	मुख्य लेखा नियंत्रक
डाये (एफ एंड ए)	निदेशक (वित्तीय और प्रशासन)
डाये	निदेशक (रिक्त)
डाये (बी पी)	निदेशक (प्रसारण नीति)
डाये (ओ एल)	निदेशक (राजभाषा)
डी एस (फाइ.)	उप सचिव (वित्त)
डी एस (पी पी)	उप सचिव (नीति योजना)
डी एस (पी)	उप सचिव (नीति)
डी एस (आई पी)	उप सचिव (सूचना नीति)
डी एस	उप सचिव
डी एस (बी डी)	उप सचिव (प्रसारण विकास)
एफ एफ ओ	फिल्म सुविधाएं अधिकारी
सी ए	लेखा नियंत्रक
यू एस (ए)	अवर सचिव (प्रशासन)
यू एस (बी एंड ए)	अवर सचिव (बजट एवं लेखा)
यू एस (फाइ. I)	अवर सचिव (वित्त–I)
यू एस (आई आई एस)	अवर सचिव (भारतीय सूचना सेवा)
यू एस (एम सी)	अवर सचिव (माध्यम समन्वय)
यू एस (आई)	अवर सचिव (सूचना)
यू एस (वी)	अवर सचिव (सतर्कता)
यू एस (बी ए)	अवर सचिव (प्रसारण प्रशासन)
यू एस (बी डी)	अवर सचिव (प्रसारण विकास)
यू एस (टीवी–पी)	अवर सचिव (दूरदर्शन कार्यक्रम)
यू एस (बी पी)	अवर सचिव (प्रसारण नीति)
ओ एस डी (आई पी)	विशेष कार्याधिकारी (सूचना नीति)
डी सी ए (हैडक्वा.)	उप लेखा नियंत्रक (मुख्यालय)
डी सी ए (इर्ला)	उप लेखा नियंत्रक (इर्ला)
डी सी ए (आई सी)	उप लेखा नियंत्रक (आई सी)
डी सी ए (डी ए वी पी)	उप लेखा नियंत्रक (डी ए वी पी)
एस ए	वरिष्ठ विश्लेषक
डी डी (इनसेट)	उप निदेशक (इनसेट)
डी ओ (एफ एस)	डेस्क अधिकारी (फिल्म सुविधा)
डी ओ (एफ टी आई)	डेस्क अधिकारी (फिल्म एवं दूरदर्शन इंस्टीट्यूट)
डी ओ (एफ सी)	डेस्क अधिकारी (फिल्म प्रमाणन)
डी ओ (एफ ए)	डेस्क अधिकारी (फिल्म प्रशासन)
डी ओ (एफ एफ)	डेस्क अधिकारी (फिल्म फेस्टिवल)
डी ओ (एफ आई)	डेस्क अधिकारी (फिल्म उद्योग)
एडमिन. I	प्रशासन I
एडमिन. II	प्रशासन II
एडमिन. III	प्रशासन III
एडमिन. IV	प्रशासन IV
कैश	रोकड
पार्लिया	पार्लियामेण्ट एकक
विज.	सतर्कता
बी (ए)	प्रसारण (प्रशासन)
बी (डी)	प्रसारण (विकास)
टीवी (डी–I)	दूरदर्शन (विकास–I)
टीवी (डी–II)	दूरदर्शन (विकास–II)
टीवी (इनसेट)	दूरदर्शन (इनसेट)
टीवी (पी–I)	दूरदर्शन (कार्यक्रम–I)
टीवी (पी–II)	दूरदर्शन (कार्यक्रम–II)
टीवी (पी–III)	दूरदर्शन (कार्यक्रम–III)
बी (पी)	प्रसारण (नीति)
पी बी सी	प्रसार भारती एकक
आई आई एस	भारतीय सूचना सेवा
एम यू सी	मीडिया यूनिट एकक
प्रेस	प्रेस
पी पी सी	नीति योजना एकक
आई पी एंड एम सी	सूचना नीति और माध्यम समन्वय
एन पी सी	समाचार पूल एकक
फाइ. I	वित्त I
फाइ. II	वित्त II
फाइ. III	वित्त III
पी सी एकक	योजना समन्वय एकक
हिंदी यूनिट	हिंदी एकक
आई डब्ल्यू एस यू	आंतरिक कार्य अध्ययन एकक
बी एंड ए	बजट एवं लेखा

परिशिष्ट-1

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

योजना तथा गैर-योजना बजट का विवरण

मांग संख्या 55-सूचना, फिल्म और प्रचार

क्रम सं०	माध्यम इकाई का नाम/गतिविधि	बजट अनुमान 1995-96		
		योजना	गैर-योजना	योग
	राजस्व खंड			
	मुख्य शीर्ष-2251			
	-सचिवालय - सामाजिक सेवाएं			
1.	मुख्य सचिवालय	—	449.42	449.42
2.	समेकित वेतन और लेखा कार्यालय	6.00	207.58	213.58
	योग:	6.00	657.00	663.00
	मुख्य शीर्ष : 2205 - कला एवं संस्कृति सिनेमेटोग्राफिक फिल्मों का सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए प्रमाणीकरण			
3.	केंद्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड	25.00	78.75	103.75
4.	फिल्म प्रमाणीकरण अपील न्यायाधिकरण	—	3.25	3.25
	योग:	25.00	82.00	107.00
	मुख्य शीर्ष - 2220 - सूचना और प्रचार			
5.	फिल्म प्रभाग	191.00	1678.78	1869.78
6.	फिल्म समारोह निदेशालय	289.00	205.93	494.93
7.	भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार	198.00	42.00	240.00
8.	भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, कलकत्ता	50.00	—	50.00
9.	राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केंद्र को अनुदान सहायता	150.00	10.00	160.00
10.	भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे को अनुदान सहायता	654.00	304.00	958.00
11.	फिल्म समितियों को अनुदान सहायता	3.00	—	3.00
12.	गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग	—	51.36	51.36
13.	भारतीय जनसंचार संस्थान को अनुदान सहायता	400.00	135.90	535.90
14.	विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय	30.00	3322.00	3352.00
15.	पत्र सूचना कार्यालय	91.00	910.00	1001.00
16.	भारतीय प्रेस परिषद	—	52.00	52.00
17.	पी. टी. आई. को ऋण के ब्याज पर सबसिडी	—	0.95	0.95
18.	व्यावसायिक तथा विशेष सेवाओं के लिए भुगतान	—	33.00	33.00
19.	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय	115.00	1126.00	1241.00

(लाख रुपयों में)

संशोधित अनुमान 1995-96			बजट अनुमान 1996-97		
योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
—	520.54	520.54	—	499.00	499.00
6.00	230.46	236.46	6.00	242.00	248.00
6.00	751.00	757.00	6.00	741.00	747.00
24.00	84.75	108.75	35.00	84.75	119.75
—	3.25	3.25	—	3.25	3.25
24.00	88.00	112.00	35.00	88.00	123.00
167.65	1591.65	1759.30	215.00	1723.20	1938.20
327.00	208.17	535.17	269.00	214.43	483.43
145.00	43.00	188.00	103.00	44.12	147.12
30.00	—	30.00	100.00	—	100.00
150.00	10.00	160.00	150.00	10.00	160.00
654.00	304.00	958.00	554.00	320.00	874.00
3.00	—	3.00	3.00	—	3.00
—	46.54	46.54	—	55.55	55.55
390.41	135.16	525.57	187.00	140.22	327.22
25.00	3584.26	3609.26	30.00	2811.65	2841.65
78.08	1093.17	1171.25	80.00	1020.73	1100.73
—	97.61	97.61	—	58.72	58.72
—	0.95	0.95	—	0.48	0.48
—	30.65	30.65	—	38.22	38.22
98.86	1179.20	1278.06	40.00	1248.64	1288.64

क्र सं०	माध्यम इकाई का नाम/गतिविधि	बजट अनुमान 1995-96		
		योजना	गैर-योजना	योग
20.	गीत और नाटक प्रभाग	126.00	761.00	887.00
21.	प्रकाशन विभाग	30.00	636.39	666.39
22.	रोजगार समाचार	—	764.59	764.59
23.	भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक	8.00	91.00	99.00
24.	फोटो प्रभाग	10.00	137.10	147.10
25.	संचार के विकास के अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए अंशदान	—	1000	10.00
*26.	सत्यजीत रे, एफ.एंड टी.आई. कलकत्ता	—	—	—
	योग : **मुख्य शीर्ष 2220**	2345.00	10272.00	12617.00
	मुख्य शीर्ष - 3601			
27.	ज्योति चित्रबन	—	—	—
	योग : राजस्व खंड	2376.00	11011.00	13387.00

* नया शीर्ष

संशोधित अनुमान 1995-96			बजट अनुमान 1996-97		
योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
119.00	780.87	899.87	116.00	854.75	970.75
25.00	655.15	680.15	20,00	664.35	684.35
—	968.70	968.70	—	1122.14	1122.14
8.00	90.97	98.97	—	98.86	98.86
10.00	136.95	146.95	10.00	144.94	154.94
—	10.00	10.00	—	10.00	10.00
—	—	—	—	—	—
2231.00	10967.00	13198.00	2928.00	10581.00	13509.00
600.00	—	600.00	108.00	—	108.00
2861.00	11806.00	14667.00	3077.00	11410.00	14487.00

क्रम सं०	माध्यम इकाई का नाम/गतिविधि	बजट अनुमान 1995-96		
		योजना	गैर-योजना	योग
	पूंजी खंड			
	मुख्य शीर्ष- 4220-सूचना और प्रचार के लिए पूंजी परिव्यय			
	(अ) मशीनें और उपकरण			
1.	फिल्म प्रभाग के लिए उपकरणों की खरीद	200.84	—	200.84
2.	भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार, पुणे के लिए उपकरणों की खरीद	—	—	—
3.	पत्र सूचना कार्यालय के लिए उपकरणों की खरीद	50.00	—	50.00
4.	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के लिए उपकरणों की खरीद	15.00	—	15.00
5.	गीत और नाटक प्रभाग के लिए उपकरणों की खरीद	14.00	—	14.00
6.	फोटो प्रभाग के लिए उपकरणों की खरीद	40.00	—	40.00
	(आ) भवन			
7.	फिल्म प्रभाग की बहुमंजिला इमारत का मुख्य निर्माण कार्य	66.16	—	66.16
8.	भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के कार्यालय भवन का मुख्य निर्माण कार्य	42.00	—	42.00
9.	फिल्म समारोह परिसर में नए निर्माण तथा पुराने में परिवर्तन संबंधी प्रमुख निर्माण कार्य	64.00	—	64.00
10.	कलकत्ता में फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान की स्थापना—भूमि अधिग्रहण तथा भवन निर्माण	400.00	—	400.00
11.	सूचना भवन परिसर—प्रमुख निर्माण कार्य	200.00	—	200.00
12.	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के अंतर्गत कार्यालय तथा आवासीय भवनों का निर्माण—प्रमुख निर्माण कार्य	5.00	—	5.00
13.	पत्र सूचना कार्यालय के लिए राष्ट्रीय प्रेस केंद्र व लघु माध्यम केन्द्र की स्थापना करना	589.00	—	589.00
	(इ) अन्य पूंजी निवेश			
14.	दूसरे राष्ट्रीय टेलीविजन चैनल के संचालन के लिए प्रस्तावित संयुक्त क्षेत्र की कंपनियों में पूंजी निवेश	—	—	—
15.	राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम	75.00	—	75.00

संशोधित अनुमान 1995-96			बजट अनुमान 1996-97		
योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
288.00	—	288.00	117.00	—	117.00
—	—	—	—	—	—
38.00	—	38.00	15.00	—	15.00
9.30	—	9.30	60.00	—	60.00
14.00	—	14.00	14.00	—	14.00
40.00	—	40.00	53.00	—	53.00
45.20	—	45.20	81.00	—	81.00
12.00	—	12.00	51.00	—	51.00
164.00	—	164.00	64.00	—	64.00
300.00	—	300.00	225.00	—	225.00
35.00	—	35.00	61.00	—	61.00
22.50	—	22.50	—	—	—
200.00	—	200.00	395.00	—	395.00
—	—	—	—	—	—
75.00	—	75.00	75.00	—	75.00

क्रम सं०	माध्यम इकाई का नाम/गतिविधि	बजट अनुमान 1995-96		
		योजना	गैर-योजना	योग
16.	दक्षिण अफ्रीका सरकार के साथ 'मेकिंग ऑफ महात्मा' नामक कथा-फिल्म का संयुक्त निर्माणं	—	—	—
17.	ब्राडकास्टिंग इंजीनियरिंग कंसल्टेंट (इंडिया) लिमिटेड	25.00		25.00
	कुल : मुख्य शीर्ष 4220	1786.00	—	1786.00
	मुख्य शीर्ष-6220 - सूचना और प्रचार के लिए ऋण			
18.	राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड	75.00	—	75.00
19.	ब्राडकास्टिंग इंजीनियरिंग कंसल्टेंट (इंडिया) लिमिटेड	25.00	—	25.00
20.	पी. टी. आई. को ऋण	—	—	—
	कुल : मुख्य शीर्ष 6220	100.00	—	100.00
	कुल : पूंजी खंड	1886.00	—	1886.00
	कुल : मांग संख्या 55	4262.00	11011.00	15273.00

संशोधित अनुमान 1995-96			बजट अनुमान 1996-97		
योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
—	—	—	29.00	—	29.00
25.00	—	25.00	10.00	—	10.00
1268.00	—	1268.00	1175.00	—	1175.00
75.00	—	75.00	—	—	—
25.00	—	25.00	10.00	—	10.00
—	175.00	175.00	—	—	—
100.00	—	100.00	10.00	—	10.00
1368.00	—	1368.00	1185.00	—	1185.00
4229.00	11981.00	16210.00	4262.00	11410.00	15672.00

मांग संख्या 56-प्रसारण सेवाएं
राजस्व

क्रम सं०	माध्यम इकाई का नाम/गतिविधि	बजट अनुमान 1995-96		
		योजना	गैर-योजना	योग
राजस्व खंड				
मुख्य शीर्ष -2221				
आकाशवाणी				
1.	निर्देशन तथा प्रशासन	311.00	969.00	1280.00
2.	परिचालन तथा रख-रखाव	1086.00	4590.00	5676.00
3.	विज्ञापन प्रसारण सेवा	1.00	2119.00	2120.00
4.	कार्यक्रम सेवा	3885.00	14343.00	18228.00
5.	समाचार सेवा प्रभाग	1600	1648.00	1664.00
6.	श्रोता अनुसंधान	81.00	84.00	1654.00
7.	विदेश प्रसारण सेवा	1.00	314.00	315.00
8.	योजना और विकास	209.00	549.00	758.00
9.	अनुसंधान तथा प्रशिक्षण	110.00	273.00	383.00
10.	उचंत	0	6072.00	6072.00
11.	एन. एल. एफ. में हस्तांतरण	0	5389.00	5389.00
12.	अन्य व्यय	0	342.00	342.00
	कुल : आकाशवाणी (राजस्व)	5700.00	36692.00	42392.00
दूरदर्शन				
1.	निर्देशन तथा प्रशासन	19.00	844.00	863.00
2.	परिचालन तथा रख-रखाव	2761.00	6576.00	9337.00
3.	विज्ञापन सेवाएं	0	6930.00	6930.00
4.	कार्यक्रम सेवाएं	7216.00	16688.00	23904.00
5.	दर्शक अनुसंधान	4.00	69.00	73.00
6.	उचंत	0	7492.00	7492.00
7.	एन. एल. एफ. में हस्तांतरण	0	37907.00	37907.00
8.	अन्य व्यय	0	405.00	405.00
	कुल : दूरदर्शन (राजस्व)	10000.00	76911.00	86911.00
	कुल : प्रमुख शीर्ष -2221	15700.00	113603.00	129303.00
	कुल : राजस्व खंड	15700.00	113603.00	129303.00
	पारित	15700.00	113597.00	129297.00
	भारित	0	6.00	6.00

(लाख रुपयों में)

संशोधित अनुमान 1995-96			बजट अनुमान 1996-97		
योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
311.00	1169.00	1480.00	315.00	1043.00	1358.00
1058.00	4522.00	5580.00	1235.00	4797.00	6032.00
0	2138.00	2138.00	2.00	2247.00	2249.00
3955.00	14657.00	18612.00	4241.00	15209.00	19450.00
16.00	1666.00	1682.00	20.00	1735.00	1755.00
42.00	87.00	129.00	50.00	91.00	141.00
0	327.00	327.00	2.00	340.00	342.00
202.00	612.00	814.00	209.00	627.00	836.00
116.00	289.00	405.00	126.00	314.00	440.00
0	6072.00	6072.00	0	6304.00	6304.00
0	5389.00	5389.00	0	5780.00	5780.00
0	317.00	317.00	0	360.00	360.00
5700.00	37245.00	42945.00	6200.00	38847.00	45047.00
17.00	1025.00	1042.00	26.00	1316.00	1342.00
2221.00	7054.00	9275.00	2960.00	7281.00	10241.00
0	6930.00	6930.00	0	8283.00	8283.00
7919.00	17745.00	25664.00	8507.00	18498.00	27005.00
3.00	85.00	88.00	7.00	91.00	98.00
0	6612.00	6612.00	0	7800.00	7800.00
0	37842.00	37842.00	0	45430.00	45430.00
0	444.00	444.00	0	434.00	434.00
10160.00	77737.00	87897.00	11500.00	89133.00	100633.00
15860.00	114982.00	130842.00	17700.00	127980.00	145680.00
15860.00	114982.00	130842.00	17700.00	127980.00	145680.00
15444.00	113272.00	128716.00	15934.00	126028.00	141962.00
416.00	1710.00	2126.00	1766.00	1952.00	3718.00

क्रम सं०	माध्यम इकाई का नाम/गतिविधि	बजट अनुमान 1995-96		
		योजना	गैर-योजना	योग
	पूंजी खंड मुख्य शीर्ष -4221			
	आकाशवाणी			
1.	मशीनें तथा उपकरण	84.00	0	84.00
2.	स्टूडियो	2007.00	37.00	2044.00
3.	ट्रांसमीटर	3759.00	0	3759.00
4.	उचंत	0	450.00	450.00
5.	अन्य खर्च (स्थापना तथा विविध निर्माण योजनाएं)	1950.00	0	1950.00
	कुल : आकाशवाणी	7800.00	487.00	8287.00
	पारित	7780.00	487.00	8267.00
	भारित	20.00	0	20.00
	दूरदर्शन			
1.	मशीनें तथा उपकरण	75.00	0	75.00
2.	स्टूडियो	7293.00	0	7293.00
3.	ट्रांसमीटर	7223.00	0	7223.00
4.	उचंत	0	608.00	608.00
5.	अन्य व्यय (स्थापना तथा विविध निर्माण योजनाएं)	6787.00	2.00	6789.00
	योग : दूरदर्शन	21378.00	610.00	21988.00
	पारित	21338.00	610.00	21948.00
	भारित	40.00	0	40.00
	कुल : मुख्य शीर्ष -4221	29178.00	1097.00	30275.00
	कुल : पूंजी खंड	29178.00	1097.00	30275.00

संशोधित अनुमान 1995-96			बजट अनुमान 1996-97		
योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
35.00	0	35.00	105.00	0	105.00
1766.00	0	1766.00	2057.00	0	2057.00
3561.00	0	3561.00	3501.00	0	3501.00
0	440.00	440.00	2137.00	475.00	2612.00
2138.00	0	2138.00	0	0	0
7500.00	440.00	7940.00	7800.00	475.00	8275.00
7480.00	440.00	7920.00	7770.00	475.00	8245.00
20.00	0	20.00	30.00	0	30.00
40.00	0	40.00	75.00	0	75.00
6929.00	0	6929.00	8806.00	0	8806.00
7341.00	0	7341.00	8234.00	0	8234.00
0	576.00	576.00	0	560.00	560.00
7068.00	0	7068.00	5423.00	0	5423.00
21378.00	576.00	21954.00	22538.00	560.00	23098.00
21214.00	576.00	21790.00	22500.00	560.00	23060.00
164.00	0	164.00	38.00	0	38.00
28878.00	1016.00	29894.00	30338.00	1035.00	31373.00
28878.00	1016.00	29894.00	30338.00	1035.00	31373.00

परिशिष्ट-II

मुख्य शीर्षवार
सूचना और प्रसारण मंत्रालय के बजट का संक्षिप्त विवरण
(मांग संख्या 55—सूचना, फिल्म और प्रचार)

राजस्व खंड	एस.बी.जी. 1995-96			संशोधित अनुमान 1995-96			बजट अनुमान 1996-97		
	योजना	गैर–योजना	योग	योजना	गैर–योजना	योग	योजना	गैर–योजना	योग
मुख्य शीर्ष 2251— सचिवालय	6	657	663	6	751	757	6	741	747
मुख्य शीर्ष 2205—फिल्म प्रमाणन	25	82	107	24	88	112	35	88	123
मुख्य शीर्ष—2220 सूचना और प्रचार (फिल्म्स प्रभाग, डीडीएफ, एफटीआईआई, आईआईएमसी, डीएवीपी, पीआईबी, डीएफपी, डीपीडी, आरएनआई, फोटो डिवीजन)	2345	10272	12617	2231	10967	13198	2928	10581	13509
मुख्य शीर्ष—3601 ज्योति चित्रबन स्टूडियो	-	-	-	600	-	600	108	-	108
कुल राजस्व खंड	2376	11011	13387	2861	11806	14667	3077	11410	14487
पूंजी खंड									
मुख्यशीर्ष —4220	1786	-	1786	1268	-	1268	1175	-	1175
मुख्य शीर्ष —6220	100	-	100	100	175	275	10	-	10
कुल पूंजी खंड	1886	-	1886	1368	175	1543	1185	-	1185
कुल मांग संख्या 55	4262	11011	15273	4229	11981	16210	4262	11410	15672
आईईबीआर (एनएफडीसी)	410	-	410	694	-	694	1000	-	1000
कुल परिव्यय सूचना, फिल्म और प्रचार	4672	11011	15683	4923	11981	16904	5262	11410	16672

मुख्य शीर्षवार
सूचना और प्रसारण मंत्रालय के बजट का संक्षिप्त विवरण
(मांग संख्या 56—प्रसारण सेवाएं)

	एस.बी.जी. 1995-96			संशोधित अनुमान 1995-96			बजट अनुमान 1996-97		
	योजना	गैर–योजना	योग	योजना	गैर–योजना	योग	योजना	गैर–योजना	योग
राजस्व खंड									
मुख्य शीर्ष —2221									
आकाशवाणी	5700	36692	42392	5700	37245	42945	6200	38847	45047
दूरदर्शन	10000	76911	86911	10160	77737	87897	11500	89133	100633
योग (2221)	15700	113603	129303	15860	114982	130842	17700	127980	145680
पूंजी खंड									
मुख्य शीर्ष —4221									
आकाशवाणी	7800	487	8287	7500	440	7940	7800	475	8275
दूरदर्शन	21378	610	21988	21378	576	21954	22538	560	23098
योग (4221)	29178	1097	30275	28878	1016	29894	30338	1035	31373
कुल योग मांग संख्या 56	44878	114700	159578	44738	115998	160736	48038	129015	177053